3.3.3 Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/ international conference proceedings per teacher during last five years (10)

Sl. No.	Name of the teacher	Title of the book/chapters published	Title of the paper	Title of the proceedings of the conference	Name of the conference	National / International	Year of publication	ISBN/ISSN number of the proceeding	Affiliating Institute at the time of publication	Name of the publisher
1	सियाराम शर्मा	'भोर के गीत : समीक्षा (पुस्तक)					2015	ISBN : 81 88473-24-3		'भोर के गीत : समीक्षा (पुस्तक) सं.–डॉ. राजेश दूबे, अरूणोदय प्रका., 29–ए, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110002
2	सियाराम शर्मा	'मैनेजर पाण्डेय की आलोचना के आयाम'					**2016**	ISBN : 978-93-5000-087-8		'आलोचना और समाज'(पुस्तक) सं. –रविकान्त / आकांक्षा सिंह, वाणी प्रकाशन 21–ए, दरियागंज, नई दिल्ली–110002
3	सियाराम शर्मा	'आलोचना के मूल में सक्रिय वर्ग दृष्टि'					2019	ISBN : 978-93-8868-19-4		'हमारे समय में मुक्तिबोध' (पुस्तक) सं.–ए. अरविंदाक्षण, वाणी प्रकाशन / 4695, 21–ए, दरियागंज, नई दिल्ली–110002
4	डॉ. कोमल सिंह शार्वा	छत्तीसगढ़ी लोक वार्ता संस्कृति और परपम्परा (शोध–पत्रिका) 2019					**2019**	ISBN - 978 – 81 - 909987-7-2		भानुप्रतापदेव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कांकेर
5	Dr. Rita Gupta	Bundel Vibhuti - Dr. GangaPrasad Gupta Barsainyan (Abhinadan Granth)					**2017**			
6	Dr Awadhesh Kumar Shrivastava	Conservation of medicinal plants conventional and Modern approaches	Ethnogynecological uses of some plants by tribal people of Mohla Manpur region of Rajnandgaon, Chhattisgarh	Conservation of medicinal plants conventional and Modern approaches	Conservation of medicinal plants conventional and Modern approaches	national	**2016**	ISBN no. 978-818455-588-2	TNB college, Tilka Manjhi University, Bhagalpur	Omega publisher Delhi
7	Dr Awadhesh Kumar Shrivastava	Herbal medicine: A rational approach in health care system with special reference to north-east India	biodiversity of herbs growing near college campus area of Utai, durg, chhattisgarh	Herbal medicine: A rational approach in health care system with special reference to north-east India	Herbal medicine: A rational approach in health care system with special reference to north-east India	national	**2017**	ISBN no, 978-81-202-9871-2	Dhing College, Nawgaon, Guwahati	Jagaran Press, Chandmari, Guwahati, Assam
8	Dr Awadhesh Kumar Shrivastava	Herbal medicine: A rational approach in health care system with special reference to north-east India	Biodiversity of anti - diabetic plants commonly used by anti-hyper gycemic patients	Herbal medicine: A rational approach in health care system with special reference to north-east India	Herbal medicine: A rational approach in health care system with special reference to north-east India	national	**2017**	ISBN no, 978-81-202-9871-2	Dhing College, Nawgaon, Guwahati	Jagaran Press, Chandmari, Guwahati, Assam
9	Dr Awadhesh Kumar Shrivastava	Prospects of applied ethnobotany in north eastern region of India	Secondary metabolites of herb vegetable used by tribals of chhattisgarh	Herbal medicine: A rational approach in health care system with special reference to north-east India	Herbal medicine: A rational approach in health care system with special reference to north-east India	national	**2017**	ISBN no, 978-81-202-8805-8	Dhing College, Nawgaon, Guwahati	Jagaran Press, Chandmari, Guwahati, Assam

"मैनेजर पाण्डेय एक पढ़े-लिखे, काफी समझदार और जिम्मेदार आलोचक हैं। वे जो कुछ भी कहते हैं उससे असहमत होने के काफी कारण हो सकते हैं लेकिन वे गैर-जिम्मेदारी से नहीं बोलते हैं। उनकी अपनी जो दृष्टि है उसके हिसाब से बोलते हैं। दूसरी बात यह है कि वे काफी पढ़े-लिखे आलोचक हैं। हिन्दी में ऐसे आलोचकों की संख्या बहुत है जो गैर-जिम्मेदार या कम पढ़े-लिखे हैं। आज की पीढ़ी के लोगों में पढ़ने-लिखने का शौक नहीं है, फ़तवे देने का शौक है। मैनेजर पाण्डेय में एक नैतिक बोध है। वे जैसा सार्वजनिक रूप से बोलते हैं वैसा ही लिखते हैं। तीसरी बात यह है कि मेरे हिसाब से उनमें हिन्दी साहित्य की परम्परा की गहरी समझ है। मसलन, सूरदास पर उन्होंने विस्तार से लिखा है। सूरदास की राजनीति, उनके किसान जीवन का वर्णन आदि की ओर कम से कम मेरा ध्यान तो मैनेजर पाण्डेय की किताब पढ़कर ही गया। चौथी बात, उन्होंने साहित्य से इतर भी काम किया है। मसलन, सखाराम गणेश देउस्कर पर उनकी सम्पादित किताब है। एक आलोचक को इससे जाँचा जाना चाहिए कि वह किसी ऐसे लेखक या कृति की ओर आपका ध्यान आकर्षित करे, जिस पर आपका ध्यान न गया हो।"

—अशोक वाजपेयी

ISBN : 978-93-5000-687-8

E-book Available

www.vaniprakashan.in

आलोचना / Criticism

वाणी प्रकाशन का सिग्नेचर मोटिफ़ चित्रकार मक़बूल फ़िदा हुसैन की कृति है
Vani Prakashan's signature motif is created by Artist Maqbool Fida Husain

वाणी प्रकाशन
परम्परा के 53 वर्ष

आलोचना और समाज

सम्पादक रविकान्त, आकांक्षा सिं...

वाणी प्रकाशन
परम्परा के 53 वर्ष

"मूल्य-विवेक से सम्पन्न आलोचक"—सत्यप्रकाश मिश्र

आलोचना और समाज

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

सम्पादक
रविकान्त

मैनेजर पाण्डेय की आलोचना के आयाम

सियाराम शर्मा

बीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक में सोवियत समाजवाद के समक्ष उत्पन्न गम्भीर संकट के साथ हिन्दी के मार्क्सवादी आलोचकों में भगदड़ और अफरातफरी-सी मच गयी। कुछ गहन निराशा के गर्त में डूब गये तो कुछ अपनी समस्त प्रतिबद्धताओं को त्याग कर रूपवादी और कलावादी खेमे की शरण में चले गये। कुछ तो एक सौ अस्सी डिग्री घूम कर मार्क्सवादी और समाजवादी विचारधारा के मुखरविरोधी बन गये। युवा आलोचकों का एक बड़ा हिस्सा उत्तर-आधुनिकतावादी चिन्तन की गिरफ्त में आ गया। बचे-खुचे लोग सत्ता की संस्कृति के साथ तालमेल बैठाने की जुगाड़ में लग गये। कुल मिलाकर नव साम्राज्यवाद की आक्रामकता और वृद्ध पूँजीवाद की बर्बरता के इस दौर में हिन्दी आलोचना में कलावाद एवं रूपवाद का एक नया उभार दिखा। एक नया विवेकहीन, विचारहीन सौन्दर्यशास्त्र रचने की कोशिश हुई। ऐसे संकटग्रस्त समय में व्यक्तिगत विपत्तियों की त्रासदी को झेलते हुए भी मैनेजर पाण्डेय हिन्दी के उन गिने-चुने मार्क्सवादी आलोचकों में हैं, जिन्होंने सोवियत संघ के समाजवादी प्रयोग की गलतियों और सीमाओं को पहचानते हुए मार्क्सवाद की विचारधारा और समाजवाद के स्वप्न के प्रति अपनी आस्था डिगने नहीं दी और न ही भारत के शोषित-उत्पीड़ित जनसमुदाय के संघर्ष के प्रति अपनी प्रतिबद्धता का परित्याग किया। बहुत ही मुस्तैदी के साथ उन्होंने उत्तर-आधुनिकतावादी चिन्तन की विचारहीनता और बौद्धिक दिवालियेपन का पर्दाफाश किया। नव साम्राज्यवाद की भूमण्डलीकरण की नीतियों से उपजी सत्ता संस्कृति को 'लूट और झूठ' की संस्कृति के रूप में परिभाषित करते हुए उन्होंने जनप्रतिरोध की संस्कृति के हिरावल दस्ते का नेतृत्व किया।

आलोचना के केन्द्र में किसान जीवन का संघर्ष और सौन्दर्य

मैनेजर पाण्डेय का जन्म एक किसान परिवार में हुआ था। वे किसानों को 'भारतीय

समाज के मेरुदण्ड' तथा औपनिवेशिक व्यवस्था में सर्वाधिक शोषित-उत्पीड़ित वर्ग के रूप में देखते हैं। ऐसा सम्भवतः इसलिए है कि उनके आलोचनात्मक-व्यक्तित्व के निर्माण में सातवें दशक के किसान विद्रोह की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। किसान जीवन के अनुभव, यथार्थ और सौन्दर्य को उन्होंने अपनी आलोचना में केन्द्रीय स्थान दिया है। सूरदास का काव्य हो या प्रेमचन्द का उपन्यास या नागार्जुन की कविता, हर स्तर में किसान जीवन के यथार्थ, संघर्ष और सौन्दर्य की अभिव्यक्ति को उन्होंने अपनी आलोचना की कसौटी के रूप में इस्तेमाल किया है।

सातवें दशक के विद्रोह की पृष्ठभूमि में ही उन्होंने 'सूर का काव्य : परम्परा और प्रतिभा' विषय पर शोध कार्य किया। जिस सूरदास के काव्य को अब तक वात्सल्य, शृंगार, वाग्विदग्धता और संकुचित सामाजिकता के सन्दर्भ में देखा-परखा जाता था, उसे पाण्डेय जी ने किसान जीवन के अनुभव की व्यापकता से जोड़ कर देखा। सूरदास के काव्य को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल से लेकर रामविलास शर्मा तक ने 'पशुचारण काव्य' और 'पशुपालकों' के जीवन से जोड़कर देखा था। पाण्डेय जी ने इस प्रवृत्ति पर सवाल उठाते हुए कहा—"सोलहवीं सदी के भारतीय समाज का कवि प्रागैतिहासिक गोचारण का कवि कैसे हो सकता है? सूर के काव्य में ऐसा समाज है, जिसमें पशुपालन कृषि व्यवस्था का अंग है और गोचारण किसान जीवन के व्यापक अनुभवों का हिस्सा। ...सूर के काव्य में किसान जीवन दोनों रूपों में है। यहाँ किसान जीवन के यथार्थ का जितना प्रत्यक्ष चित्रण है, उससे अधिक किसान जीवन के अनुभवों की सांकेतिक व्यंजना है।"[1]

मैनेजर पाण्डेय भारतीय उपन्यास की भारतीयता को भी किसान जीवन से जोड़ कर देखते हैं। उनका मानना है कि यूरोपीय उपन्यासों के केन्द्र में या तो पतनशील सामन्त वर्ग रहा है या उदीयमान बुर्जुआ वर्ग। उन उपन्यासों के केन्द्र में किसान और मजदूर वर्ग नहीं है। लेकिन "भारतीय उपन्यास का स्वतन्त्र रूप तब विकसित हुआ जब उपन्यास रचना के केन्द्र में भारतीय किसान जीवन आया। तभी वह यथार्थवाद विकसित हुआ, जो राष्ट्रीय जागरण का अभिन्न अंग था। किसान जीवन से जुड़कर ही भारतीय उपन्यास की सच्ची भारतीयता विकसित हुई और उपन्यास राष्ट्रीय जीवन की महागाथा का प्रतिनिधि साहित्य रूप बना।"[2] किसान जीवन से आवयविक जुड़ाव के कारण ही वे उड़िया के कथाकार फकीर मोहन सेनापति तथा प्रेमचन्द को सर्वाधिक महत्त्व देते हैं। वे मानते हैं कि प्रेमचन्द को किसानों से सच्चा प्यार था और वे किसानों के अस्तित्व की अनिवार्यता महसूस करते थे। इसीलिए उनके कथा-साहित्य के अधिकांश नायक किसान हैं। प्रेमचन्द और किसान जीवन पर अपने विचार व्यक्त करते हुए वे कहते हैं—"प्रेमचन्द के कथा-साहित्य में मध्यवर्ग भी है, लेकिन केन्द्रीय स्थिति किसान जनता की ही है। यहाँ किसानों का

DR Shukla Sharma

ISSN : 2456-4397 (P)

Multi-disciplinary Bi-lingual International Journal

Anthology The Research

Impact Factor
SJIF = 3.39
IIJIF = 4.02

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

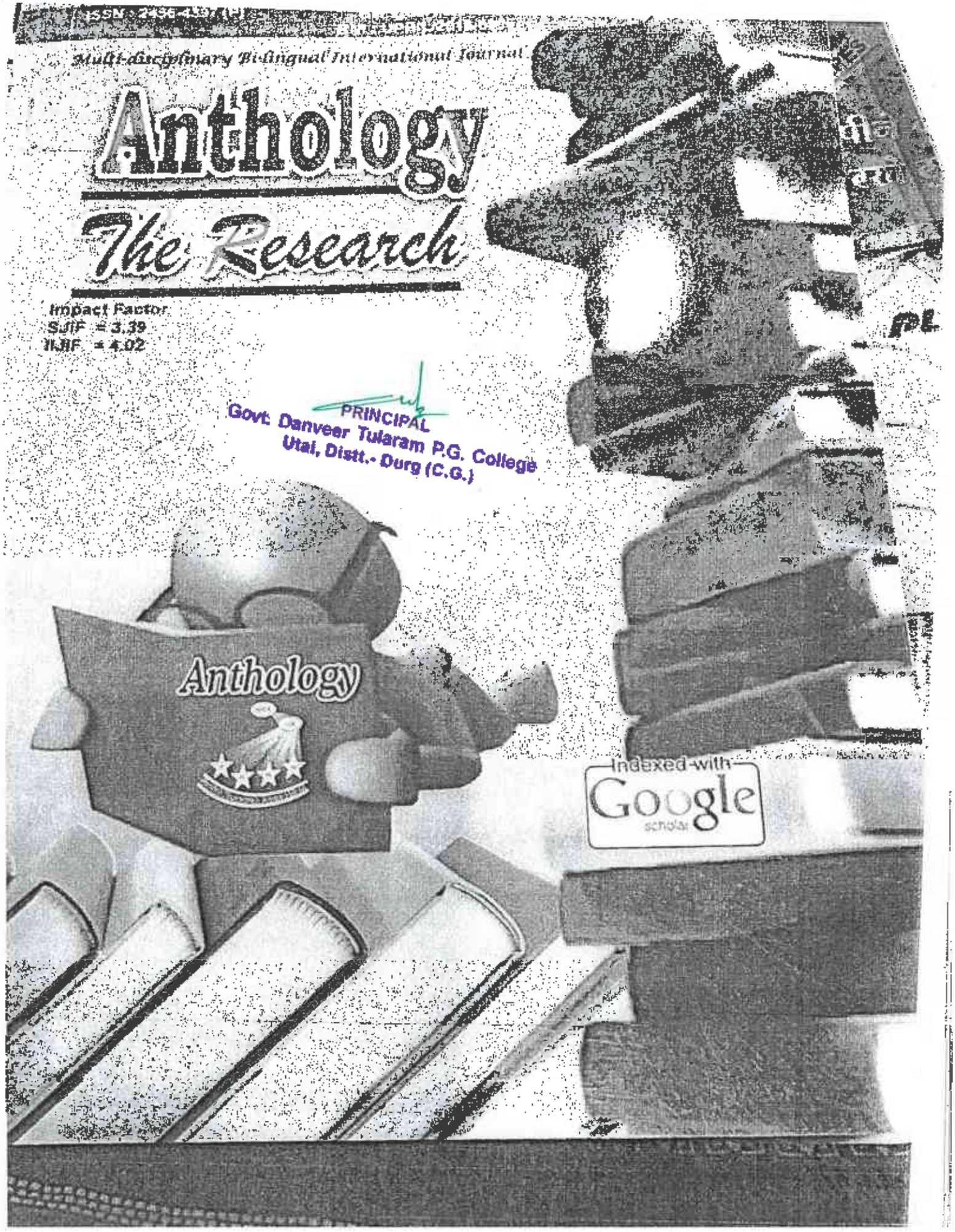

ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68867 Vol-3* Issue-9* December- 2018
Anthology : The Research

भारत में खाद्यान्न सुरक्षा–एक विवेचन

सुमा शर्मा
सहायक प्राध्यापक,
अर्थशास्त्र विभाग,
शासकीय तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
उतई, दुर्ग, छ.ग.

सारांश

भोजन लोगों के जीवन–मरण का प्रश्न है। हमें उन्हें पर्याप्त भोजन देना ही चाहिए।"

–लालबहादुर शास्त्री

सुरक्षित, पोषक एवं पर्याप्त भोजन की उपलब्धता मानव जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं में से एक है यही कारण है कि भोजन के अधिकार को अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार कानून द्वारा स्थापित किया गया है, यह सदस्य राष्ट्रों के लिए खाद्य सुरक्षा के सम्मान, सुरक्षा एवं पूर्ति हेतु दायित्व का निर्धारण करता है। संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) के अनुसार खाद्य सुरक्षा वह स्थिति है, जब सभी लोगों को हर समय, पर्याप्त, सुरक्षित और ऐसा पौष्टिक भोजन प्राप्त होता है, जो कि स्वस्थ्य और सक्रिय जीवन के लिए उनकी आहार संबंधी जरूरतों और भोजन संबंधी प्राथमिकताओं को पूरा करता है। संक्षेप में खाद्य सुरक्षा के चार प्रमुख आयाम यथा–पहुँच, उपलब्धता, उपयोग और स्थिरता कहे जा सकते हैं।

मुख्य शब्द : खाद्य सुरक्षा, अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार कानून।

प्रस्तावना

संयुक्त राष्ट्र के संस्थापन में सभी राष्ट्रों ने भुखमरी के विरुद्ध सामूहिक अभियान का सूत्रपात किया। इसी तारतम्य में संयुक्त राष्ट्र संघ के खाद्य एवं कृषि संगठन की स्थापना का स्मरण करने के लिए वर्ष 1979 से प्रत्येक वर्ष 16 अक्टूबर को विश्व खाद्य दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिवस को मनाने की मूल अवधारणा सम्पूर्ण विश्व में भुखमरी और कुपोषण से ग्रस्त लोगों के बारे में सभी का ध्यान आकृष्ट कर जनजागरूकता पैदा करना तथा इन समस्याओं से निपटने के लिए संबंधित व्यक्तियों एवं एजेन्सियों को ठोस कदम उठाने हेतु प्रेरित करना है। विश्व खाद्य दिवस 2018 के लिए चुना गया प्रमुख विषय 'Our actions are our future A # Zero hunger world by 2030 is possible' रखा गया। सार्वभौमिक मानवाधिकार घोषणा पत्र और आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय अनुबंध के सदस्य के रूप भारत पर भूख से मुक्त होने और पर्याप्त भोजन के अधिकार को सुनिश्चित करने का दायित्व है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् के वर्ष, भारतवर्ष के लिए बेहद अशांत रहे क्योंकि जहाँ एक ओर 1943 में बंगाल में आए भीषण अकाल, जिसमें लगभग 30 लाख लोग भुखमरी के शिकार हुए थे, उसकी यादें ताजा थीं, वहीं दूसरी ओर विभाजन के बाद खाद्यान्न संकट का भय भी निरन्तर बना हुआ था। उस दौर में भूख को अपर्याप्त खाद्य उत्पादन का पर्याय माना जाता था। वर्ष 1974 में विश्व खाद्य सम्मेलन (WFC) द्वारा उत्पादन के संदर्भ में खाद्य सुरक्षा को परिभाषित किया गया, जिसमें विश्व खाद्य आपूर्ति की हर समय, पर्याप्त उपलब्धता को ही खाद्य सुरक्षा की मान्यता प्रदान की गई। इन सभी परिस्थितियों ने भारत को खाद्य उत्पादन की दर में बढ़ोत्तरी करने हेतु विवश किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश में भारतीय नीति निर्माताओं ने खाद्यान्नों में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के उद्देश्य से विभिन्न उपाय अपनाए। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21 में प्रत्येक नागरिक के लिए जीवन के मौलिक अधिकार का प्रावधान किया। वहीं नीति निदेशक सिद्धांतों के तहत अनुच्छेद 47 में लोगों के पोषाहार स्तर और जीवन स्तर को ऊँचा करने के लिए राज्य का कर्त्तव्य तय किया। देश में अप्रैल 1951

SHODHAK

A Journal of Historical Research

ISSN 0302-9832

Vol. 45, Pt C, Sr 135 / Diwali-2072 / Sep.-Dec. 2015

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

Editor : Dr. Ram Pande

Mailing Address

SHODHAK

B-424, Malviya Nagar, Jaipur-302017

Phone : 0141-2524453 Mobile : 09828467885

E-mail : shodhak_journal@yahoo.co.in

INDIA

SHODHAK

Vol. 45, Pt C, 2015

CONTENTS

26.	Dominance of the Feminine Principle in Indus Valley	Daya Pant	212-225
27.	स्मृतियों में वर्णित अपराध, प्रकृति और दण्ड	सुमन यादव	226-234
28.	Food and Drinks in Early Medieval Northern India	Monika Rani	235-244
29.	ब्रिटिश कालीन रियासतों में ग्राम प्रधान की प्रशासनिक भूमिका	अनुसुईया जोगी, सी.आर. पटेल	245-259
30.	कांकेर जिले (उत्तर बस्तर) की सामाजिक–आर्थिक स्थिति	होबलाल साहू, चेतन राम पटेल	260-267
31.	इतिहास लेखन में वाचिक परंपराओं का स्रोत के रूप में उपयोग	सरिता साहू, के.के. अग्रवाल	268-278
32.	Qurratulain Hyder: An Illustrious Writer of Urdu Fiction	Syed Mohammad Amir	279-286
33.	भूमि अधिग्रहण	हेमन्त चौहान	287-306
34.	ग्वालियर राज्य में पर्यावरण और जल प्रबंधन	मीना श्रीवास्तव	307-312
35.	Taxation policy of the British in Madras	A. Sajeen	313-320
36.	Jaglal Chaudhary : An Illustrious Leader of Bihar	J.L. Verma	321-329
37.	बस्तरिया आदिम संस्कृति का महाउत्सव 'जगार'	निवेदिता कुमारी, सी.आर. पटेल	330-340

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College

अनुसूईया जोगी, अन्वेषिका, सहायक प्राध्यापक,
शा.महा.वि. उतई, जिला –दुर्ग
निर्देशक
सी.आर. पटेल, प्राचार्य
शा.महा.वि. चारामा, जिला –कांकेर

SHODHAK
Vol. 45, Pt. C
Sr. 135, 2015

Administrative Role of a Headman in British States
(Special reference to Bastar and Rajnandgaon riyasat)
ब्रिटिश कालीन रियासतों में ग्राम प्रधान की प्रशासनिक भूमिका
(बस्तर एवं राज नांदगांव रियासत के विशेष संदर्भ में)

British rule fully established in Chhattisgarh by the year 1854. They gained political control over Nagpur after the 4th Maratha war in the year 1818. The effect of British establishment was seen after this war. The headman of a gram was called Gautiya since Kalchuris era in Chhattisgarh. Goutiya was authorized to collecting and submitting interests take in government treasury. He could interfere in tax session. During Maratha rule, a Patel was appointed to collect tax from villages which was later adjourned revenue officer were transferred /changed in khalsa region during British rule. Power of Gautiya was decimated but their popularity persisted. In tribal dominated regions like Bastar the head of grams were named differently by different Tribal communities the prominent names were munda, pradhan, parghana mukhiya, mukhi, patel, pedda. The parghana head of these gram heads was known as Manjhi which was the important post in state. Manjhi's main task was tax collection and submission in government treasury Manjhi's were appointed by state level appointed area contractor. Appointment of Goutia's were not an inherent basis but on the basis of revenue generation. Manjhis post was not abolished but they were on constant pressure for tax collection and looking after administrative proceedings later on Manjhi's were appointed inherent bias.

In this present research the administrative revenue reports of different states by Wajibularz was utilized. These reports were similar to the present gazette latter published by different government departments. The reports of different states of that time were still not republished. Wajibuarz report provides (rural) details about administrative structure revenue generation, legal structure and power and functions of administrative officer.

Keywords : गोटिया, पटेल, ठेकेदार, मौजा, रैय्यत, राजस्व, माफी।

प्रशासन एक सभ्य समाज का मुख्य अंग माना जाता है। प्रशासन का उद्देश्य उत्पन्न समस्याओं का निराकरण एवं हर क्षेत्र में मानव विकास में सहयोग प्रदान करना है। किसी देश अथवा राज्य के प्रशासन एवं उसके प्रबंधन में विभिन्न अधिकारियों एवं कर्मचारियों की भूमिका होती है।

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

IJELLH
International Journal of English Language, Literature and Humanities
Volume III, Issue V, July 2015 – ISSN 2321-7065

Course Design and Material Development in Teaching of English: *A Report on the Course proposed for First Semester Engineering College Students at CSVTU*

Mohammed Tausif ur Rahman
Assistant Professor of English
MM College Technology
Raipur, CG
India

Dr. A. A. Khan (Guide)
Professor & Head
Department of English
Govt. DT College UTAI, Durg, CG
India

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

Abstract

Teaching English to First Semester Engineering College Students is a challenge. The students of first year college are 17-18 years of age. They have done their Higher Secondary School Certificate (matriculation).Before this they had five years of primary education and also Secondary Level (sixth, seventh and eighth years) and Higher Secondary Level (ninth, tenth, eleventh and twelfth years).

The majority comes from regional language medium schools (in Chhattisgarh, it is Hindi). So, they have had six years of English at Secondary and Higher Secondary Levels. Those who come from English medium schools (they are not many) have had 12 years of English. In principle, therefore, they come to first year college with sufficient knowledge of the structure of English and they are supposed to understand and express themselves in work-able English. But in reality, that is not the case. Most students 'do' their English with the main aim to pass their examinations and they are able to do so with the help of bazaar notes

Review Of Research
ISSN:-2249-894X
Impact Factor : 3.1402(UIF)
Vol. 4 | Issue. 4 | Jan. 2015
Available online at www.ror.isrj.org

USE OF VIDEO IN ELT FOR MATERIAL DEVELOPMENT

Mohammed Tausif ur Rahman[1] and A A Khan[2]

[1]Assistant Professor of English , MM College Technology , Raipur , CG , India.
[2](Guide) Professor& Head , Department of English , Govt. DT College UTAI , Durg, CG , India.

Abstract:- We have always talked about recorded material and audio material only. But of course, we can also bring in video in the form of film clips, DVD or online video extracts for our learners to listen and learn while they watch.

Video have many good reasons for encouraging students to watch while they listen. In the first place, they get to see "language in use". This not only captures their interest but also allows them to internalise a whole lot of paralinguistic behaviour. For example, they can see how intonation matches facial expression and what gestures accompany certain phrases. Video allows learners entry into a new world of communications: they see how different people stand when they talk to each other and at the same time try to mime and learn many things, they also put themselves into different characters and echoes. This first helps the learners to memorize the target language chosen for them through the video.

Keywords: Use of Video, Activities and Tasks Based lesson, Material Development through Video Clips and extracts.

INTRODUCTION

Therefore, video extracts can be used as a main focus of a lesson sequence or as parts of other longer sequences. Sometimes we might get learners to watch a whole programme, but at other times they will only watch a short two-or three-minute sequence. Because learners are used to watching film at home – and may therefore associate it with relaxation – we need to be sure that we provide them with good viewing and listening tasks so that they give full attention to what they are seeing and hearing .But it also a plus point that they never get into a habit of making notes because they have never made notes whenever they watched movies or serials and captures the information and also reproduce it in the form of information packets when required.

Techniques commonly practised in using video in class

Following viewing techniques are designed to awaken the learners curiosity through prediction so that they finally watch the film sequence in its entirety, they will have some expectation about it.

- Fast forward: the teacher presses the play button and then fast forwards the DVD or video so that the sequence shoots past silently and at great speed, taking only a few seconds. When it is over, the teacher can ask students what the extract was all about and whether they can guess what the characters are saying.
- Silent viewing (for language): the teacher plays the film extract at normal speed but without the sound. Students have to guess what the characters are saying. When they done this, the teacher plays it with sound so that they can check to see if they guessed correctly.
- Freeze Frame: at any stage during a video sequence we can 'freeze' the picture, stopping the participants dead in their tracks. This is extremely useful for asking the students what they think will happen next or what the character will say next.

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

IJELLH
International Journal of English Language, Literature and Humanities
Volume III, Issue V, July 2015 – ISSN 2321-7065

Course Design and Material Development in Teaching of English: *A Report on the Course proposed for First Semester Engineering College Students at CSVTU*

Mohammed Tausif ur Rahman
Assistant Professor of English
MM College Technology
Raipur, CG
India

Dr. A. A. Khan (Guide)
Professor & Head
Department of English
Govt. DT College UTAI, Durg, CG
India

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

Abstract

Teaching English to First Semester Engineering College Students is a challenge. The students of first year college are 17-18 years of age. They have done their Higher Secondary School Certificate (matriculation).Before this they had five years of primary education and also Secondary Level (sixth, seventh and eighth years) and Higher Secondary Level (ninth, tenth, eleventh and twelfth years).

The majority comes from regional language medium schools (in Chhattisgarh, it is Hindi). So, they have had six years of English at Secondary and Higher Secondary Levels. Those who come from English medium schools (they are not many) have had 12 years of English. In principle, therefore, they come to first year college with sufficient knowledge of the structure of English and they are supposed to understand and express themselves in work-able English. But in reality, that is not the case. Most students 'do' their English with the main aim to pass their examinations and they are able to do so with the help of bazaar notes

IJELLH
International Journal of English Language, Literature and Humanities
Volume III, Issue V, July 2015 – ISSN 2321-7065

Testing and Evaluation Adopted for the Course proposed for First Semester Engineering College Students at CSVTU

Mohammed Tausif ur Rahman
Assistant Professor of English
MM College Technology
Raipur, CG
India
Dr. A. A. Khan (Guide)
Professor & Head
Department of English
Govt. DT College UTAI, Durg, CG
India

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

Abstract

We as teachers of English do spend a lot of time testing, evaluating and assessing students. Sometimes, it is to measure the students' abilities to see if they are eligible to enter a course or institution. Sometimes, it is to see the progress and sometimes it is because the students themselves want a qualification. Therefore, the assessment is sometimes formal and public and sometimes it is informal and takes place in day-to-day sessions.

This paper illustrates testing, types of tests, characteristics of good test and the evaluation processes in general practiced in ELT and test and evaluation process adopted in particular for the assessment of the students' progress in a course specially designed for first semester Engineering college students at CSVTU to have a workable command of English not only for group discussions, interviews and presentations but also for social standing.

The very idea of a choosing diagnostic test of all the tests is centred on the intentional and planned activity of teaching to assess our students' progress based on their needs and the course objective. For this,we sometimes give them the same test we give them at the start of the Course. The first diagnostic test is usually a 20 minute test and it is administered on the day 1 of the course followed by an informal Chat. The exit level test is given at the end of

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER

INDEX COPERNICUS INTERNATIONAL

Crossref

UGC Approved Journal

IJELLH

International Journal of English Language, Literature in Humanities

Indexed,Peer Reviewed (Refereed) Journal

ISSN-2321-7065

Impact Factor : 5.7

Editor-in-Chief

Volume V, Issue IX
September 2017

www.ijellh.com

About Us | Editorial Board |Submission Guidelines |Call for Paper

Paper Submission | FAQ |Terms & Condition | More.....

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

IJETSR
ISSN:2394-3386

International Journal of Engineering Technology Science and Research
IJETSR
www.ijetsr.com
ISSN 2394 – 3386
Volume 3, Issue 4
April 2016

Gender Issues in the Novels of Chitra Banerjee Devkaruni

(1) SHUBHRA TIWARI*
(RESEARCH SCHOLAR)

(2) Dr.A.A.KHAN**
(GUIDE)

Gender is created by every socializing agent and force in society: parents, teachers, religion, media and so on. Violence and gender are intricately related since time immemorial. The different roles and behaviors of females and males, children as well as adults, are shaped and reinforced by gender norms within society. These are social expectations that define appropriate behavior for women and men (e.g. in some societies, being male is associated with taking risks, being tough and aggressive and having multiple sexual partners). This trend is particularly evident in Indian culture which is a combination of different cultures. In India a woman's identity is through her father at the time of birth, through husband after marriage and through son in old age. She is not allowed to act free as per her own desire. This desire to act free and break the shackles of orthodox society, that views male and female through different glasses has been beautifully delineated by Indo American author Chitra Banerjee Devkaruni. Devkaruni has depicted education as a force which could free female from the chains of subordination and slavery. This desire to achieve freedom for self is expressed beautifully in Devkaruni's work Mistress of Spices through the character of Lalita. Lalita is a simple, docile Indian girl who was married through deceit to a much older man living in America and she has to honor this marriage because of family obligation. Lalita tries her best to mould herself according to her husband but her emotions and wishes were mutilated at every step. She was so suppressed and tortured that she forgot about her creativity and started expressing herself through her husband's vision which was very negative. She knows the art of stitching. *She too has a gift, a power, though she does not think of it so. Every cloth she touches with her needle blooms.*

'Ah you stitch'. 'I used to a lot; once. I loved it. In Kanpur I was going to sewing school. I had my own singer machine; lot of ladies gave me stitching to do'.

She looked down. In the defected curve of her neck I saw what she did not say, the dream she had dared to: one day soon, maybe perhaps why not, her own shop, Lalita Tailor Works. (Mistress of Spices).

The writings of Chitra Banerjee are an articulation of silence that has permeated the lives of females. As is seen in case of Lalita in 'Mistress of Spices' Tilo expresses, *'I would like to call her by it, but how can I while she thinks of herself only as a wife'.* The male chauvinism is clearly evident in Lalita's case that has to follow the social norm of a wife's identity through her husband. He (Ahuja) refuses that his women (Lalita) should work. *Aren't I man enough man enough man enough.* (p 15 Mistress of Spices)

Differences in gender roles and behaviors often create inequalities, whereby one gender becomes empowered to the disadvantage of the other. Thus, in many societies, women are viewed as subordinate to men and have a lower social status, allowing men control over, and greater decision-making power than, women. Inequality in gender leads to violence by men against women. In 'Silver Payment Golden Roof', the husband is a mechanic and is dissatisfied with his condition. He empties his entire frustration on his wife who tolerates it silently. Her condition is further deteriorated by her alienation in a foreign country with no one to empathize with her. She keeps herself under house arrest as her husband has strictly instructed her not to step out of house. Similar was the case of Lalita from *Mistress of Spices*, who was also under strict vigilance of her husband. Lalita's husband has told her not to talk to anyone or move out without her husband's approval. Even her personal letters to her parents were proof read by her husband. *'Recently, the rules. No going out. No talking on the phone. Every penny I spend to be accounted for .He should read my letters before he mails them.'* (P103 Mistress of Spices). Even in the most intimate matters, she could not express her unwillingness and if she did, she has to incur the wrath and insult of her husband. As Lalita narrates, *'In bed especially I could not forget those nights in India. Even when he tried to be gentle I was stiff and not willing. Then he would lose patience and shout the American words he'd learned. Bitch. Fucking you is like fucking a corpse.*

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

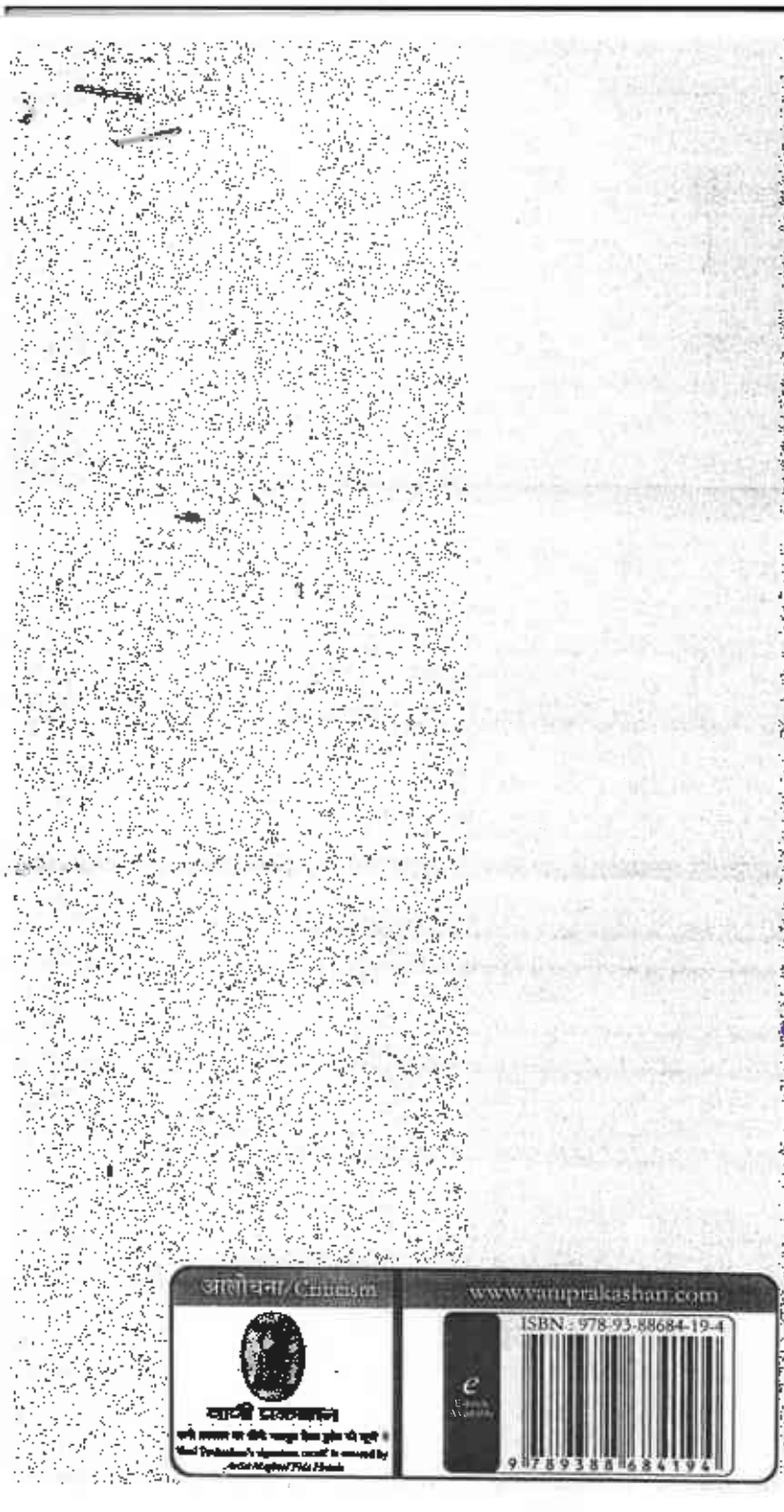

हमारे समय में मुक्तिबोध

सम्पादक
ए. अरविंदाक्षन

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

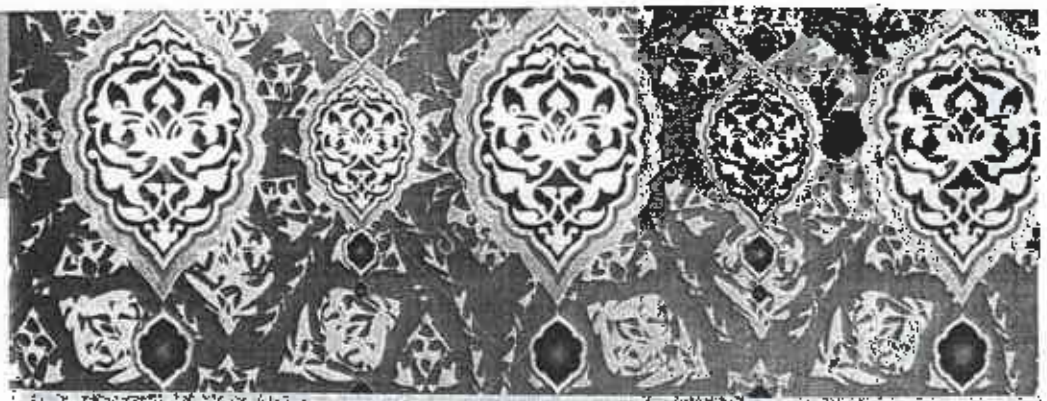

ISBN: 978-93-88684-19-4
www.vaniprakashan.com
आलोचना/Criticism

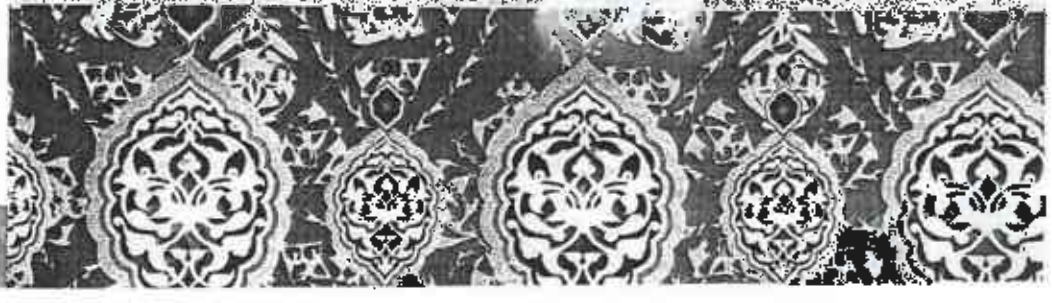

आलोचना के मूल में सक्रिय वर्ग दृष्टि

सियाराम शर्मा

मुक्तिबोध नयी कविता के दौर के प्रतिनिधि कवि हैं। वे अपने युग की रचनात्मक समस्याओं, सीमाओं, प्रश्नों और चुनौतियों से बहुत गम्भीरतापूर्वक टकराये। उन्होंने उस पर गहन चिन्तन-मनन और सूक्ष्म विवेचन, विश्लेषण किया। अतः वे बहुत ही सुसंगत और मौलिक निष्कर्षों तक पहुँचे। यही कारण है कि 'कविता के नये प्रतिमान' में नामवर जी ने उनकी बहुत सारी अवधारणाओं और निष्कर्षों का सार्थक इस्तेमाल किया। नयी कविता के सौन्दर्यशास्त्र को विकसित करने के साथ-साथ मुक्तिबोध ने हिन्दी में मार्क्सवादी सौन्दर्यशास्त्र को विकसित करने का मौलिक प्रयास किया। मुक्तिबोध के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक आलोचनात्मक चिन्तन के मूल में वर्ग दृष्टि निरन्तर सचेत और सक्रिय रही है।

मुक्तिबोध ने आलोचकों और आलोचना पर बहुत ही उचित और मार्मिक टिप्पणियाँ की हैं। वे आलोचना में ऐतिहासिक, समाजशास्त्रीय तथा मनोवैज्ञानिक, सौन्दर्यात्मक विवेचन की एकात्मता को फलीभूत होते हुए देखना चाहते थे। मुक्तिबोध के अनुसार, एक कृति की सच्ची आलोचना उसके उसके ऐतिहासिक, समाजशास्त्रीय तथा मनोवैज्ञानिक और सौन्दर्यात्मक विवेचन करते हुए उसके अन्तर्सम्बन्धों की पड़ताल पर निर्भर करती है। वे आलोचना में फैसले और निर्णय की हड़बड़ी से बचने की सलाह देते हैं। उन्होंने आलोचकों को साहित्य का दारोगा कहकर उसकी सीमाओं की ओर ध्यान भी दिलाया। उनके आलोचनात्मक चिन्तन की सबसे बड़ी ख़ासियत उनकी रचनात्मक ईमानदारी और बेचैनी है। वे साहित्य की छोटी से छोटी समस्या को भी अपनी तीक्ष्ण संवेदना की नोंक पर आन्तरिक पीड़ा और छटपटाहट के साथ हल करने की कोशिश करते हैं। इसीलिए उनके समय के बहुत से विचार और सिद्धान्त जो दूसरों के लिए सरल, सहज और निर्विवाद थे, उसे वे अपने रचनात्मक चिन्तन के धरातल पर समस्याग्रस्त पाते हैं।

मूलतः एक रचनाकार होते हुए भी मुक्तिबोध आलोचक की भूमिका को रचनाकार से भी ज़्यादा महत्त्वपूर्ण और ज़िम्मेदारी भरा कार्य मानते थे। उनके

अनुसार, 'साहित्य विवेक मूलतः जीवन विवेक है'। अतः साहित्य की महत्त्वपूर्ण कसौटी जीवन का सत्य है और जीवन के इस सत्य को आलोचक को लेखक से भी ज़्यादा देखने समझने की ज़रूरत होती है। यह सम्भव है कि लेखक जिस जीवन को उद्घाटित करना चाहता हो, वहाँ उसकी समझ एकांगी, अधूरी और विकृत हो। ऐसे में एक समर्थ आलोचक ही उसे उसकी सीमाओं का अहसास करा सकता है। इसीलिए मुक्तिबोध का मानना है कि—'आलोचक या समीक्षक का कार्य, वस्तुतः कलाकार या लेखक से भी अधिक तन्मयतापूर्ण और सृजनशील होता है। उसे एक साथ जीवन के समुद्र में डूबना पड़ता है, और उससे उबरना भी पड़ता है, कि जिससे लहरों का पानी उनकी आँखों में न घुस पड़े।....असल में, वास्तविक जीवन की संवेदनात्मक समीक्षा-शक्ति के अभाव में, साहित्य के क्षेत्र की समीक्षा शक्ति थोथी होती है। इसीलिए समीक्षक का आदि कर्तव्य वास्तविक जीवन की संवेदनात्मक समीक्षा शक्ति का विकास करना है। जीवन की परिस्थितियों, प्रवृत्तियों, गतिविधियों और उसमें पले हुए व्यक्तित्वों का संवेदनात्मक ज्ञान जब तक समीक्षक को नहीं है, (और वह हो नहीं सकता जब तक कि अपने वर्ग, श्रेणी या समाज की व्यापक ज़िन्दगी में समीक्षक की ज़िन्दगी की हिस्सेदारी न हो) तब तक समीक्षक की साहित्य-समीक्षा कृतियों के उस बच्चे के समान है जिसकी आँखें नहीं खुली हैं। ...लेखक जीवन की विभिन्न मनोवृत्तियों, स्थितियों आदि-आदि का अंकन करने का प्रयत्न करता है। समीक्षक को इन जीवन सत्यों से अधिक परिचित होने की आवश्यकता है, तभी वह लेखक की सहायता कर सकता है, उसकी चेतना की परिधि को विस्तृत कर सकता है, अन्यथा नहीं। लेखक को सचमुच सहायता करने वाले समीक्षक, जीवन-सत्यों से लेखक से भी अधिक परिचित होते हैं। तभी वे लेखक द्वारा प्रस्तुत की गयी जीवन-समीक्षा की समीक्षा कर सकते हैं' (मुक्तिबोध रचनावली : पाँच, राजकमल प्रकाशन, पेपर बैक संस्करण 1985, पृ.-83, 86)। हालाँकि मुक्तिबोध यह भी मानते हैं कि एक बड़ा लेखक ख़ुद का सबसे बड़ा आलोचक होता है। वह दूसरों की प्रशंसा के साथ-साथ अपनी आलोचना को भी स्वविवेक की कसौटी पर कसकर देखता है।

मुक्तिबोध हिन्दी के उन गिने-चुने लेखकों और समीक्षकों में हैं, जिन्होंने आधुनिक साहित्य की आलोचना का नया शास्त्र विकसित किया। 'एक साहित्यिक की डायरी' में मुक्तिबोध ने नयी रचनाशीलता से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर ग़ैर-पारम्परिक ढंग से बात की। आधुनिक रचना विधान से जुड़े ये मुद्दे नये साहित्य शास्त्र की भूमिका तैयार करते हैं। मुक्तिबोध के अनुसार सौन्दर्य सिर्फ़ रचना विधान तक सीमित न रहकर आन्तरिक होता है। 'सौन्दर्य की यह आन्तरिकता, वस्तुतः अनुभूति के मूल में स्थित मानव सम्बन्धों, विश्वदृष्टि तथा जीवन मूल्यों से बनती है। यह जीवन मूल्य, मानव सम्बन्ध तथा विश्वदृष्टि उस वर्ग की विश्वदृष्टि होती है जो साहित्यिक-सांस्कृतिक

8226078005

संघर्ष चेतना का मुखर सहयात्री

फ़िलहाल

फ़िलहाल ट्रस्ट प्रकाशन | वर्ष 16 | अंक 7-8 | अप्रील 2014 | 10 रुपए

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

संपादकीय

नौजवान और बेरोजगार 1
खुली लूट, खराब मूड, गहन खामोशी 2

हाल-फ़िलहाल

अलाभकारी खेती का सरकारी विकल्प 4
- सियाराम शर्मा
गुजरात में गरीब 7
- जाहिद खान
धारा 295 ए 8
- शिव प्रसाद स्वामीनाथन
हम किताब क्यों लिखते हैं? 10
- अनन्या वाजपेयी
यहां वहां सारा जहां 12
- रत्नेश कुमार
बंदिश आखिर किस पर? 15
- वेंडी डोनिजर
नवउदारवाद से उपजी चुनौतियां 16
- प्रभात पटनायक

गतिविधि

अलबेला शहीद मेला 17
- संजय कुमार

एक नजर

आज की भाषा 21
- एदुआर्दो गालिआनो

विशेष लेख

दलित आंदोलन के बुनियादी सिद्धांत 22
- आनंद तेलतुंबड़े

सदस्यता का नवीकरण करवा कर संस्था को सहयोग करें

सहयोग राशि

वार्षिक	:	100 रुपए
तीन साल	:	250 रुपए
आजीवन	:	1000 रुपए

नौजवान और बेरोजगार

राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन (*एनएसएसओ*) ने खुद कहा है कि इसके सर्वेक्षणों के आधार पर बेरोजगारी की दर का जो आकलन होता है वह 'बहुत ही कम' होता है और उसमें 'उतार चढ़ाव की बहुत ज्यादा संभावना होती है' (एनएसएसओ रिपोर्ट नंबर 554, पेज 180). फिर भी पिछले महीने रोजगार और बेरोजगारी पर सर्वेक्षण के 68वें चक्र (जुलाई 2011-जून 2012) के जारी आंकड़ों ने दिखलाया है कि नौजवानों की बेरोजगारी की दर सीमित परिभाषाओं के मुताबिक भी कितनी ऊंची हो चुकी है. पंद्रह से उनतीस साल के नौजवानों में बेरोजगारी की दर 2011-12 में 12.6 फीसद थी. शहरी युवकों में से 13 फीसद और युवतियों में से 8 फीसद बेरोजगार हैं. लेकिन माध्यमिक और उससे ज्यादा शिक्षा प्राप्त नौजवानों में बेरोजगारी और भी ज्यादा है. शहरी शिक्षित युवकों में से 19.8 फीसद और युवतियों में से 11.7 फीसद और ग्रामीण शिक्षित युवकों में से 15.5 फीसद और युवतियों में से 8.1 फीसद बेरोजगार हैं.

यह हालत तब है जब नौकरियों के जो मौके पैदा हो रहे हैं उनका बड़ा हिस्सा शहरी नौजवानों और खासकर युवकों के हिस्से जा रहा है. शहरी युवक देश की कुल आबादी का महज 16 फीसद हैं. लेकिन 2004-05 से 2011-12 के बीच कंप्यूटर और संबंधित गतिविधियों में नौकरियों का 70 फीसद और उद्योग, वित्त, कारोबारी सेवाओं और रियल इस्टेट में नौकरियों में से 60 फीसद शहरी युवकों के हिस्से गया. ऐसी नौकरियों में युवतियों का हिस्सा भी काफी छोटा बना हुआ है. साल 2004-05 के बाद पैदा हुई नौकरियों में वित्त, रियल इस्टेट और कारोबारी सेवाओं में 21 फीसद, कंप्यूटर और संबंधित क्षेत्रों की नौकरियों में 18 फीसद और व्यापार, मरम्मत, होटल, यातायात और संचार क्षेत्रों की नौकरियों में बस 3 फीसद युवतियों को मिले.

ध्यान रहे कि ये आंकड़े महज इस गणना पर आधारित हैं कि नौजवान आबादी में से कितने लोग साल में कितने दिन काम कर रहे थे. इसमें इस बात की कोई गणना नहीं है कि नौजवान क्या अपनी शिक्षा, क्षमता और काबिलियत के मुताबिक काम में लगे थे और कितना मेहनताना पा रहे थे. हम यह तो जानते ही हैं कि अच्छे रोजगार और नौकरियां कम होती जा रही हैं. निजी और सार्वजनिक संगठित क्षेत्र को मिलाकर 2004-05 के बाद रोजगार बढ़ने की दर महज 1.1 फीसद रही. असंगठित क्षेत्र में रोजगार और भी धीमी रफ्तार से बढ़े. तमाम किस्म के रोजगार बढ़ने की दर 2004-05 से 2011-12 के बीच सालाना 0.8 फीसद रही. हम यह भी जानते ही हैं कि कुल कामगारों में 93 फीसद असंगठित क्षेत्र में हैं. साल 2011-12 के

अलाभकारी खेती का सरकारी विकल्प

खेती का निगमीकरण और ठेके की खेती

■ सियाराम शर्मा

सरकार खेती संकट का दूरगामी समाधान खेती के निगमीकरण में देखती है. वह चाहती है कि बड़े पैमाने पर निर्यातोन्मुख कॉरपोरेट खेती हो. छोटे छोटे किसान अपने खेतों को बड़े पूंजीपतियों और निगमों के हाथों बेच दें. अपनी जमीन और श्रम लगाने के अलावा इस पद्धति में किसानों की कोई सक्रिय भूमिका नहीं रह जाती. उत्पादन की प्रक्रिया, संसाधनों और खरीद पर पूरी तरह कंपनियों का नियंत्रण कायम हो जाता है.

खेतिहर उत्पादन में लागत सामग्रियों की कीमतों में उत्तरोत्तर वृद्धि और उत्पादन के मूल्य निरंतर कम मिलने से किसानों के लिए खेती अलाभकर बन गई है. एक अनुमान के अनुसार एक एकड़ धान की खेती के लिए अगर किसानों के श्रम का मूल्य भी जोड़ दें तो कुल खर्च नौ हजार सात सौ रुपए बैठता है और उन्हें मिलते हैं अधिकतम सात हजार सात सौ रुपए मात्र. इस तरह एक एकड़ पर लगभग 2000 रुपए का उन्हें घाटा होता है. इस हालत में खेती पर गुजर बसर करना अब उनके लिए संभव नहीं रह गया है. निश्चित तौर पर किसान अधिक दिनों तक इस घाटे का बोझ बर्दाश्त नहीं कर सकते. एक दिन जाएगी छोड़ने के लिए उन्हें बाध्य होना पड़ेगा. सरकार की मंशा भी यही है. इसीलिए वह हालात में बदलाव नहीं चाहती. वह खेती संकट का दूरगामी समाधान खेती के निगमीकरण में देखती है. वह चाहती है कि बड़े पैमाने पर निर्यातोन्मुख कॉरपोरेट खेती हो. छोटे छोटे किसान अपने खेतों को बड़े पूंजीपतियों और निगमों के हाथों बेच दें और फार्म मालिकों के यहां खेत मजदूरों की तरह काम करें. खेती को उद्योग का दर्जा देने की मंशा के पीछे भी उसकी यही चाल है.

बड़े पैमाने पर निर्यातोन्मुख निगमित खेती देश की खाद्यान्न आत्मनिर्भरता के सामने एक नया संकट खड़ा कर देगी क्योंकि निगमों के मालिक उन खाद्यान्न फसलों को कभी नहीं उगाना चाहेंगे जिसमें मुनाफा कम हो. अब हमारी खाद्यान्न आत्मनिर्भरता खत्म हो जाएगी तो क्या हम इतनी बड़ी आबादी को आयात कर भोजन उपलब्ध कराएंगे? ऑस्ट्रेलिया से पिछले सालों में किया गया घटिया गेहूं का आयात और विदेशी दूध पाउडरों से बाजार का भर जाना इसी दिशा की ओर संकेत करता है. लेकिन हमारी खाद्यान्न आत्मनिर्भरता चौपट हो जाने पर भी क्या ये अनाज और दूध उतने ही सस्ते रहेंगे जितने आज हैं? यूरोपीय और अमरीकी कंपनियां सस्ते खेती उत्पादों से हमारे बाजारों को पाटकर हमारी खेती व्यवस्था को बर्बाद कर उस पर अपना नियंत्रण कायम करना चाहती हैं, सरकार उनके जाल में फंसती जा रही है. यह मौजूदा खेती संकट को निगमीकरण के लिए एक मौके के रूप में देखती है.

मौजूदा खेती संकट का प्रमुख कारण भूमि सुधार न किया जाना है. अब भूमि सुधार तो दूर खेती के निगमीकरण की दिशा में भूमि सुधार कानूनों को पलटने की प्रतिक्रियावादी कोशिशें शुरू हो गई हैं. निगमीकरण को सुगम बनाने के लिए केंद्र के दिशा निर्देश पर महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु और गुजरात में नए कानून पारित किए जा चुके हैं और झारखंड, पश्चिम बंगाल और केरल मे कोशिशें जारी हैं. इन राज्यों की कोशिश यह है कि छोटे किसानों को खेती से अगर पूरी तरह खदेड़ा न जा सके तो कम से कम उन्हें ठेके की खेती के मातहत तो कर ही दिया जाए. ग्रामीण इलाके के बड़े जोतदार आज खुद खेती कार्य में अक्षम हैं. इसलिए वे बड़े निगमों के प्रवेश का माध्यम बन रहे हैं. छोटे और भूमिहीन किसानों को अब जोतदारों के साथ साथ खेती क्षेत्र के बड़े पूंजीपतियों से भी संघर्ष करना होगा. नए दौर के कॉरपोरेट जमींदार, रिलायंस, भारती, टाटा, वालमार्ट, मोंसैंटो और कारगिल जैसी दैत्याकार कंपनियां होंगी. यह आकस्मिक नहीं है कि निजी क्षेत्र के बैंक आईसीआईसीआई पशुओं के लिए चारा बेच रही है और रिलायंस सब्जी के बाजार में उतर चुका है.

केंद्र सरकार खेती के लिए कॉरपोरेट घरानों को करीब तीन हजार करोड़ रुपए की सहायता देने जा रही है. इससे बड़े कॉरपोरेट दलहन, तिलहन और आलू से लेकर केला तक उगाएंगे. ये कॉरपोरेट घराने उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश से लेकर गुजरात, छत्तीसगढ़ और पंजाब जैसे कई राज्यों में अब खेती करेंगे. हाल ही में राष्ट्रीय खेती विकास योजना के तहत दस लाख किसानों को लेकर तैयार की गई कंपनियों की तरफ से पेश सात हजार करोड़ रुपए की योजना केंद्र सरकार ने मंजूर की है. इसमें 2900 करोड़ रुपए अनुदान के रूप में देने का प्रावधान है. निजी और सार्वजनिक क्षेत्र की भागीदारी से समग्र खेती विकास (पीपीपीआइएडी) के तहत तैयार की गई इस योजना में 85 प्रस्ताव शामिल हैं. आइटीसी, गोदरेज एग्रोवेट, अडानी, मैस्को, नेस्ले, टाटा कैमिकल्स, श्रीराम, नेशनल स्पॉट एक्सचेंज लि., एनएसएल, कॉटन कार्पो, एनएसएल शुगर्स, एनएसएल टेक्साटाईल्स, नुजिवीदु सीड्स, एक्सेस लाइवलीहुड, कंसल्टिंग ग्रालि, भूषण एग्रो, एफआरटी एग्रो बेंचर्स, ग्रामको इंफ्राटेक और निडग्रीस कंपनियांशामिल हैं. वे परियोजनाएं 17 राज्यों की 12 लाख हेक्टेयर जमीन पर चलेंगी.[1]

स्पष्ट है कि सरकार की प्राथमिकता में किसान नहीं, कॉरपोरेट घराने हैं. एक तरफ किसानों की सब्सिडी, कर्ज और समर्थन मूल्य के लिए सरकार के पास पैसे का अभाव है और वह किसानों की आत्महत्या का मूकदर्शक बनी रहती है. दूसरी ओर कॉरपोरेट घरानों के अनुदान के लिए तीन हजार करोड़ रुपए की सहायता देने में उसे हिचक नहीं होती. इस उदाहरण से सरकार की यह मंशा भी उजागर होती है कि वह छोटी खेती को खत्म कर कॉरपोरेट खेती को बढ़ावा देना चाहती है.

भूमंडलीकरण की कोख से उपजे मध्यवर्गीय उपभोक्ताओं की विशाल संख्या देशी विदेशी बड़ी कंपनियों को खेती क्षेत्र में निवेश के लिए तेजी से आकर्षित कर रही

उन्हें नहीं दबा पाती पुलिस
धन के तुम्हारे दलाल
तुम्हें देते हैं फूटी आँखें
कटी जीभ , लँगड़ाते पाँव , मंद बुद्धि
अबोध शिशु ही खेलते हैं आँच से
तुम्हारी स्वर्ण मुद्रायें काफी हैं
अंध गर्त में ढकेलने को मुझे
रंग भेद , जाति द्वेष ,धर्मोन्माद
तुम्हारे विष बुझे अस्त्र हैं
हमें बाँटने को टुकड़ों में
हथौड़ा, कुदाल, हँसिया और सम्बल
प्रतीक नहीं हैं अमूर्त
असंख्य हाथों की ताकत हैं असीम
करोड़ों जिन्दा लोगों की धड़कने
खून पसीने से होती हैं तेज़
उनकी चमचमाती धारें ।

□□

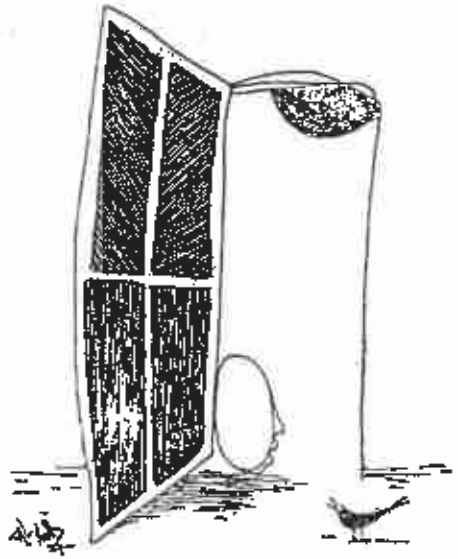

मैनेजर पाण्डेय का आलोचना कर्म : विविध दिशाएँ

— सियाराम शर्मा

बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में सोवियत समाजवाद के समक्ष उत्पन्न गंभीर संकट के साथ हिन्दी के मार्क्सवादी आलोचकों में भगदड़ और अफ़रातफ़री सी मच गयी । कुछ गहन निराशा के गर्त में डूब गये तो कुछ अपनी समस्त प्रतिबद्धताओं को त्याग कर रूपवादी और कलावादी खेमे की शरण में चले गये। कुछ तो एक सौ अस्सी डिग्री घूम कर मार्क्सवादी और समाजवादी विचारधारा के मुखर विरोधी बन गये। युवा आलोचकों का एक बड़ा हिस्सा उत्तर–आधुनिकतावादी चिंतन की गिरफ़्त में आ गया । बचे– खुचे लोग सत्ता की संस्कृति के साथ ताल–मेल बैठाने की जुगाड़ में लग गये । कुल मिलाकर नव साम्राज्यवाद की आक्रामकता और वृद्ध पूंजीवाद की बर्बरता के इस दौर में हिन्दी आलोचना में कलावाद एवं रूपवाद का एक नया उभार दिखा। एक नये विवेकहीन, विचारहीन सौन्दर्यशास्त्र रचने की कोशिश हुई। ऐसे संकटग्रस्त समय में व्यक्तिगत विपत्तियों की त्रासदी को झेलते हुए भी मैनेजर पाण्डेय हिन्दी के उन गिने–चुने मार्क्सवादी आलोचकों में हैं, जिन्होंने सोवियत संघ के समाजवादी प्रयोग की ग़लतियों और सीमाओं को पहचानते हुए मार्क्सवाद की विचारधारा और समाजवाद के स्वप्न के प्रति अपनी आस्था डिगने नहीं दी और न ही भारत के शोषित–उत्पीड़ित जनसमुदाय के संघर्ष के प्रति अपनी प्रतिबद्धता का परित्याग किया । बहुत ही मुस्तैदी के साथ उन्होंने उत्तर आधुनिकतावादी चिंतन की विचारहीनता और बौद्धिक–दिवालियेपन का पर्दाफ़ाश किया। नव साम्राज्यवाद की भूमंडलीकरण की नीतियों से उपजी सत्ता संस्कृति को 'लूट और झूठ' की संस्कृति के रूप में परिभाषित करते हुए उन्होंने जनप्रतिरोध की संस्कृति के हिरावल दस्ते का नेतृत्व किया।

आलोचना के केन्द्र में किसान जीवन का संघर्ष और सौन्दर्य

मैनेजर पाण्डेय का जन्म एक किसान परिवार में हुआ था। वे किसानों को भारतीय समाज के मेरुदण्ड तथा औपनिवेशिक व्यवस्था में सर्वाधिक शोषित, उत्पीड़ित वर्ग

DR S.P. Sharma

भोर के गीत

समीक्षा

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Distt.- Durg (C.G.)

इन्द्र बहादुर खरे का काव्य संसार

सियाराम शर्मा
दानवीर तुलाराम शा. स्ना. स्व. महावि., उतई,
जिला--दुर्ग (छत्तीसगढ़)

इन्द्र बहादुर खरे उत्तर छायावादी दौर के प्रतिभाशाली और उदीयमान कवि और गीतकार थे। कविता और गीतों के अलावे उन्होंने कहानियाँ, निबन्ध और आलोचना भी लिखी। गद्य लेखन के क्षेत्र में भी वे सक्रिय थे। उन्होंने राम कुमार वर्मा के साथ सामाजिक शिक्षा विभाग की पत्रिका 'प्रकाश' और पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी के साथ 'युगारंभ' का संपादन किया। उनकी काव्य प्रतिभा और साहित्यिक साधना का पूर्ण और स्वाभाविक विकास हो पाता, उससे पूर्व ही उनका असमय निधन हो गया। उनके मरणोपरांत 'विजन के फूल', भोर के गीत' (गीत संकलन), 'रजनी के पल' (गद्य काव्य), 'सपनों की नगरी'(कहानी संग्रह) और 'जीवन पथ के राही'(कहानी संग्रह), 'आचार्य राम चन्द्र शुक्ल विविध प्रसंगों में', 'काश्मीर 1948' आदि पुस्तकें प्रकाशित हुई।' भोर के गीत' खरे जी की कविताओं और गीतों का प्रतिनिधि संकलन है। छायावादोत्तर दौर में उनके काव्य व्यक्तित्व का निर्माण हुआ। वे उत्तरछायावादी दौर के कवि हैं। इस काल में उत्तरछायावादी तथा छायावादी काव्यों की भाषा, शिल्प और अंतर्वस्तु में काफी बदलाव आये थे पर खरे जी कविताओं पर छायाबादी भाषा, शिल्प और बोध का गहरा प्रभाव है।

प्रेम उनकी कविताओं और गीतों का केन्द्रीय भाव है। कवि प्राय: प्रेम के सपने और स्मृतियों में डूबा रहता है। उनके प्रेम के स्वप्न वास्तविकताओं से टकराकर टूटने के लिए अभिशप्त हैं। अत: उनकी स्मृतियों में दु:ख और पीड़ा का साम्राज्य है। प्रेम और विरह के अलावे कवि को जगत् के दूसरे दु:ख और पीड़ाएँ प्राय: प्रभवित नहीं करती। उनके कुछ गीतों में प्रिय के आगमन पर आह्लाद और उल्लास का चित्रण है पर अधिकांश गीतों से प्यार की करुण-मधुर स्मृतियाँ और दर्द की दबी-दबी सी टीस उभरती है। विरह कवि के जीवन का यथार्थ है। मिलन सिर्फ

स्वप्न में ही है। वेदना ही जीवन का सच है। उनके शब्दों में - ''उर में ज्वाला, दृग में सागर / कसक रही पीड़ा है'' -उनके गीतों की मुख्य अंतर्वस्तु है।

खरे जी के गीतों में संध्या और रात्रि के चित्रों की अधिकता है। रात हैं, तो रात के उर में सपने भी हैं। यहीं से उन्हें अँधेरे से बाहर आने का मार्ग मिलता है। उनके गीत जीवन के कठोर यथार्थ से उपजे सुन्दर स्वप्न हैं। उन्होंने खुद कहा है - ''राह में जब जब चला हूँ / सदा सपनों में पला हूँ''(इन्द्र बहादुर खरे/ 'भोर के गीत'/ वाणी प्रकाशन / संस्कार-2009)। लेकिन सपने हैं, तो उनका टूटना भी उतना ही सच है। कवि सपनों की एस मरीचिका से भी परिचित है - ''बना स्वप्न के महल रात भर, प्रात: ही ढहता है कोई'' (वही, पृ. 114)। सपनों का ढहना और टूटना कवि के प्राणों में गहरी विकलता और पीड़ा भरी छटपटाहट पैदा करती है। आकुलता और व्याकुलता उन्हें अक्सर घेरे रहती है। प्रेम की यातना ही उनके जीवन का सबसे बड़ा सच है। उन्होंने खुद स्वीकार किया है - ''यातना सहता निरन्तर'' अपने-आप से उन्होंने प्रश्न भी किया था - ''यातना के कमल में / बन्दी मधुप-से नयन मेरे ? खिल सकेंगे क्या कमल ? / उन्मुक्त होंगे विरह घेरे ?'' (वही, पृ. 79)

छायावादी कवियों की तरह इन्द्र बहादुर खरे को भी प्रकृति की विविध छबियाँ बेहद आकर्षित करती हैं। वे उसकी प्रत्येक गतिविधि और हलचल को अपनी कविताओं में प्रतिबिंबित करते हैं। दु:ख की घड़ी हो या सुख का क्षण हो वे प्रकृति के आईने में ही अपना अक्स देखते हैं। प्रकृति के विविध रूपों में संध्या और रात्रि के चित्र उनकी कविताओं में अधिक हैं। संध्या और रात्रि के चित्रों के साथ प्राय: उदासी लिपटी हुई है। रात्रि के नीरव शांति उन्हें विधवा के हृदय सी निस्तब्ध जान पड़ती है- ''निर्जन ! / बैठी है सूने पनघट के घट पर !/ नीरस, शांत आभा रजनी की / विधवा के निस्तब्ध हृदय सी'' (वही, पृ. 62)। कवि में मानवीय और प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति गहरा आकर्षण है। उन्होंने उसका सूक्ष्म पर्यवेक्षण और वर्णन किया है। सौन्दर्य चित्रण में एक ओर वे प्रकृति का मानवीकरण करते हैं तो दूसरी ओर मानवीय सौन्दर्य के चित्रण में प्राकृतिक उपादानों से भरपूर सहयोग लेते

ISSN 2349-4115

पुस्तिका -17

भारत का गहराता कृषि संकट और किसानों की आत्महत्याएँ

सियाराम शर्मा

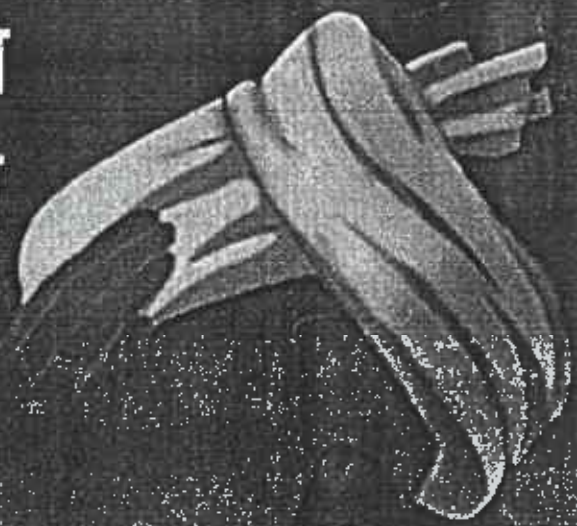

संपादक – विजय गुप्त
प्रगतिशील लेखक संघ, अम्बिकापुर (छ.ग.)

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam
Utai, Distt.- Durg

साम्य पुस्तिका - 17

भारत का गहराता कृषि संकट और किसानों की आत्महत्याएँ

*

सियाराम शर्मा

संपादन सहयोग :
वेदप्रकाश अग्रवाल
डॉ. रामकुमार मिश्र
डॉ. आशा शर्मा
राजेश मिश्र

संपादक :
विजय गुप्त

पक्षधर

2.6.21
PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

पहाड़

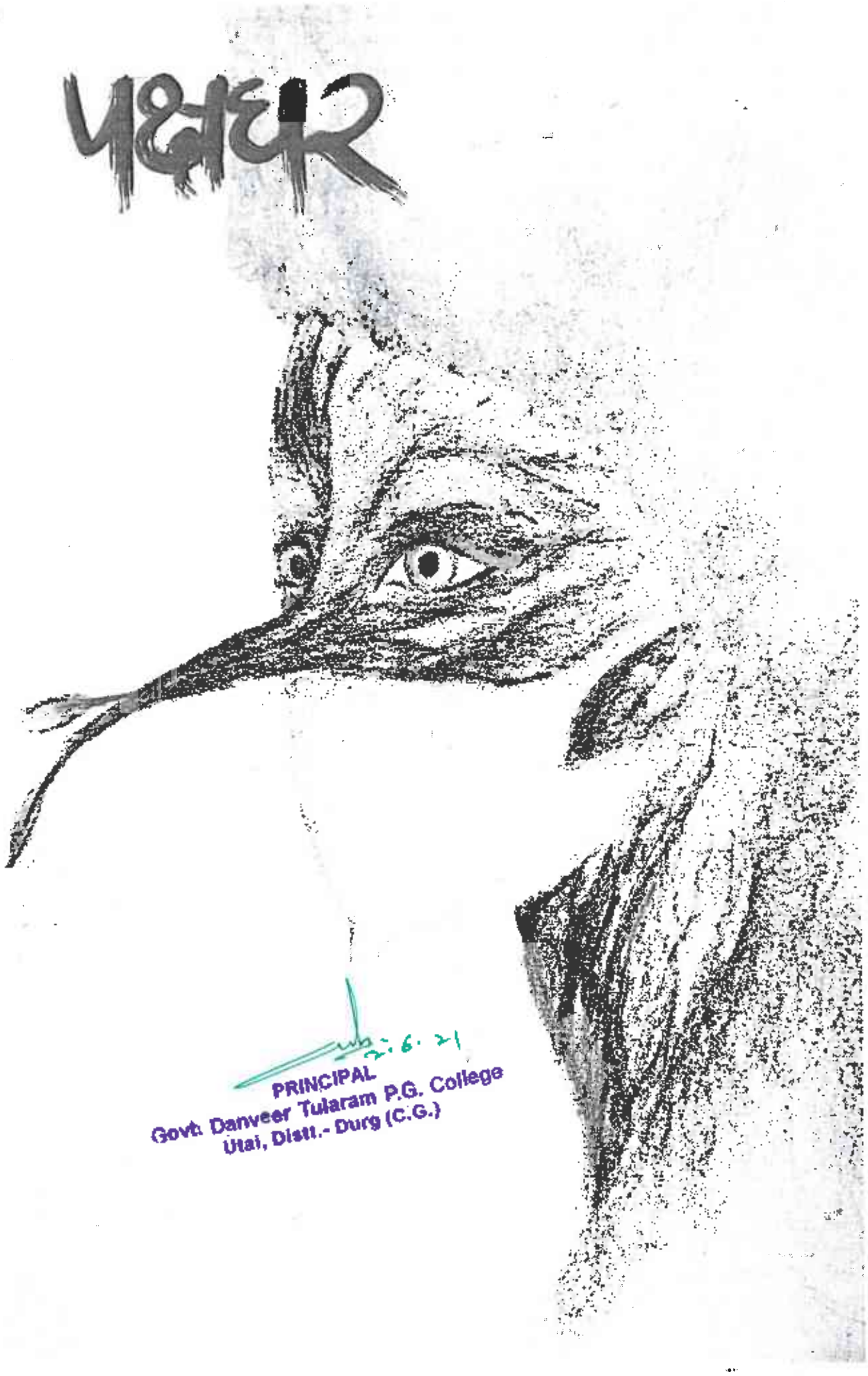

2.6.21
PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

भारत में बदलते भूमि सम्बन्ध

सियाराम शर्मा

भूमि मनुष्यों, जीव-जन्तुओं एवं वनस्पतियों के जीवन का आधार है। हम इस भूमि पर जन्म लेते हैं, इसी से पोषण ग्रहण करते हैं और अन्ततः इसी में घुल-मिल जाते हैं। हमारी सभ्यता, संस्कृति, श्रम और सौन्दर्य का सारा खेल इसी रंगभूमि पर खेला जाता है। युगों-युगों से मनुष्य ने इस भूमि की वन्दना की है, इसके महात्म्य का गुणगान किया है और इसके लिए अपना बलिदान भी दिया है। इस भूमि के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए हमारे प्राचीनतम् ग्रंथ 'ऋग्वेद' में कहा गया है "स्वर्ग मेरा पिता है, वातावरण रूपी भाई नाभि है और महान पृथ्वी मेरी माता है" ('द्यामं पिता जनिता नाभिरत्र बन्धुम् माता पृथिवी महीयम्'—ऋग्वेद 1.64.33)। 'अथर्ववेद' की ऋचाएँ भी कहती हैं कि "भूमि हमारी माता है और हम पृथ्वी के पुत्र हैं, उत्पादक हमारे पिता हैं और वे भी हमें संतुष्ट करें।" ("माता भूमिः पुत्रोअहं पृथिव्याः, पर्जन्यः पिता स उ नः पिपर्तु"—'अथर्ववेद'-12.1.12)।

भारत वर्ष में ही नहीं, विश्व की समस्त सभ्यताओं और संस्कृतियों में भूमि के प्रति यही लगाव और प्रेम देखा जाता है। लेकिन भूमि की सबसे बड़ी सीमा यही है कि इसका पुनरुत्पादन संभव नहीं है। इसकी मात्रा, भूगोल और निर्मिति का इतिहास पूर्व निर्धारित है। हम इसे बदल नहीं सकते। समय के साथ-साथ विश्व की जनसंख्या बढ़ती गयी, मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ती गयीं और इसी के साथ भूमि के प्रति उसकी भूख भी बढ़ती चली गयी। इसी के साथ शुरू हुआ भूमि की छीना-झपटी, लूट-पाट और संघर्ष का व्यापक सिलसिला। इसके लिए भाई-भाई में 'महाभारत' हुए, राज्यों के बीच युद्ध हुए और विश्व के बहुत बड़े हिस्से को उपनिवेश और गुलाम बनाया गया। प्रत्येक राज्य और राज्यों के बीच का इतिहास भूमि के लिए रक्तरंजित संघर्षों का इतिहास रहा है। फ्रांस के महानतम उपन्यासकार बाल्जाक ने कहा था—"जिसके पास भूमि है, उसके पास कलह भी है।"

भूमि पर सभी जीव-जन्तुओं, वनस्पतियों और मनुष्यों का समान हक है। पृथ्वी पर मनुष्य

समकालीन

पश्चिमी उत्तर प्रदेश
सांप्रदायिक प्रयोगशाला
बनाने की साजिश

अक्टूबर 2014 / रू. 20.00

नया छात्र आंदोलन

होक, होक, होक कलरव!
उठावो, उठावो, उठावो आवाज

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

कृषि में साम्राज्यवादी घुसपैठ

सियाराम शर्मा

ठण्डे यूरोपीय देशों की अपेक्षा उष्ण कटिबंधों वाले देश जैव विविधता की दृष्टि से ज्यादा महत्वपूर्ण हैं। वहां विभिन्न प्रजातियों की फसलें और वनस्पतियां मिलती हैं। इस समृद्ध जैव विविधता पर नियंत्रण तथा बहुफसली जमीनों के दोहन को ध्यान में रखकर ही यूरोपीय देशों ने अतीत में उन्हें अपना उपनिवेश बनाया और अपने उद्योगों के लिए कच्चे माल की आपूर्ति के स्रोत के रूप में उनका इस्तेमाल किया। आज बदली हुई परिस्थितियों में पूंजीनिवेश और पूंजी निर्यात के माध्यम से अमेरिकी और यूरोपीय बहुराष्ट्रीय कंपनियां पुनः इन देशों को नवउपनिवेश बनाकर उनकी जैव विविधता और संसाधनों की 'डाकेजनी' कर रही हैं। इन नव औपनिवेशिक और नव साम्राज्यवादी साजिशों को इस बार विश्व व्यापार समझौते के माध्यम से सफल बनाया जा रहा है। विश्व व्यापार संगठन, विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष इस नवसाम्राज्यवाद के कारगर हथियार हैं। इन्हीं संस्थाओं के दिशानिर्देशों पर विकासशील देशों की कठपुतली सरकारें साम्राज्यवादी हस्तक्षेप, शोषण और संसाधनों की लूट के लिए अपने देश में अनुकूल वातावरण बनाती हैं तथा अपनी जनता के विरुद्ध जन विरोधी फैसले लेती हैं। इन देशों के कॉरपोरेट घरानों, बिके हुए राजनीतिज्ञों, चापलूस नौकरशाहों, मानसिक रूप से गुलाम बुद्धिजीवियों तथा बड़े मीडिया प्रतिष्ठानों का अपनी जनता के विरुद्ध इस नव साम्राज्यवाद से अपवित्र समझौता है। ये सभी स्वार्थी तत्व इस साम्राज्यवादी लूट में तरह-तरह से हिस्सा बंटाते हैं।

कृषि के क्षेत्र में साम्राज्यवादी हस्तक्षेप का परिणाम ही है कि आज उसे हमारी स्थानीय और राष्ट्रीय जरूरतों के अनुरूप नियोजित नहीं किया जा रहा है। इसे बहुराष्ट्रीय कंपनियों के मुनाफा कमाने का हथकंडा बना दिया गया है। आज अमेरिका में जिस प्रकार 02 प्रतिशत बड़े फार्म वहां के 50 प्रतिशत कृषि उत्पादों को पैदा कर रहे हैं, उसी तरह के कॉरपोरेट फार्मिंग की तरफ हमारे देश को धकेला जा रहा है। साम्राज्यवादी हस्तक्षेप के कारण "कृषि अब समाज और राष्ट्रों की मौलिक संस्था से कमतर रह गयी है और अधिकाधिक यह निगमों द्वारा दुनिया भर में सावन जुटाने वाली नीतियों का एक सूक्ष्म घटक बन गयी है। यह अब खाद्य पदार्थों के जरिये मुनाफाखोरी के विश्वव्यापी तंत्र को स्थायित्व प्रदान करती है- एक ऐसा तंत्र जिसमें अनाज खेत से थाली तक औसतन 2000 मील का रास्ता तय करके पहुंचता है। इससे भी आगे वैश्विक उत्पादन और उपभोग संबंधों को एक साथ मिलाने की कॉरपोरेट रणनीति, दक्षिण और उत्तर दोनों जगह राष्ट्रीय कृषि क्षेत्र के राष्ट्रीय संस्थागत आधार को कमजोर कर रही है।"[1]

नव साम्राज्यवाद की नेतृत्वकारी शक्ति अमेरिका जब वियतनाम युद्ध के कारण आर्थिक संकट के दौर से गुजर रहा था, तब उसने 'ग्रीन पावर' निर्यात की रणनीति अपनायी। एक तरफ उसने अपने अतिशेष अनाज को तीसरी दुनिया के देशों में निर्यात कर भू-राजनीतिक वर्चस्व को कायम किया तो दूसरी ओर 'हरित क्रांति' के तकनीक के निर्यात से भारी मुनाफा कमाया। आज की तथाकथित 'दूसरी हरित क्रांति' उसी साम्राज्यवादी विस्तार की आकांक्षा का फलीभूत व्यावहारिक रूप है। सदियों से हमारे किसान प्रकृति और पर्यावरण के अनुकूल बीजों को बचाकर रखते और उसका उपयोग करते रहे हैं। पर अमेरिकी साम्राज्यवाद के दिशा निर्देशन में चलाये जा रहे इस दूसरी हरित क्रांति के दौर में 'हरित क्रांति से सदा हरित क्रांति की ओर' नारा देकर, बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा उत्पादित जी.एम. बीजों को बढ़ावा देकर हमारे किसानों की बीज आत्मनिर्भरता, जैव विविधता, मानवीय स्वास्थ्य एवं प्रकृति और पर्यावरण के खिलाफ साजिश की जा रही है। यह अदृश्य और अपरोक्ष रूप से हमारी कृषि और खाद्य को नियंत्रित करने की साम्राज्यवादी कोशिश है, जो किसानों की बीज सम्प्रभुता को समाप्त कर उन्हें बहुराष्ट्रीय कंपनियों की गुलामी की ओर धकेल देगा।

आज बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने कृषि के क्षेत्र में उत्पादन से लेकर व्यापार तक को अपने कब्जे में ले लिया है। कृषि में साम्राज्यवादी पूंजी की घुसपैठ बढ़ती जा रही है। बीज, खाद और कीटनाशकों के क्षेत्र में पूरी तरह से साम्राज्यवादी पूंजी का प्रभुत्व है। सरकार द्वारा प्रस्तावित ठेके की खेती में भी यही कंपनियां बढ़-चढ़ कर हिस्सा ले रही हैं। भारत-अमेरिका ज्ञान उपक्रम ने बौद्धिक क्षेत्र में इनकी घुसपैठ को हरी झंडी दे दी है। इस तरह बीज, खाद, कीटनाशकों, व्यापार और शोध आदि के क्षेत्र में विदेशी पूंजी के बढ़ते प्रभुत्व ने भारतीय कृषि को एक नव औपनिवेशिक आयाम दे दिया है।

आर्थिक नव उपनिवेश के दौर में जैव तकनीक, अनुवांशिक अभियांत्रिकी तथा ज्ञान-विज्ञान को संहिताबद्ध करने वाले बौद्धिक संपदा अधिकार और विश्व व्यापार समझौते के प्रावधानों के माध्यम से एक ऐसे परिदृश्य की रचना कर दी गई है कि हमारे मेहनतकश किसान देशी-विदेशी इजारेदार पूंजी के उजरती गुलाम बन गये हैं। गुलामी की इस प्रक्रिया को नरसिंह दयाल ने अनुवांशिक और जीन साम्राज्यवाद का नाम देते हुए कहा है कि- 'अब ये जल, जमीन और जंगल के बाद जीन के निजीकरण के लिए आमादा हैं। 'हरित क्रांति 2' वस्तुतः अनुवांशिक या जीन साम्राज्यवाद है। यह नव साम्राज्यवाद के अनेक रूपों में सर्वाधिक भयानक और विनीना रूप है जो तीसरी दुनिया के जीन संपदा और कृषि प्रणाली को निगमीकृत कर रहा है। जीन टेक्नोलॉजी, बॉयोटेक्नोलॉजी और इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी के आकर्षक घोड़ों पर सवार और एक परोपकारी शुभचिंतक का मुखौटा ओढ़े यह इस सदी का नवीनतम, क्रूरतम, अतिसूक्ष्म, अदृश्य, कुटिल, विनीना और हिंसक साम्राज्यवाद है। इस बार इसके हाथों में आणविक अस्त्र-शस्त्रों के साथ जी.एम. बीजों का ब्रह्मास्त्र भी है जो पूरी धरती को बंजर बना देगा, पर्यावरण और जैव विविधता का विनाश कर देगा और इस धरती पर जीवन का अस्तित्व ही मिटा देगा।"[2]

संदर्भ :

1. फिलिप मैकमाइकल/ 'विश्व खाद्य राजनीति'/ विश्व खाद्य संकट/ पृ. 33
2. नरसिंह दयाल/ भारतीय कृषि की दशा और दिशा/ 'कथादेश'/मई-2012/ पृ. 67

ओएनजीसी
ONGC

ओएनजीसी-57 वर्षों का सफ़र

मुट्ठी में लिये
चलते गये हम, बढ़ते गये हम

से मोती लेकर, धरा को अपना मानकर
चलते गये हम, बढ़ते गये हम

छू रहे हैं आसमान की बुलंदियाँ आज,
आगे भी छूते रहेंगे हम, बढ़ते रहेंगे हम

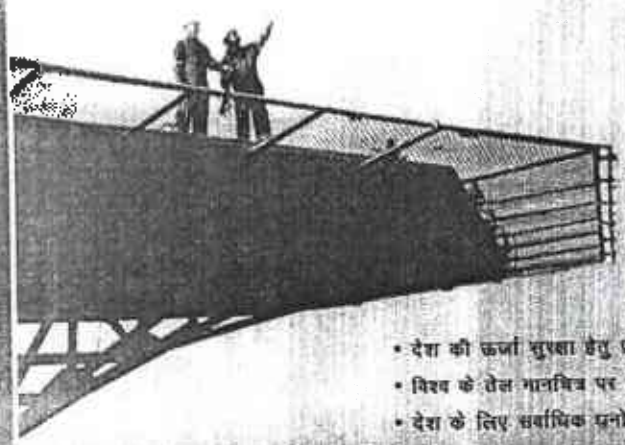

- देश की ऊर्जा सुरक्षा हेतु प्रतिबद्ध
- विश्व के तेल मानचित्र पर भारत की देदीप्यमान उपस्थिति
- देश के लिए सर्वाधिक धनोपार्जन

www.ongcindia.com

अकार

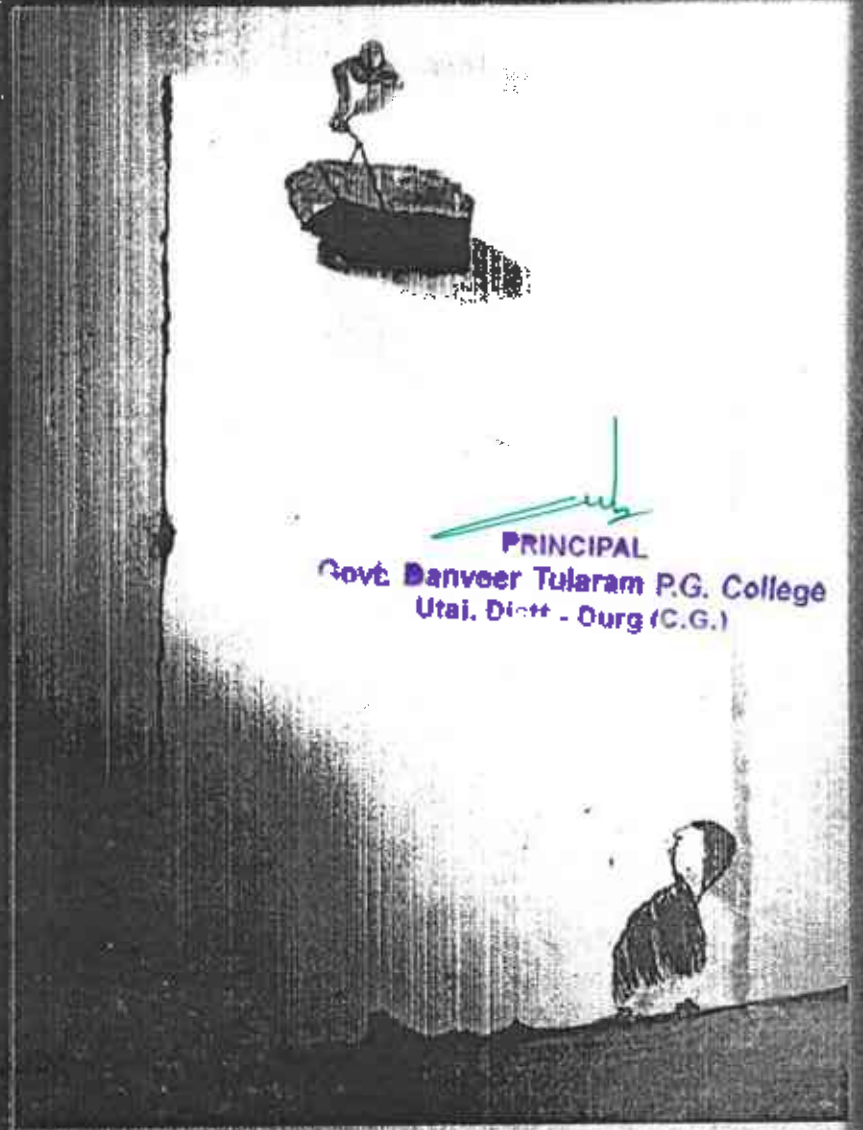

PRINCIPAL
Govt. Banveer Tularam P.G. College
Utai, Distt. - Durg (C.G.)

और दूसरों की रचनाओं के माध्यम से खुद आने की बजाय उसके आने का इंतजार करते हैं । वे समझते हैं कि उनका काम तो लिखना है । बाकी काम दूसरों का है । जैसे ये कोई एक्शन फिल्म हो कि मुख्य किरदार तो वे निभाएँगे बाकी जोखिम वाले दृश्य डुप्लीकेट करेंगे । जो लेखक पाठक के पास जाते भी हैं उनके पास ही रचनाओं का जखीरा होता है । विशेष अवसरों पर प्रियजनों को भेंट में दी जाने वाली किताबों से इस विकट स्थिति की भरपायी नहीं होने वाली है । यह अत्यन्त दुखद है कि इस समाज में पिछले कई दशकों से कोई ऐसी किताब की चर्चा नहीं छिड़ी जिसे न पढ़ने का मलाल समाज को साल रहा हो । जिस समाज में भाषा और साहित्य के प्रति इतने होनहर संस्कार हो, उस समाज में एक बड़ा रचनात्मक विस्फोट कैसे होगा?

रसूल हमजातोव ने युवा लेखकों को सीख देते हुए कभी लिखा था - 'यह मत कहो - मुझे विषय दो, यह कहो-मुझे आँखें दो।' यह केवल युवा लेखकों को सीख नहीं है । हर दौर के लेखकों को सीख है । हम अपने दृष्टि-पथ का विस्तार करें और जिस समाज में रहते हैं केवल उसके ही दुख, उत्सव, उदासी और अंतर्विरोधों को न देखें । हम भी जाएँ, जहाँ हो सकता है कि हमारा इंतजार हो रहा हो । इसके लिए यदि अंदाज और तरीका बदलना पड़े तो भी अफसोस न हो । बहुत हुई वैश्विक साहित्य से जोर-आजमाईश । बहुत हुई कला की चिन्ता और एक खूबसूरत वाक्य गढ़ने की जद्दोजहद । यह सब करके तो देख ही लिया । अब जरा दूसरे रास्तों को भी खँगालें। इसका अर्थ यह नहीं है कि मैं मौजूदा रचनाशीलता को अपर्याप्त मानकर यह सब कह रहा हूँ । मैं लेखक के रचनात्मक उपकरण को अब भी उतना कमजोर नहीं मानता हूँ जितना कि कहा और प्रचारित किया जाता रहा है । जरूरत उसके प्रति गंभीर बनने की सामूहिक कोशिशों की है । एक बड़ी रचना सामूहिकता का ही समंजित रूप है । प्रतिभा का इंतजार करने वाले लोग अब भी मुगालते में हैं ।
(संगमन 19, चंदेरी में पढ़ा गया आलेख।)

परिचय :- 1972 में जन्मे बसंत त्रिपाठी के तीन कविता संग्रह और एक आलोचना की पुस्तक प्रकाशित है । कुछ कहानियाँ भी पत्रिकाओं में आयी हैं । बसंत त्रिपाठी की पहचान एक गम्भीर और विचारपरक रचनाकार की है ।

सम्पर्क :-
बसंत त्रिपाठी
62, वैभव नगर, दिघोरी,
अमरेड रोड, नागपुर - 440034
मो. - 09850313062
ई मेल-basantgtripathi@gmail.com

सियाराम शर्मा

जैव तकनीक और जी.एम. फसलें

जैव तकनीक प्रकृति को जानने, समझने और बदलने का एक भरोसेमन्द तरीका है। यह कोई एक तकनीक न होकर कई तकनीकों का समुच्चय है। जैव रसायन, कोशिका विज्ञान, अनुवांशिकी और जैव विज्ञान के सम्मिलित प्रयासों से इस तकनीक को विकसित किया गया है। इसके अन्तर्गत किसी वनस्पति या जीव के अनुवांशिक गुणों को दूसरे के भीतर प्रतिरोपित किया जाता है। ऐसा जीन बन्दूक के माध्यम से एक का जीन दूसरे की कोशिका में डाल कर किया जाता है या जीन को किसी बैक्टीरिया में प्रतिरोपित कर दूसरी कोशिका को उससे संक्रमित करकर वांछित परिणाम पाये जाते हैं। आलू के जीन को टमाटर में, मछली के जीन को सोयाबीन में या मनुष्य के जीन को सुअर में प्रतिरोपित किया जा सकता है। यह तकनीक इस धारणा को प्रमाणित करता है कि मानवीय आदेश और कार्य योजना के अनुसार किसी वनस्पति या जीव की आन्तरिक संरचना में बाह्य प्रयासों से परिवर्तन लाया जा सकता है। सबसे पहले कोहेन और बायर ने 1970 में अपने प्रयोगों से इसे संभव कर दिखाया था।

इस जैव तकनीक के माध्यम से वनीला और कोक जैसे कुछ उत्पादों को फैक्ट्री में भी उत्पादित किया जा सकता है या जानवरों के माध्यम से खास तरह की दवाईयाँ विकसित की जा सकती हैं। इस तकनीक के माध्यम से 'जानवरों का इस तरह से जीन परिवर्तित कर दिया जायेगा कि उससे मनचाहा रसायन तैयार किया जा सके और फिर उसे विभिन्न बीमारियों के इलाज के लिए बेचा जायेगा। ट्रांसजेनिक पशुओं की एक आंशिक सूची मौजूद है, जिनसे मनचाही दवा या दवा के काम आने वाले घटकों का सफलतापूर्वक उत्पादन किया गया है। इस सूची में शामिल हैं - सुअर, जिससे मानव हीमोग्लोबिन बनाया गया। भेड़, जिससे एमिनोएसिड बनाया गया है, जो कुछ लोगों में नहीं पाया जाता । खरगोश से एक ऐसा एन्जाइम बनाया गया है जो एक अनुवांशिक रोग पोम्प डिजीज से ग्रस्त लोगों में नहीं पाया जाता।''[01]

वनाक्ष उवन

PRINCIPAL 2.6.24
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

अमरबेल

कितना कद्दावर है बबूल

झेले कितने झंझावात
तुषाराघात
कितने अकाल-दुकाल
जल के पीछे-पीछे पहुँची
जड़ जिसकी पाताल

लेकिन सब फिजूल

अरे वह परआश्रयी निर्मूल
गंध नहीं पर्ण नहीं, ना ही फल और फूल
फिर भी शिखरस्थ
इतराती है
रस निचोड़ इसका
अमर हुई जाती है

विश्व व्यापार संगठन और भारतीय कृषि

उरूग्वे के पुन्टा डेल स्टेट में 1986 में शुरू हुए व्यापार वार्ताओं के चक्र का अंतिम दौर मोरक्को के शहर माराकेश में 1994 तक चला। इन वार्ताओं के बाद 1994 से विश्व व्यापार समझौता कृषि क्षेत्र में लागू हुआ। यह समझौता कृषि क्षेत्र में निवेश और व्यापार के नियमों को वैश्विक स्तर पर संस्थाबद्ध किये जाने का प्रयास था। इसका मुख्य उद्देश्य कृषि क्षेत्र को सरकारी नियंत्रण से मुक्त कर उत्पाद एवं व्यापार को निजी मालिकाने की ओर ले जाना था। यह सिर्फ व्यापार समझौता न होकर राष्ट्रों की सीमाओं से परे साम्राज्यवादी राजनीति और अर्थनीति के विस्तार का व्यावहारिक रूप भी था। बहुराष्ट्रीय निगमों के माध्यम से पिछड़े एवं विकासशील राष्ट्रों के बाजारों पर कब्जा करने और प्रभुत्व जमाने का यह कारगर हथियार था। विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष जैसी संस्थाओं ने विकसित राष्ट्रों के एजेन्ट के रूप में उनके छिपे हुए एजेन्डों को लागू करने के लिए राष्ट्रीय सरकारों पर दबाव बनाने का कार्य किया। इस समझौते ने राष्ट्रीय सरकारों की स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमताओं को कमजोर कर उसे नव साम्राज्यवादी शक्तियों के हाथों की कठपुतली बना दिया।

कृषि क्षेत्र में विश्व व्यापार की शुरुआत इन तर्कों के साथ हुई कि अक्षम प्रतियोगियों की आर्थिक सहायता बंद कर दी जायेगी। सरकारों द्वारा नियंत्रित सुरक्षित अन्न भंडारों को समाप्त कर दिया जायेगा तथा सीमा शुल्क हटा लिया जायेगा। इससे विश्व व्यापार उस दिशा की ओर मुड़ जायेगा, जहाँ माँग अधिक होगी। किसानों को विनियमित बाजारों से लाभ होगा और उनके उत्पादों का बेहतर मूल्य मिलेगा। बाजार की स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के कारण उपभोक्ताओं को भी सस्ते मूल्य पर खाद्य सामग्रियाँ प्राप्त होंगी। विकासशील देशों को यह भी विश्वास दिलाया गया कि विकसित राष्ट्र कृषि पर दी जाने वाली सहायता को नियंत्रित करेंगे, जिससे विकासशील देशों के कृषि उत्पादों को विकसित राष्ट्रों के बाजारों में प्रवेश मिलेगा। लेकिन वास्तविकता यह है कि विकसित देशों ने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तरीके से अपने किसानों को आर्थिक सहायता जारी रखी तथा विश्व व्यापार में बहुराष्ट्रीय निगमों को उतार कर समान प्रतियोगिता के सिद्धांत को तिलांजली दे दी। अमीर देशों ने विकासशील देशों को अपना बाजार उपलब्ध कराने की जगह उनके बाजारों पर कब्जा कर लिया।

कृषि क्षेत्र में विश्व व्यापार के लाभों का जो सब्जबाग दिखाया गया उससे हमारे देश का बौद्धिक वर्ग भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका। सी.एच. हनुमंत राव और अशोक गुलाटी जैसे अर्थशास्त्री ने ई.पी.डब्ल्यू (31 दिसम्बर 1994) में लेख लिखकर भारतीय कृषि को विश्व व्यापार से एकीकृत किये जाने की जोरदार वकालत की। उनका तर्क था कि खाद्य आत्मनिर्भरता के दायरे में कृषि का विकास ठहरावग्रस्त है। अतः हमें डेयरी उत्पादों तथा निर्यात योग्य फलों, फूलों और सब्जियों के उत्पादन और खाद्य प्रसंस्करण की तरफ विशेष ध्यान देना चाहिए। इससे कृषि व्यापार को लाभ पहुँचेगा और इसका फायदा रिस-रिस कर समाज के निचले तबकों तक पहुँचेगा। जाहिर है इन अर्थशास्त्रियों के विचार शासक वर्ग के विचारों से मेल खाते थे। अतः हमारी सरकारें इसी मार्ग पर चलीं।

सियाराम शर्मा
7/35, इस्पात नगर, रिसाली, भिलाई नगर, जिला-दुर्ग (छत्तीसगढ़) पिन कोड- 490006
मो. : 9329511024 e-mail - prof.siyaramsharma@gmail.com

चौपाल

जनवरी-जून 2020

PRINCI...
Govt. Danvee Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

सृष्टि में केदारनाथ सिंह

Scanned with CamScanner

एक छतनार वृक्ष की छाया में

जे.एन.यू. में प्रवेश लेने के पूर्व पटना में पढ़ते हुए केदार जी का नाम तो सुना था पर प्रत्यक्ष देखा नहीं था। उस समय पटना कॉलेज के सामने पी.पी.एच. की दुकान और अशोक राजपथ के अंतिम छोर पर स्थित राजकमल प्रकाशन हमें ऐसे आकर्षित करता था जैसे मधुमक्खियों को शहद के छत्ते। उन दिनों राजकमल प्रकाशन में नई आई पेपरबैक्स संस्करण की किताबें हमें ज्यादा आकर्षित करती थीं, क्योंकि उनकी कीमतें अपनी जेबों के अनुरूप होती थीं। उन्हीं पुस्तकों के बीच सूरज की तरह उजास फैलाती, हरसिंगार के फूलों की तरह झरती, बिखरती केदार जी की पारदर्शी हँसी वाली श्वेत श्याम चित्र से युक्त आवरण पृष्ठ ने मुझे बेहद आकर्षित किया था। उस हँसी की चमक आज भी मेरे दिल-दिमाग पर कायम है। उस खिलती हुई निर्मल हँसी के जल में उनके अकुंठ, निर्विकार, स्नेहिल व्यक्तित्व का तत्त्व स्पष्ट दिखाई देता था। उनके चित्र का यह प्रथम प्रभाव भविष्य में भी उनसे मिलकर, जुड़कर और भी गाढ़ा और गहरा हुआ। उनके व्यक्तित्व में गजब की सादगी और कोमलता थी। उनके चेहरे का तेज और चमक हमें आलोकित करता था। मैंने 1986 में जे.एन.यू. में एम.फिल. में प्रवेश लिया था। भारतीय भाषा केंद्र उन दिनों डाउन कैम्पस में ही था। लाइब्रेरी भी वहीं थी। हमारी कक्षाएँ हमारे शिक्षकों के चेम्बर में ही लगती थीं क्योंकि हर बैच के छात्र-छात्राओं की संख्या 10 से 15 के बीच हुआ करती थी। भारतीय भाषा केंद्र के मुख्य दरवाजे से प्रवेश करने के बाद गलियारे के एक तरफ नामवर जी का कक्ष था और दूसरी तरफ केदार जी का। नामवर जी के कक्ष के ठीक सामने कार्यालय था। केदार जी हमें 'तुलनात्मक साहित्य' पढ़ाते थे। उनके अध्यापन से पहली बार हिंदी साहित्य के दायरे से बाहर निकलकर हमारे साहित्यिक ज्ञान को अखिल भारतीय एवं वैश्विक परिप्रेक्ष्य मिला। एक तरफ कबीर, तुलसी, गालिब, रवीन्द्रनाथ, जीवनानंद दास, नजरुल, सुकांत, के. सच्चिदानंदन, दिलीप चित्रे, नामदेव ढसाल, सीताकांत महापात्र से हमारा परिचय हुआ तो दूसरी तरफ हमने एजरा पाउण्ड, बॉदलेयर, ब्रेख्त, नेरूदा, रिल्के, पॉल एलुआर की वैश्विक कविता की दुनिया में प्रवेश किया। एक बार उनके साथ पैदल चलते हुए मैंने यों ही उस समय 'वर्तमान साहित्य' में अनूदित अर्नेस्तो कार्नेदाल की एक कविता 'मर्लिन मनरो के लिए प्रार्थना' का जिक्र किया तो उन्होंने बहुत विस्तार के साथ अर्नेस्तो कार्नेदाल के बारे में बताया।

कक्षा में पढ़ाते हुए वे धारा प्रवाह व्याख्यान देते थे। उनके सामने कोई चिट या प्वाइंट नहीं होते थे। नामवर जी की स्मृति, उनके ज्ञान की गहराई, उनका विराट अध्ययन हमें चमत्कृत करता था पर केदार जी के व्याख्यान में एक चुम्बकीय आकर्षण होता था। वे हमें अपने साथ बाँधे रखते थे। उनकी आवाज़ की खनक, बोलते हुए उनके दोनों हाथों का संचालन, उनकी रचनात्मकता और मौलिकता हमें आविष्ट और आकृष्ट करता था। उनके अध्यापन के दौरान कबीर और रवीन्द्रनाथ का अक्सर जिक्र आता था। वे थोड़े मूडी भी थे। एक दिन मौसम बहुत अच्छा था। खिड़कियों के बाहर हल्की-हल्की बारिश हो रही थी। हम सब विद्यार्थियों के अपने कक्ष में प्रवेश करते ही उन्होंने कहा, 'आज अनध्याय का मौसम है'। तुम लोग मौसम का आनंद लो'। इसी तरह एक दिन किसी समस्या को लेकर विद्यार्थियों ने हड़ताल की थी। लेकिन हमलोग कक्षाओं के लिए उनके कमरे में पहुँच चुके थे। उन्होंने हम सबसे कहा, 'तुम लोगों को अपने साथियों का साथ देना चाहिए' और कक्षा मुल्तवी कर दी। हम सभी जानते थे कि अपने शुरुआती दिनों में उन्होंने सुंदर गीत लिखे थे। गीत को लेकर एक दिन कक्षा में उन्होंने कहा था कि 'गीत में पहली पंक्ति की भूमिका तानाशाह की होती है। संपूर्ण गीत एक तरह से उसी का

Scanned with CamScanner

R.N.I 30993/76
ISSN : 2456-1924

YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

जहाँ तक हिंदी की समृद्धि का सवाल है, वह राजभाषा होने के बावजूद सम्पूर्ण भारत में एक आधुनिक राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकृत हो चली है और कहना न होगा कि यह राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का वरदान ही नहीं बल्कि लोक योगदान है। वस्तुतः यह 'हिन्द स्वराज' के रचनाकार की ऐतिहासिक देन है।

इन थोड़े से शब्दों के साथ मैं राष्ट्रीय संस्कृति / संस्कृति संस्थान के सामान्य साथियों के प्रति अपना हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ।
'कवि' के शब्दों में
कोई अलग न कहूँ अलगाव।
सलाम रहे, हद आये कल्याण।

नामवर सिंह

साहित्य अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्, बाणगंगा, भोपाल (म.प्र.)

साक्षात्कार

अंक : 472-473, अप्रैल-मई 2019

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

नामवर सिंह

(28 जुलाई 1926 - 19 फरवरी 2019)

सियाराम शर्मा

नामवर सिंह की आलोचना दृष्टि

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी की परम्परा में राम विलास शर्मा के बाद नामवर सिंह हिन्दी आलोचना के शिखर व्यक्तित्व हैं। लगभग छः दशकों तक उन्होंने अपनी सृजनात्मक और वाचिक आलोचना के माध्यम से हिन्दी समाज के रचनात्मक सौन्दर्यबोध के विकास में अपना अप्रतिम योग दिया। रचनाकारों की कई पीढ़ियों को उन्होंने संस्कारित किया। उनमें साहित्यिक आस्वाद की गजब की क्षमता है। रचना के दबे-छुपे अर्थ को उद्घाटित करने और उसकी अन्तर्ध्वनियों और अनुगूँजों को पहचानने की उनकी क्षमता हमें चकित करती है। एक मार्क्सवादी आलोचक होने के बावजूद उनका वैचारिक खुलापन और चौकन्नापन उनकी आलोचना को व्यापकता प्रदान करता है। उन्होंने हिन्दी आलोचना को आधुनिक विचारों से सम्पन्न किया और उसे एक वैश्विक परिप्रेक्ष्य दिया। उनकी आलोचना संवादधर्मी आलोचना है। अपने पूर्ववर्तियों, समकालीनों से बहस करते, टकराते और संघर्ष करते हुए उन्होंने अपनी आलोचना दृष्टि का विकास किया।

नामवर सिंह ने भारतीय काव्यशास्त्र, मार्क्सवादी चिन्तन, मार्क्सवादी सौन्दर्यशास्त्र की लम्बी परम्परा के साथ अमेरिकी 'न्यू क्रिटिसिज्म' तथा एफ.आर.लीविस के विचारों को आत्मसात् करते हुए भारतीय समाज, समय, सन्दर्भ के अनुरूप अपनी आलोचना दृष्टि का विकास किया। उनके अध्ययन का दायरा बहुत विस्तृत है। भारतीय परम्परा में वेद, उपनिषद्, महाभारत और भास, कालिदास, अश्वघोष, भवभूति के साहित्य तथा अभिनवगुप्त, आनन्दवर्धन, राजशेखर के काव्यशास्त्रीय चिन्तन से वे भली भाँति परिचित थे। मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन के अलावा आर्ब सुकाच, अन्तोनियो ग्राम्शी, वाल्टर बेंजामिन, रेमण्ड विलियम्स के महत्वपूर्ण विचारों को उन्होंने आत्मसात् किया था, जिसने इतिहास परम्परा और समाज की उनमें गहरी समझ पैदा की थी। एक मार्क्सवादी आलोचक के रूप में ख्याति होने के बावजूद उन पर गैरमार्क्सवादी एफ.आर. लीविस और अमेरिकी 'नयी समीक्षा' का गहरा प्रभाव था। भारत के विविध भाषाओं के साहित्य के साथ ही रूसी, यूरोपीय, लैटिन अमेरिकी और अफ्रीकी साहित्य में भी उनकी गहरी पैठ थी। इन सबको उन्होंने सिर्फ पढ़ा ही नहीं था, उस पर सोचा, परखा और आत्मसात् किया था। जीवन के व्यापक अनुभवों, युवावाती दौर के कठिन संघर्षों के साथ विकसित हुई रचनात्मक संवेदनशीलता के साथ ज्ञान के इस सान्द्र रसायन ने मिलकर एक ऐसे आलोचकीय व्यक्तित्व का निर्माण किया जो अपने विश्वकोशीय ज्ञान से आतंकित करने के बजाय साहित्य की महत्ता, विलक्षणता और सुन्दरता के प्रति राग उत्पन्न करता है। मुक्तिबोध द्वारा प्रस्तावित पद 'ज्ञानात्मक संवेदना और संवेदनात्मक ज्ञान' उनके व्यक्तित्व में मूर्त होता हुआ दिखायी पड़ता है।

नामवर सिंह अपनी आलोचना में साहित्य की साहित्यिकता को सुरक्षित रखते हुए, उसके भीतर से

उभरते हुए युग सत्य की पहचान करते हैं। साहित्येतर सत्य को रचना पर लादने की अपेक्षा उसके भीतर की संरचना से उभरते हुए युग सत्य पर उनका ज्यादा भरोसा है। वे साहित्यिक आस्वाद, रचनागत सौन्दर्य का उद्घाटन तथा नये अर्थ की तलाश को अपनी आलोचना का प्रस्थान बिन्दु बनाते हैं। उनकी आलोचना साहित्य की सामाजिकता को पहचानने वाली सृजनात्मक आलोचना है। उन्होंने बने-बनाये सिद्धान्तों से रचना को जाँचने की अपेक्षा उससे टकराने के क्रम में अपने आलोचनात्मक औजारों को विकसित किया। उनमें बौद्धिक जड़ता, कट्टरता और कठमुल्लापन की जगह लचीलापन है। इसीलिए वे निरन्तर अपने आपको संशोधित और परिमार्जित करते चलते हैं।

अक्सर देखते हुए बहुत सारी चीजें आँखों से ओझल हो जाती हैं। प्रायः जो ऊपर-ऊपर दिखता है, सच नहीं होता। यथार्थ की कई तहें और परतें होती हैं। कभी-कभी उस पर पर्दा भी पड़ा रहता है। कुछ लोगों की दृष्टि बहुत पैनी और धारदार होती है। वे कई तहों और परतों को भेदकर यथार्थ के तार-तार और रेशे-रेशे को देख पाते हैं। ऐसी तीक्ष्ण, पारदर्शी और तलस्पर्शी दृष्टि रचना और आलोचना दोनों के लिए महत्वपूर्ण है। देखने में देखने का स्थान और कोण बहुत निर्णायक होता है। देखने के स्थान और कोण बदलने से दृश्य भी बदल जाते हैं। अतः देखने में दृष्टिकोण की बड़ी भूमिका है। कहाँ खड़े होकर, किस जगह से हम चीजों को देख रहे हैं, इसका महत्व है। रचना और आलोचना का सारा वैभव और सौन्दर्य वस्तुतः इस देखने और दिखाने की क्षमता पर आश्रित है। नामवर सिंह की आलोचना में दूसरों के लिए अदृश्य, अव्यक्त और अश्रव्य को देख और सुन पाने की अद्भुत क्षमता ही उसे सुखद, सुन्दर और आकर्षक बनाती है।

नामवर सिंह रचना और आलोचना में खालिस विचार से ज्यादा महत्व इन्द्रियबोध, सौन्दर्यबोध और भावबोध को देते हैं। हाँ, जब विचार लेखक की दृष्टि में समाहित हो जाए और वह उसकी विश्वदृष्टि का हिस्सा बन जाए तो अवश्य ही रचना और आलोचना दोनों के लिए फलदायी होगा। वे रचना में विचार को नमक की तरह घुला-मिला हुआ देखना चाहते हैं। रचना में विचार के विज्ञापन और प्रदर्शन की जगह उसके भीतर से उभरते विचार पर उन्हें ज्यादा भरोसा है। वे रचना में माला के भीतर पिरोये गये धागे के रूप में विचार की भूमिका को देखते हैं जो रचना को एकसूत्रता और संगति तो प्रदान करता है पर उसके सौन्दर्य को विनष्ट नहीं करता। विचार अगर लेखक की दृष्टि में शामिल न हो तो ऐसे विचार और विचारधारा उनके लिए महत्वहीन है। उन्होंने साफ-साफ कहा है-"विचार पुराने पड़ जाते हैं, युग के अनुसार संशोधित हो जाते हैं, लेकिन इन्द्रियबोध सबसे टिकाऊ होता है.... ।...इसलिए साहित्य केवल इन्द्रियबोध है।.... विचारधारा के बिना भी साहित्य श्रेष्ठ बन सकता है और विचारधारा के साथ भी"। (नामवर सिंह/'आलोचना और विचारधारा'/सं.-आशीष त्रिपाठी/राजकमल प्रकाशन, दिल्ली/पहला संस्करण-2012,/पृ.19,21 .)

आई. ए. रिचर्ड्स की तरह आलोचना की सैद्धान्तिकी विकसित करने में उनकी कभी रुचि नहीं रही। वे मैथ्यू आर्नोल्ड के 'टचस्टोन' की विफलता से भी भली-भाँति परिचित थे। शास्त्र और सिद्धान्त विकसित करने में हमेशा एक व्यवस्था का निर्माण करना होता है, जो विविध रचनाओं से टकराने के क्रम में नाकाफी और असहाय नजर आती है। उसकी सीमाएँ जल्द ही उजागर हो जाती हैं। सिद्धान्त और शास्त्र के अनुसार रचनाओं को जाँचना-परखना दूरबीन को उल्टी दिशा से देखने की तरह है। इसीलिए नामवर

उत्पल

(शोध, विमर्श और सृजन)

प्रधान सम्पादक

डॉ. सुधीर सोनी

सम्पादक, प्रकाशक आदेश

आदेश संत

अतिथि सम्पादन

डॉ. गिरीशरंजन तिवारी

(नैनीताल)

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

लोक संस्कृति और आधुनिकता

श्री [illegible] सिंह शर्मा
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (हिन्दी)
शास. दि. ब. तु. स्नातकोत्तर स्वशासी
महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग.)

परिवर्तन प्रकृति का नैसर्गिक गुण है। इस परिवर्तन का प्रभाव समाज पर अनवरत रूप से पड़ता रहता है। परिणाम स्वरूप समाज और उसकी प्रक्रियाएँ निरन्तर अपने रूप में परिवर्तन करती रहती हैं इस परिवर्तन का प्रभाव समाज पर दो प्रकार से होता है साथ ही समाज के आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक पक्ष पर भी पड़ता है। इस परिवर्तन को हम समाज का विकास भी कह सकते हैं। संस्कृति के विकास की प्रक्रिया सामाजिक और आर्थिक विकास की प्रक्रिया है। [illegible] ने स्पष्ट रूप से संस्कृति की परिभाषा को स्पष्ट करते हुये लिखा है "संस्कृति वह संपूर्ण जटिलता है जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, आचार, विधि, प्रथा तथा अन्य क्षमताओं और आदतों का समावेश रहता है जिन्हें मनुष्य समाज के सदस्य के रूप में उपार्जित करता है। इसी संबंध में समाजशास्त्री [illegible] का मत है संस्कृति एक जटिल सम्पूर्णता है जिसमें वे सभी बातें सम्मिलित हैं जिन पर हम सोचते हैं, कार्य करते हैं और समाज के सदस्य होने के नाते अपने पास रखते हैं।

लोक संस्कृति : आधुनिकता का दबाव

आधुनिक सभ्यता के विकास के साथ ही देश में प्रौद्योगिकी का विकास हुआ, परिणामस्वरूप इसका प्रभाव संस्कृति पर भी पड़ा। वस्तुतः देश की संस्कृति का मूल उद्गम [illegible] का लोक जीवन ही है, क्योंकि लोक संस्कृति ही तो मानव की सांस्कृतिक ऊर्जा का स्रोत रही है। लोक जीवन तो एक ही समाज की जड़ों को सींचता है। यही संस्कृति मनुष्य के जीवन की सबसे बड़ी वास्तविकता है। समय और परिस्थिति के अनुरूप समाज का आंतरिक व बाह्य कलेवर बदलता है, सांस्कृतिक स्थितियाँ भी [illegible] परिवर्तित होती हैं। इसे हम अस्वाभाविक और गलत भी नहीं कह सकते। "आधुनिक विज्ञान और आधुनिक दर्शन की भौतिकतावादी विचार पद्धति ने [illegible] लोक (लोक गाथा / लोक जीवन) पारम्परिक रूप और पारम्परिक चेतना के ऐतिहासिक विकास की बुनियादी अवधारणाओं (की समझ) को स्पष्ट करने वाला एक [illegible] है। संस्कृति [illegible] के सभी प्रकारों और उनकी [illegible] की दृष्टि से यह लोक आदिम से आधुनिक तक बराबर प्रवाहमान है। यह परम्परा से विच्छिन्न कभी नहीं हुआ है बल्कि इस लोक के द्वारा ही [illegible] के मुताबिक नई जिन्दगी मिलती रही है। इसके अतिरिक्त सामाजिक जीवन में समस्त प्रकार के प्रयोगों और समान प्रकार की प्रणालियों के मामलों का निर्धारण भी इस लोक से ही होता रहा है। मानवीय इतिहास की पुनर्व्याख्या का प्रारम्भ सामान्य लोक से होता है। इतिहास की निरन्तरता को बनाये रखने में इस लोक की हमेशा से महत्वपूर्ण भूमिका रही है।"[1]

आधुनिक काल में लोक जीवन की पारम्परिक संरचना टूटने लगी और स्वाधीनता के पश्चात तो उसके टूटने का क्रम बहुत तेज हो गया। गाँवों में नये राजनीतिक, आर्थिक परिस्थितियाँ [illegible] उत्पन्न हुईं इसके फलस्वरूप ग्रामीण जीवन बहुत तेजी से बदलने लगा। शिक्षा का प्रसार होने लगा। शहरों से सम्पर्क बढ़ता गया। फलस्वरूप लोक की अभिव्यक्ति [illegible] मानसिकता, महत्त्वाकांक्षा, उपयोगिता और भौतिक जरूरतें भी उत्पन्न होती गयीं। समाज और मूल्यों में बहुत बदलाव आये। प्रकृति और मनुष्य के प्रति सामाजिक लगाव कम होते गये। गाँव की राजनीति के परिणाम स्वरूप उनमें आपसी कलह और अलगाव को उभरने का अवसर मिला। 'आज लोक जीवन एक दूसरा ही लोक जीवन है। [illegible] और इसकी संस्कृति अत्यंत संकीर्ण और बहुआयामी बन गयी है। गाँव कस्बों में एक ओर लोक चेतना अत्यन्त जटिल बन गयी है दूसरी ओर स्वार्थी रूप में वर्तमान प्रकृति के प्रति उसका लगाव कम हो रहा है। इस लगाव की कमी का परिणाम यह हो रहा है कि [illegible] चले जा रहे हैं और [illegible] जा रहे हैं।[2]

मनुष्य अपने लक्ष्य से भटक गया है, क्योंकि वह सामाजिक पाखण्ड, ऊँच नीच की खाइयों, जीवन की विसंगतियों एवं विद्रूपताओं, भौतिक विलासिता, रूढ़ियों, अंधविश्वासों एवं हीन कुण्ठाओं के जाल में फँस कर रह गया है। 'इतिहास ही तो इस सच्चाई का साक्षी रहा है कि जब कभी भी और जहाँ कहीं भी इस लोक की अवहेलना हुई है अथवा इस लोक के विरुद्ध आचरण किया गया है तो समाज के जीवन में विकास के [illegible] अराजकता फैलती रही है। विकास के [illegible]

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

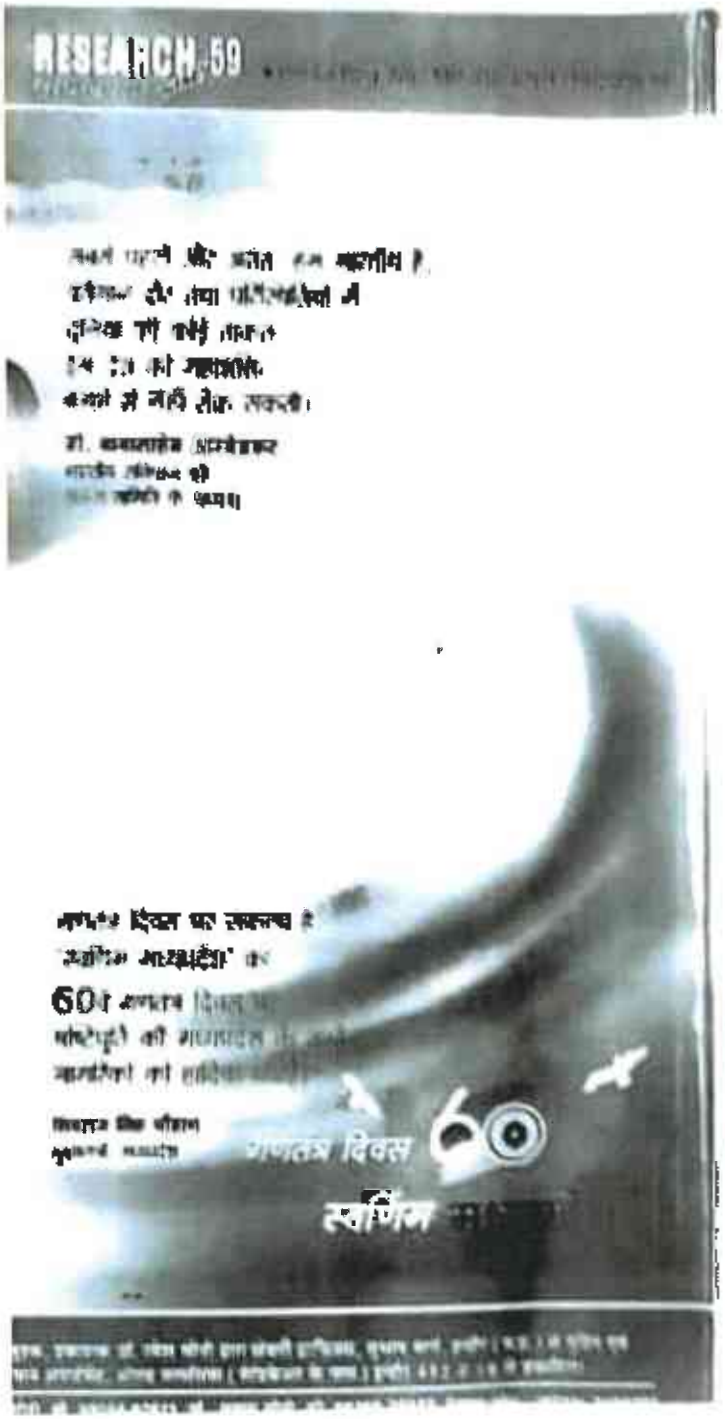

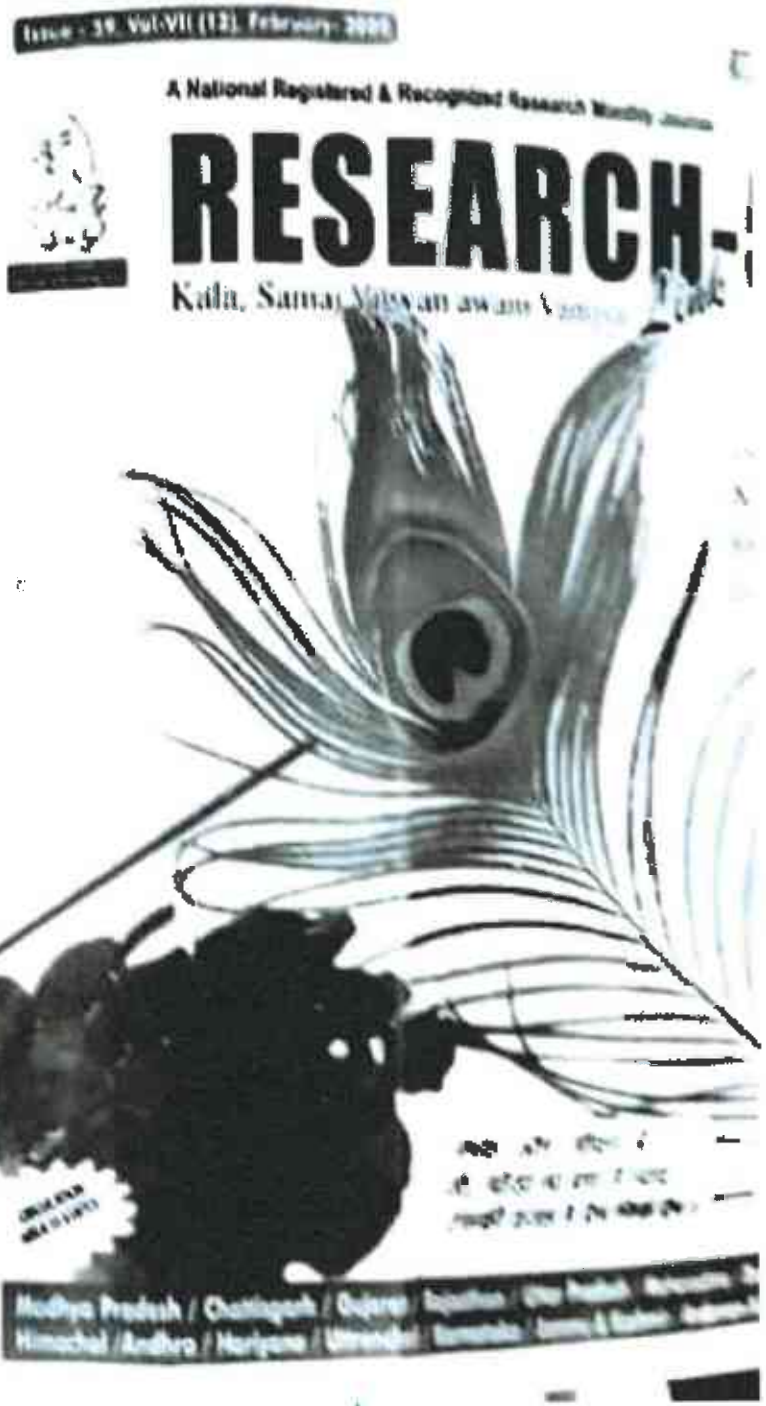

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

लोक साहित्य और शिष्ट साहित्य

[illegible]

[illegible]

[illegible]

A group of peoples, a ... [illegible]

[illegible] (हिन्दी), [illegible]

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

N-0972-9909 CHHATTISGARH VIVEK www.kalyancollege.org

छत्तीसगढ़ विवेक

कला, मानविकी, संस्कृति, शिक्षा, पत्रकारिता, वाणिज्य एवं विज्ञान की त्रैमासिक शोध-पत्रिका

अंक-43, वर्ष -12, अक्टूबर-दिसंबर, 2013

•

संपादक
आर.पी. मिश्रा

•

प्रबंध संपादक
प्रो. एल. आर. वर्मा

•

सहायक संपादक
डॉ. सुधीर शर्मा

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

कल्याण अध्ययन-विश्लेषण एवं अनुसंधान केंद्र
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाईनगर (छत्तीसगढ़)

प्रगति की परंपरा और उसकी अवधारणा

डॉ. कोमल सिंह शार्वा
प्राचार्य
शासकीय महाविद्यालय, गुण्डरदेही, जिला- बालोद

श्रीमती नीलम शैलेषराव वैरागड़े,
शोधार्थी

'प्रगति' शब्द अन्तर्बाह्य- रूप से आगे बढ़ने की क्रांतिकारी चेतना का प्रतिनिधित्व करता है। 'प्रगति' अपने शुध्द रूप में मानव की एक सहज मनोवृत्ति और सामूहिक जीवन की मूल आवश्यकता है।

साहित्य में प्रगतिशीलता एक 'मूल्य' है जो समय से प्रतिबद्ध और सापेक्ष भी है। यह गतिशील और विकासमान यथार्थ का अंग है। प्रगतिशीलता हमें सभी जगह दिखाई देती है, जैसे समाज में, राजनीति संस्कृति, भाषा, साहित्य, अर्थतंत्र, सभी में प्रगतिशीलता रही है और रहेगी।

'प्रगति' के विचार का अर्थ हमें स्पष्ट रूप से 1920 में प्रकाशित जे.बी. बरी की किताब 'दि आयडिया ऑफ प्रोग्रेस' में मिलता है। इसमें प्रगति की कुछ मूलभूत धारणायें बताई गयी हैं, जैसे मानव सभ्यता एक वांछित दिशा में विकास करती रही है, आर भी और करती रहेगी। मनुष्य में विकास की अनन्त क्षमता है, मानव सभ्यता की सम्पूर्ण प्रगति मनुष्य की अपनी सामाजिक और मनोवैज्ञानिक प्रकृति की ही देन है।

इस प्रकार, "मानव प्रगति की धारणा एक ऐसा सिद्धांत है, जो अतीत की घटनाओं का संश्लेषण और आने वाली घटनाओं की भविष्यवाणी से मिलकर बनता है।"

कुछ दार्शनिकों का मानना है कि मनुष्य समाज के विनाश की ओर बढ़ रहा है और स्वर्ण-युग तो सिर्फ प्राचीन काल ही था। हमें ध्यान रखना चाहिए कि इतिहास के प्रति चक्रवादी और पतनवादी दृष्टिकोण प्रगति की धारणा के खिलाफ है।

प्राचीन ग्रीक दार्शनिक सेनेका मूलतः अतः पतनवादी दृष्टिकोण का दार्शनिक था किन्तु उसकी धारणा थी कि मनुष्य का अपने आस-पास की प्रकृति के प्रति ज्ञान धीरे-धीरे बढ़ा है और भविष्य में आगे भी बढ़ेगा, इस विचारधारा में प्रगति का विचार विद्यमान है, इसीलिए यूनानी चिंतन में सेनेका यह प्रगति में विश्वास अपना अद्वितीय स्थान रखता है।

चीन में प्राचीनतम ग्रंथ 'ई-किंग' में प्रगति के तत्व दिखाई देते हैं। इनका विश्वास था कि जल से जीवन की उत्पत्ति हुई और विभिन्न रूपों से विकसित होता हुआ यह जीवन मनुष्य रूप तक पहुँचा है। इनके अनुसार स्थिति (यिन) और गति (यांग) की प्रक्रिया से विश्व की जीवन धारा चलाते है।[2]

पर मध्ययुग में जब ईसाई चिन्तन का बोलबाला था, जिसमें कहा गया है कि इतिहास को ये एक प्राकृतिक विकास के रूप में नहीं बल्कि ईश्वरीय आदेश से घटित घटनाओं की एक श्रृंखला के रूप में देखते हैं। ऐसे कालखंड में 'रोजर बेकन' को प्रगति की धारणा का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। रोजर बेकन को प्रगति की धारणा का प्रथम उद्घोषक कहा जाता है। उसने सबसे पहले प्रकृति के रहस्यों को खोजने के लिए प्रायोगिक विधियों के महत्व को प्रतिपादित किया।

इसी सिलसिले में 'ज्यां बोदां' का उल्लेख महत्वपूर्ण है। उन्होंने 1566 में प्रकाशित अपनी किताब 'ऐतिहासिक अध्ययन की प्रस्तावना' में लोकप्रचलित धारणा को गलत कहा और उसे स्पष्टतापूर्वक अस्वीकार किया। उन्होंने कहा कि यदि प्राचीन काल ही मानव इतिहास का स्वर्णकाल होता और उसके बाद मनुष्य की निरंतर अधोगति ही हुई होती तो मानव जाति अपने निम्नतम स्थिति पर पहुँच गयी होती। इसके उपरांत फ्रांसिस बेकन ने ज्ञान-विज्ञान के संशोधन की पूरी योजना तैयार की और ज्ञान का लक्ष्य 'उपयोगिता' को घोषित किया। प्राचीन युग को उसने मनुष्य का बचपन कहा अपने युग को उसकी वृद्धावस्था। बेकन के अनुसार, अधिक ज्ञान की आशा हम मनुष्य के बचपन या जवानी की अपेक्षा उसकी वृद्धावस्था से कर सकते है।[3]

प्रगति के किसी निश्चित सिद्धांत की रचना के लिए एक निश्चित वैचारिक पृष्ठभूमि की आवश्यकता थी जिसकी पूर्ति बेकन और बोदां ने की। इसके आगे विज्ञान को प्राचीन विचारकों के वर्चस्व से छुटकारा मिला। 'प्रयोग' को उसका महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है-दकार्त ने 'स्पष्टता और असंदिग्धता' को सत्य की एक मात्र कसौटी बनाया और प्रकृति के नियम अपरिवर्तनशील और सार्वभौम हैं ऐसा कहा।[4] दे-कार्त के सत्य पर पहुँचने के तरीके का इनके समकालीन चिंतन पर व्यापक प्रभाव पड़ा। उसके शिष्यों में एक फॉन्तनेल पहली बार मानवीय ज्ञान की प्रगति के एक निश्चित सिद्धांत को जन्म दिया।

दे-कार्त के शिष्य फॉन्तनेल ने कहा कि सृष्टि के पास एक मसाला है जिसको हजारों तरह से मोड़-तोड़कर वह संस्कृति रचना करती है। तात्पर्य है कि प्राचीनों और आधुनिकों में जो अंतर वह सिर्फ दो कारणों से है।

(1) समय (2) भौगोलिक स्थिति

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

UGC Approved Journal No. - 40957
(IIJIF) Impact Factor - 4.172
Regd. No. : 1687-2006-2007 ISSN 0974 - 7648

J I G Y A S A

AN INTERDISCIPLINARY PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Chief Editor : *Indukant Dixit*

Executive Editor : *Shashi Bhushan Poddar*

Editor
Reeta Yadav

Volume 12 June 2019 No. V

Published by
PODDAR FOUNDATION
Taranagar Colony
Chhittupur, BHU, Varanasi
www.jigyasabhu.blogspot.com
www.jigyasabhu.com
E-mail : jigyasabhu@gmail.com
Mob. 9415390515, 0542 2366370

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

- कुबेरनाथ राय का सांस्कृतिक संबोध — [illegible]
  प्रदीप कुमार तिवारी, [illegible]

- प्राचीन भारत में कृषि तथा पशु-पालन का ऐतिहासिक अध्ययन — [illegible]
  डॉ. रिंकी कुमारी, [illegible]

- गजलकार श्रीमती संतोष [illegible] — [illegible]
  श्रीमती पुष्पलता [illegible], [illegible]
  डॉ. कोमल सिंह सार्वा, [illegible]

- [illegible] के [illegible] पर दो किताबों का [illegible] — [illegible]
  अजीत प्रताप सिंह, [illegible]

- [illegible] उपन्यासकारों की वस्तु विन्यास का वैशिष्ट्य — [illegible]
  [illegible] कुमारी
  [illegible]

- सामुदायिक राष्ट्रीय विघटन के परिप्रेक्ष्य में भारत में मानवाधिकार प्रश्न से जुड़ी समस्याएं — [illegible]
  डॉ. जवाहर [illegible], [illegible]

- भाषा की स्थापित मान्यताओं के मध्य 'नई कहानी' में भाषा की तलाश — [illegible]
  डॉ. [illegible] पंडित, [illegible]

- [illegible] की पृष्ठभूमि पर लिखा गया हिंदी का [illegible] उपन्यास — [illegible]
  [illegible] कुमारी, [illegible] नई दिल्ली

- बुद्ध के द्वितीय आर्य सत्य का विमर्शात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन — [illegible]
  डॉ. अवधेश कुमार झा, [illegible]

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

मोहनदास नैमिशराय की कहानियों में दलित-अस्मिता

डॉ. कोमल सिंह शार्वा[1], डॉ. सुधीर शर्मा[2], कमल कुमार बजारे[3]

[1]शोध निर्देशक, भानु प्रताप देव, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कांकेर जिला उत्तर बस्तर कांकेर (छ.ग.)
[2]सह-निर्देशक, कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाई नगर, (छ.ग.)
[3]शोधार्थी, कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाई नगर (छ.ग.)

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019

भूमिका -

वर्तमान युग दलित चेतना की कहानियों में अपनी उपस्थिति दर्ज की। आठवें दशक में यह उपस्थिति और अधिक तीव्रता से उभरी, लेकिन हिन्दी सम्पादकों और समीक्षकों के उपेक्षापूर्ण रवैए के कारण दलित रचनाएँ लगातार चर्चा से बाहर रही। दलित रचनाकारों के संघर्ष ने आखिर इस तिलस्म को तोड़ने में सफलता पाई। दलित रचनाकार मोहनदास नैमिशराय की कहानियाँ जहाँ दलित पत्रिकाओं में छप रही थी वहीं 'सरिता' 'भारती', 'युगबोध', 'संचेतना', 'स्वतंत्र भारत' में भी छपी। इस प्रकार यह एक विशाल पाठक वर्ग तक पहुँचाने में सफल रही।[1]

मोहनदास नैमिशराय का प्रथम कहानी संग्रह 'आवाजें' में 13 कहानियाँ संग्रहीत है। ये कहानियाँ - आवाजें, घायल शहर की एक बस्ती, अपना गांव, हारे हुए लोग, महाशूद्र, अधिकार चेतना, गंजा, बरसात, दौर, उसका, शह, शहर और वे, भीड़, यह, महायुद्ध।

दूसरा कहानी-संग्रह 'हमारा जवाब' में 10 कहानियाँ है- कर्ज, तमीज, रीत, हमारा जवाब, परम्परा, फासला, आधा सेर घी, सुनो तहसीलदार, रुपये, चिनगारी, मकर, जहर, सिमटता हुआ आदमी, मजदूरी, मुक्ति का रास्ता, कर्ज, एक गुमनाम मौत, ड्राइवर के कोट का बटन, एक अखबार की मौत। तीसरे कहानी संग्रह 'दलित कहानियाँ' में 16 कहानियाँ हैं गई है - सिलसिला, आदमी की तलाश, इज्जत, चमत्कार, प्यास, एक आदमी, एक भला मानस, (माँ, गुड़ और साहूकार) यात्रा, टोकरी की नौकरी, अत्याचार, धर्म परिवर्तन, आप यहां क्यों आते है, फेस बुकिया सुखनवा, बस सिर्फ इतनी सी।

इस तरह 48 कहानियाँ अब तक प्रकाशित हो गई है। इसमें से अधिकांश कहानियाँ पत्र-पत्रिकाओं में पहले से ही छप चुकी थी कुछ अभी हाल फिलहाल में छपी है।

मोहनदास नैमिशराय की कहानियों में निम्न लिखित दलित अस्मिता है -

दलितों पर हुए अत्याचारों की दर्दनाकअभिव्यक्तिहै -

'अपना गांव' कहानी दलितों पर किए गए असीम अत्याचार को प्रस्तुत करती है। दलित महिला कबूतरी को ठाकुर के मंझले बेटे ने सारे गांव में इसलिए नंगा करके घुमाया कि उसका पति संपत ठाकुर से पांच सौ रूपया कर्जा लेकर गया जिसे कबूतरी चुका नहीं सकी। लेकिन गांव में ऐसी घटना का विरोध करने की हिम्मत किसी में नहीं थी। सभी दलितों पर अत्याचार करने का अधिकार गांव के सवर्ण समाज को परंपरागत रूप में ही मिला है।

संपत के पत्नी को नंगा कर गांव में जुलूस निकालने वाले (ठाकुरों) के खिलाफ पुलिस में शिकायत करने के लिए गए दलित युवक संपत और उसके साथियों का पुलिस की ओर से न्याय की अपेक्षा लाते, गाली और डंडे से मार-पीट मिली। न्याय की मांग करने हेतु गए दलितों को पुलिस थाने में ही बंद किया गया। "अत्याचारी दलितों को दंडित करने वाले

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

कोसंबी
कल्पना से यथार्थ तक
लेखक - भगवान सिंह
प्रकाशक - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
पृष्ठ संख्या - 320
मूल्य - 250 रुपये (पेपरबैक)

सियाराम शर्मा : सुपरिचित लेखक। समाजवाद का संकट और मार्क्सवाद (पल प्रतिफल - 1992), 'कविता का तीसरा संसार' (पहल 195-96) तथा 'भारत का गहराता कृषि संकट और किसानों की आत्महत्यायें' (साम्य - 2015) शीर्षक से तीन पुस्तिकाएँ प्रकाशित। नक्सलबाड़ी आंदोलन के तीन दशक पर 'विकल्प' के दो विशेषांकों का सह सम्पादन। मार्क्सवाद में गहरी रुचि।
संप्रति - छत्तीसगढ़ के शासकीय दानवीर तुलाराम महाविद्यालय, उतई में अध्यापन।
सम्पर्क :- 7/35, इस्पात नगर, रिसाली, भिलाई नगर,
जिला - दुर्ग (छत्तीसगढ़), पिन कोड - 490006.
(नि. - 09329511024 (मो0)
ई-मेल - prof.siyaramsharma@gmail.com

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

सियाराम शर्मा

"तुम्हीं कहो कि यह अन्दाज़-ए-गुफ़्तगू क्या है"

"इतिहास राष्ट्रवादी या नृजातीय या पुनरुत्थानवादी विचारधाराओं के लिए उसी तरह कच्चा माल होता है जैसे हेरोइन के नशेड़ियों के लिए अफीम। इन विचारधाराओं के लिए शायद इतिहास सबसे जरूरी चीज होता है। अगर अतीत अनुकूल नहीं होता है तो उसे अपने अनुकूल गढ़ लिया जाता है।"1

- एरिक हॉब्सबाम

प्रसिद्ध मार्क्सवादी इतिहासकार दामोदर धर्मानंद कोसंबी बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति थे। उन्होंने भारत में मार्क्सवादी इतिहास लेखन की पुख्ता नींव रखी। वे पेशे से गणितज्ञ और सांख्यिकीविद् थे। कुछ समय के लिए उन्हें अल्बर्ट आइंस्टीन का भी सानिध्य प्राप्त हुआ। उन्होंने फर्ग्यूसन कॉलेज पूणे, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में अध्यापन करने के साथ-साथ 'टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च' और 'कांउसिल फॉर साइंटीफिक एंड इंडस्ट्रिअल रिसर्च' जैसी संस्थाओं में भी कार्य किया। 'विश्व शांति आन्दोलन' की गतिविधियों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। गणित और सांख्यिकी के साथ-साथ 'क्रोमोजोम मैपिंग', वैज्ञानिक इतिहास, पुरातत्व, सिक्काशास्त्र, संपादन और पाठालोचन के क्षेत्र में भी अपनी महत्वपूर्ण पहचान बनायी। वे बहुभाषाविज्ञ थे। संस्कृत, पालि, प्राकृत, ग्रीक, लैटिन, जर्मन तथा फ्रेंच भाषा पर उन्हें असाधारण अधिकार था। उन्होंने साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में अमर सिंह के 'अमर कोश', विद्याकर के 'सुभाषितरत्नकोश', भर्तृहरि के 'शतकत्रयी', 'उर्वशी-पुरूरवा' प्रसंग, 'भगवद्गीता' तथा कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' पर जो विद्वतापूर्ण विवेचन-विश्लेषण का कार्य किया, वह आज भी भारतीय बुद्धिजीवियों और लेखकों के समक्ष बहुत बड़ी चुनौती है। उनके इन महत्तर कार्यों की तुलना क्रिस्टोफर कॉडवेल, जार्ज थाम्पसन और अर्नाल्ड हाउजर के साथ की जाती है।

अक्षर

अगला अंक

हिंदी समाज

इसमें हिंदी समाज की व्याप्ति, हिंदी समाज की सामाजिक मनोसत्ता,
सिनेमा, मिथकीय मानस, भाषायी तनाव, जाति, लिंग और यौनिकता,
दलित-स्त्री-बहुजन-आदिवासी,
संसदीय राजनीति, साहित्यिक और सांस्कृतिक वस्तुस्थिति,
आंदोलन, धर्म और दर्शन जैसे विषयों पर सामग्री होगी.

अतिथि संपादक
प्रकाश चंद्रायन
बसंत त्रिपाठी

अक्षर 50

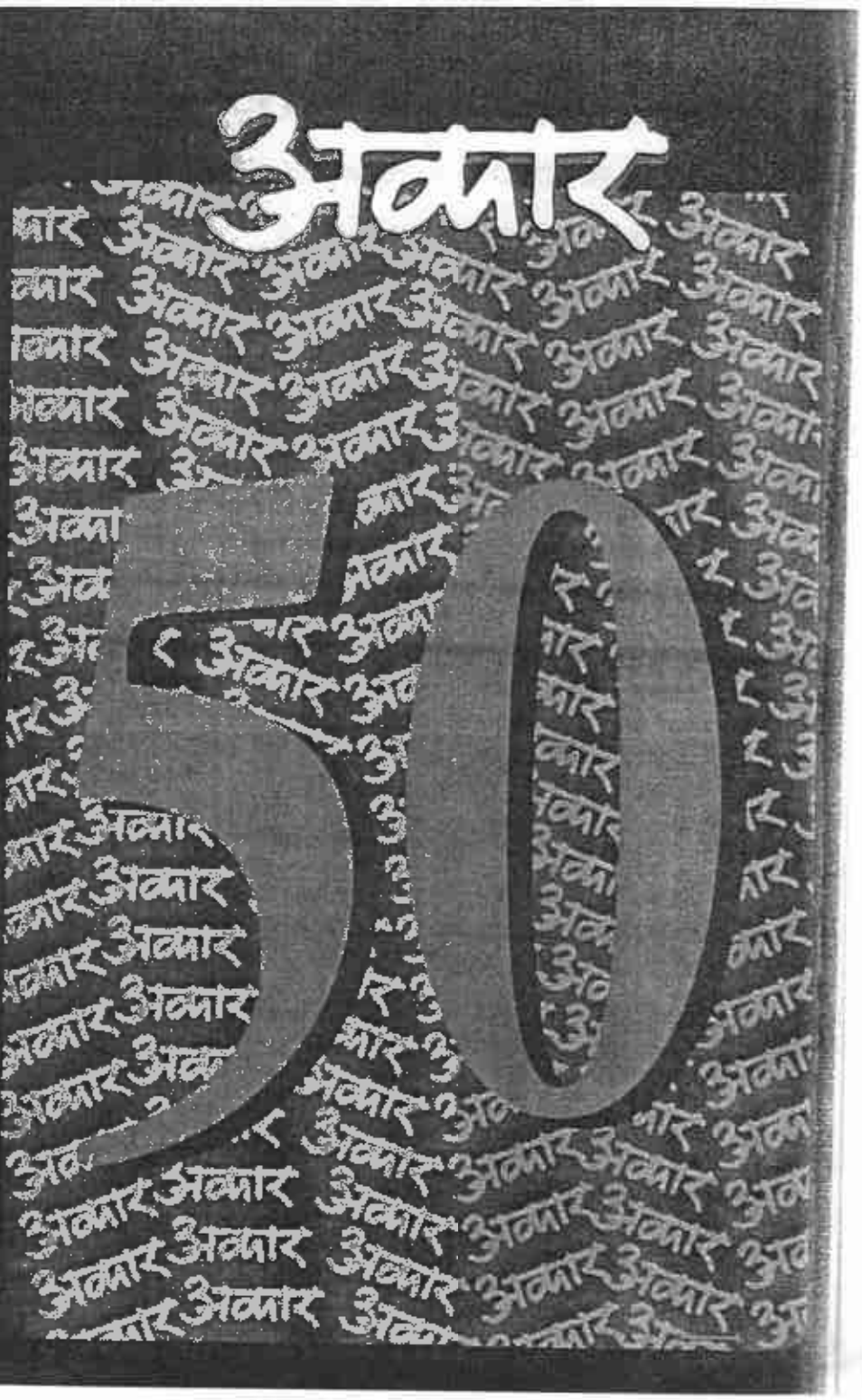

...न्ध में आपका क्या विचार है?

आप क्या एनीमशन की बात कर रहे हैं? इस तरह का प्रयास हम लोगों ने किया नहीं ... ऐसा नहीं है, अवनीन्द्रनाथ ठाकुर की पुस्तक 'क्षीरेर पुतुल' (क्षीर की गुड़िया) पुस्तक के ... 'आनन्द' एक सीडी देता है और सत्यजित राय के 'बाक्स रहस्य', का एक रेडियो नाटक ... प्रसारित हुआ है, उसका कैसिट दिया जाता है पुस्तक के साथ। बड़े स्तर पर कुछ नहीं ... गया है, फिर भी प्रयास तो चल ही रहा है।

यह जो आपको इतना अनुभव हुआ, आप इतने लेखकों के सान्निध्य में ... बहुत-सी घटनाएँ हैं जिनको जानने की इच्छा पाठकों में हो सकती है, उनके ... आपको अपनी आत्म कथा लिखनी चाहिए, अभी तक लिखी है, या आगे ...ने की योजना है, या लिख रहे हैं?

स्मृति कथा जैसी एक पुस्तक लिख रहा हूँ। अर्थात् मन में जब जो चीज आ जाती ... किसी तरह के काल-क्रम का अनुसरण बिना किये, उसे नोट कर रख रहा हूँ। इस सम्बन्ध ... मैं इतना ही कह सकता हूँ। आगे चलकर एक पूरी पुस्तक ही रूपायित करने की इच्छा है। ... प्रयास करके।

कोई दुख, कोई खेद, किसी चीज को न पाने की ताड़ना क्या आपका पीछा ...ती है?

ना, ना। जीवन में बहुत कुछ पाया है। इतना सब पाने की बात ही नहीं थी। विशेषकर ... लड़का भैंस की पीठ-पर चढ़कर घूमा करता था। जो किशोर मशीनों को पोंछा करता था, ... यह सब सपने में भी नहीं सोचा था, फिर भी मेरा परिश्रम ही मेरे जीवन में विजयी हुआ।

और एक प्रश्न। क्या लेखक लोग आपको चिट्ठी नहीं लिखते हैं?

वह तो लिखते ही थे, लगभग सारी चिट्ठियाँ मेरे पास सुरक्षित रखीं हुई हैं। कौन नहीं ... उन चिट्ठियों में? नीरद सी. चौधुरी, लीला मजूमदार, सुभाष मुखोपाध्याय, सत्यजित राय, ... सेन, अलोक रंजन दास गुप्त, शंख घोष, दिव्येन्दु पालित, शीर्षेन्दु मुखोपाध्याय, रमापद ...धुरी, आर एवं और भी कई लोग। उस संग्रह को भी काम में लाने की इच्छा है, अपनी उस ... कथा में।

("वर्तमान देश" जनवरी-मार्च 2009 से साभार)

परिचय –नारदा वसु ने संस्मरणों की एक वृहद पुस्तक लिखी है। उसमें बांग्ला के लगभग सभी लेखकों पर संस्मरण हैं। 'अक्सर' कुछ संस्मरण प्रकाशित करेगा। रामशंकरजी इस ... व महत्वपूर्ण सामग्री को हिंदी में रूपान्तरित करके हमें उपलब्ध करायेंगे।

संपर्क -
मोब-09839617349

लेख

सियाराम शर्मा

लोकतंत्र में विचारकों की हत्याएँ

नरेन्द्र अच्युत दाभोलकर पेशे से डॉक्टर और लेखक थे। वे महाराष्ट्र के एक छोटे से कस्बे में डॉक्टर के रूप में कार्यरत थे। डॉक्टर के रूप में कार्य करते हुए उन्होंने बहुत करीब से महसूस किया कि उनके बहुत सारे गरीब मरीज अंधविश्वास का शिकार होकर गुरुओं, बाबाओं और तांत्रिकों के जाल में फँसकर लूटे जाते हैं। डॉ. दाभोलकर ने इन गरीब और असुरक्षित लोगों की सहायता के लिए अंधविश्वासों को दूर भगाने वाली संस्था 'महाराष्ट्र अन्धश्रद्धा निर्मूलन समिति' का गठन किया और उसके प्रथम संस्थापक अध्यक्ष बने। इस क्रम में वे महाराष्ट्र के गाँव-गाँव में गये और जनसाधारण के समक्ष उन चमत्कारों को करके दिखाया, जिसकी आड़ में उन्हें लूटा जाता था। उन्होंने जनता को विश्वास दिलाया कि तरकीबों के सहारे कोई भी व्यक्ति इन चमत्कारों को दिखा सकता है। यही नहीं, उन्होंने महाराष्ट्र में नरबलि, अघोरी क्रियाओं और काला जादू को समाप्त करने के लिए एक बिल पास किये जाने का सफल और आक्रामक अभियान चलाया। इस विधेयक को ड्राफ्ट किये जाने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इस विधेयक का विधान सभा में शिवसेना, भारतीय जनता पार्टी और अन्य हिन्दूवादी दक्षिणपंथी संगठनों – सनातन संस्था, हिन्दू जन जागृति समिति ने विरोध किया। यहाँ तक कि विधान सभा में कांग्रेस भी यह कहते हुए 'वॉकआउट' कर गयी कि इस विधेयक से कुछ समूहों की भावना को ठेस पहुँचेगी। अन्ततः यह विधेयक उनकी हत्या के बाद 24 अगस्त, 2013 को अध्यादेश के रूप में जारी किया गया और उसी वर्ष दिसम्बर में महाराष्ट्र विधान सभा ने इसे पास कर दिया।

डॉ. दाभोलकर स्त्री मुक्ति के भी प्रबल समर्थक थे। स्त्रियों को अंधविश्वासों से मुक्त करने के साथ वे उन मंदिरों में उनके प्रवेश के पक्षधर थे, जहाँ उनका प्रवेश वर्जित माना जाता था। यह वास्तविकता है कि 'महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति' के बैनर तले सर्वप्रथम डॉ. दाभोलकर ने ही अहमद नगर के शनी शिंगनापुर मंदिर में स्त्रियों के प्रवेश के लिए आन्दोलन चलाया था।

अक्सर

ISSN : 2581-415X
RNI NO. : CHHHIN/2014/59074
डाक पंजीयन संख्या : छग/दुर्ग/106/2018-2020

मासिक

दक्षिण कोसल

पत्रकारिता बिना सीमा के

• वर्ष-4 • अंक-07 • राजनांदगांव • अप्रैल 2018 • मूल्य : ₹30

ऐतिहासिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक सरोकार के लिए

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt. Durg (C.G.)

अजा/अजजा अत्याचार कानून के दुरुपयोग पर सुप्रीम कोर्ट की मुहर से

देश में बवाल

हर 15 मिनट में दलित के खिलाफ एक अपराध होता है। हर दिन छह दलित महिलाओं के साथ बलात्कार किया जाता है।

पिछले दस वर्षों (2007-2017) में, दलितों के खिलाफ अपराधों में 66 प्रतिशत वृद्धि हुई है।

. को जारी रखना है। न्यायमूर्ति कर्णन उच्च
.तका में उन चिंताओं को उठाने की कोशिश
ं थे।

जहां तक तथ्यों का सवाल है, न्यायालय बिल्कुल सही था कि गैर-अनुसूचित जाति के अधिकारियों द्वारा एक दलित कर्मचारी की चरित्र या अक्षमता के रूप में एक प्रतिकूल प्रविष्टि या अभियोजन पक्ष की मंजूरी के स्टैंड से इनकार न हो। पीओए के तहत यह अपराध है। इस मामले में, अभियुक्त को वास्तव में अग्रिम जमानत दी गई थी। लेकिन धारा 482 के तहत आपराधिक कार्यवाही को खारिज करने की उनकी याचिका को उच्च न्यायालय ने खारिज कर दिया था, जिसमें स्पष्ट रूप से लिखा गया है कि पीओए के दुरुपयोग की संभावना के बावजूद, इसके दंड प्रावधानों में दोष नहीं लगाया जा सकता क्योंकि इससे नीचे की ओर और पिछड़े समाज के वर्ग दुर्भाग्य से, सर्वोच्च न्यायालय से गलत संकेत जाएगा।

अदालत ने सरकारी कर्मचारी की सुरक्षा में अधिक दिलचस्पी दिखाई क्योंकि पीओए के तहत किसी अपराध के आरोप में सरकारी कर्मचारी के लिए उचित और प्रक्रियागत सुरक्षा उपायों को एक प्रमुख मुद्दा के रूप में तैयार किया जाना चाहिए। अदालत ने स्पष्ट रूप से कहा कि सरकारी कर्मचारियों और साथ ही अन्य लोगों को ब्लैकमेल किए जा सकते हैं और इसलिए सुरक्षा उपायों की आवश्यकता है।

यह कहा कि 'निहित स्वार्थों की संतुष्टि के लिए गलत मकसद वाले सरकारी कर्मचारी/न्यायिक अधिकारी/अर्ध-न्यायिक अधिकारी के खिलाफ बड़े पैमाने पर दुरुपयोग की शिकायतों के माध्यम से बड़े पैमाने पर मामला दायर किया जा रहा है।' यह अत्याचारियों के शिकायतकर्ताओं के खिलाफ भी एक वक्तव्य भरा है और जाति-दलित भारतीय समाज की शक्ति गतिशीलता को नजरअंदाज करता है।

भारतीय दंड संहिता की धारा 21 के तहत सरकारी कर्मचारियों के रूप में अधिकारियों की एक लंबी सूची अर्हता प्राप्त होती है। अदालत ने इस तथ्य को नजरअंदाज किया कि दलितों के खिलाफ सरकारी कर्मचारियों के शत्रुतापूर्ण व्यवहार की आशंका में, पीओए की धारा 4 उन पर एक विशेष कर्तव्य रखता है कि उन्हें दी गई जानकारी के अनुसार एफआईआर दर्ज करें और हर संभव तरीके से शिकायतकर्ता की सहायता करें। एफआईआर का पंजीकरण न होने पर छह महीने की कारावास की न्यूनतम सजा के साथ दंडनीय होता है, जो कि एक वर्ष तक बढ़ाया जा सकता है। वास्तव में, पीओए की धारा 22 पहले से ही सरकारी कर्मचारियों को सद्भावना में लाए गए अपने सभी कार्यों से बचाती है और किसी भी सरकारी कर्मचारी के खिलाफ कोई भी मुकदमा या अभियोजन पक्ष या अन्य कानूनी कार्यवाही शुरू नहीं की जा सकती है, अगर वह सद्भावना में कार्य कर रहा है।

अदालत ने सही तौर पर सख्त अपराध कानून के पहले सिद्धांत के रूप में बेगुनाही की धारणा पर बल दिया और कहा कि पीड़ित व्यक्ति द्वारा आरोपों का उल्लंघन नहीं किया जा सकता। अदालत ने यह भी देखा कि सही है कि गिरफ्तारी केवल तभी की जा सकती है अगर 'विश्वसनीय' जानकारी हो और एक पुलिस अधिकारी के पास 'विश्वास करने का कारण' है कि अपराध किया गया है। निश्चित रूप से, गिरफ्तारी को यांत्रिक नहीं होना चाहिए और हमारे सामान्य कानून के तहत निर्दोष व्यक्ति को गिरफ्तार करने के लिए कानून के तहत कोई जनादेश नहीं है।

सच यह है कि अदालत ने कहा है कि अग्रिम जमानत को छोड़कर केवल वास्तविक मामलों तक ही सीमित होना चाहिए और इसे किसी भी तरह के मामले में लागू नहीं किया जाना चाहिए जहां पहले मामला दर्ज नहीं किया गया है। यदि कोई आरोप प्रेरित है, तो इस तरह के अपवर्जन लागू नहीं होंगे। लेकिन फिर पीओए एक विशेष कानून है और सामान्य कानून की सुरक्षा को एक विशेष कानून के तहत वैध रूप से वंचित किया जा सकता है। सामान्य कानून और विशेष कानून के बीच संघर्ष के मामले में यह विशेष कानून है जो प्रचलित है। किसी भी मामले में, जैसा कि अदालत ने नोट किया है, सुप्रीम कोर्ट ने हेमा मिश्रा के मामले में ही फैसला किया है कि संवैधानिक न्यायालय को वैधानिक बार के बावजूद अग्रिम जमानत से रोक नहीं है।

झूठी निहितार्थ और अनावश्यक गिरफ्तारी के खिलाफ निर्दोष लोगों की रक्षा के लिए, अदालत ने कहा है कि प्रारंभिक जांच के बिना एफआईआर दर्ज नहीं किया जाना चाहिए, जिसे एक सप्ताह के भीतर पूरा किया जाना चाहिए और प्राथमिकी के पंजीकरण के लिए अनुमति मिलने पर रिपोर्ट को कारण बताए। दलितों के खिलाफ अभियुक्तों के अपराधों को आगे बढ़ाने के लिए, अदालत ने आगे कहा कि यदि प्रारंभिक जांच की जाती है और एक मामला दर्ज किया गया हो तो गिरफ्तारी आवश्यक नहीं है। इसके अलावा दिशानिर्देश आगे बताते हैं कि दलितों के खिलाफ अभियुक्तों के अपराधों के लिए नियुक्ति प्राधिकारी की लिखित अनुमति और करुणा के अंतिम चरण में बिना किसी सरकारी कर्मचारी को गिरफ्तार किया जाना चाहिए, अदालत ने अन्य नागरिकों को भी लाभ दिया और जिला एसएसपी की लिखित अनुमति के बिना गिरफ्तार नहीं कर सकते हैं।

दलितों के खिलाफ पहले से ही रिपोर्ट किए गए अपराधों के बारे में निश्चित रूप से फैसले का एक गलत प्रभाव होगा। अदालत ने अपने पहले के फैसले के खिलाफ ही नहीं, बल्कि पीओए की धारा 18 में भी लिखा है, जिसमें अग्रिम जमानत को छोड़ दिया गया है और संहिता की धारा 154 का आदेश दिया गया है, जो कि संज्ञेय अपराध के हर मामले में एफआईआर पंजीकृत है। रामविलास पासवान की लोक जनशक्ति पार्टी ने सर्वोच्च न्यायालय में एक समीक्षा याचिका दायर की। सामाजिक न्याय की संसदीय स्थायी समिति, जो पीओए के कार्यान्वयन की देखरेख करती है, इस फैसले की समीक्षा करने की भी संभावना है। बीजेपी सरकार का कोई विकल्प नहीं है, लेकिन समीक्षा का समर्थन करने के लिए एक आवाज में विपक्षी पार्टियां इस फैसले का विरोध कर रही हैं। भाजपा पहले ही आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के बिहार चुनावों के दौरान आरक्षण पर बयान के लिए भारी कीमत चुकाया है और 2019 में दलित समर्थन खोना पसंद नहीं करेगा। बहुजन समाज पार्टी के नेता मायावती अब उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी के साथ मिलकर इसे एक बड़ा मुद्दा में बदलने में सक्षम हैं। ▪

लेखक, वाङ्मय-संपादक,
नालसार विधि विश्वविद्यालय, ([illegible]) हैदराबाद हैं

लोकतंत्र में विचारों की कमी और विचारकों की हत्याएं

भारत में एक बड़े सांस्कृतिक आन्दोलन का हमेशा अभाव रहा है, जो लोगों के सोच-विचार, आचार-व्यवहार को गुणात्मक रूप से आमूल-चूल बदल कर रख दे। वैदिक हिंसा और कर्मकाण्ड के विरूद्ध जैन धर्म और बौद्ध धर्म का विकास नये समाज को गढ़ने और रचने की दिशा में एक क्रांतिकारी और प्रगतिशील कदम था। बौद्ध धर्म को राज्याश्रय भी मिला। व्यापक जनता और जन-जीवन पर उसका प्रभाव भी पड़ा। भारत ही नहीं, आस-पास के देशों में भी उसका फैलाव हुआ।

@ सियाराम शर्मा

बौद्धकाल में उसकी तार्किक, कार्य-कारणवादी, वैज्ञानिक और समतावादी दृष्टि के कारण हमारे देश में शिक्षा, चिकित्सा, दर्शन, साहित्य और कला के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई। लेकिन छठी शताब्दी के आस-पास शंकराचार्य के नेतृत्व में एक भाववादी, अवैज्ञानिक दृष्टि के प्रभुत्व और प्रचार-प्रसार ने बौद्ध धर्म को हमारे देश से लगभग निष्कासित कर उसे प्रभावहीन बना दिया। लेकिन बौद्ध धर्म का प्रभाव लोक जीवन से पूरी तरह मिटाया नहीं जा सका।

12वीं शताब्दी से लेकर 14वीं शताब्दी तक

ISSN : 2581-416X
RNI NO. : CHHHIN/2014/59074
डाक पंजीयन संख्या : छग/दुर्ग/186/2018-2020

मासिक

दक्षिण कोसल

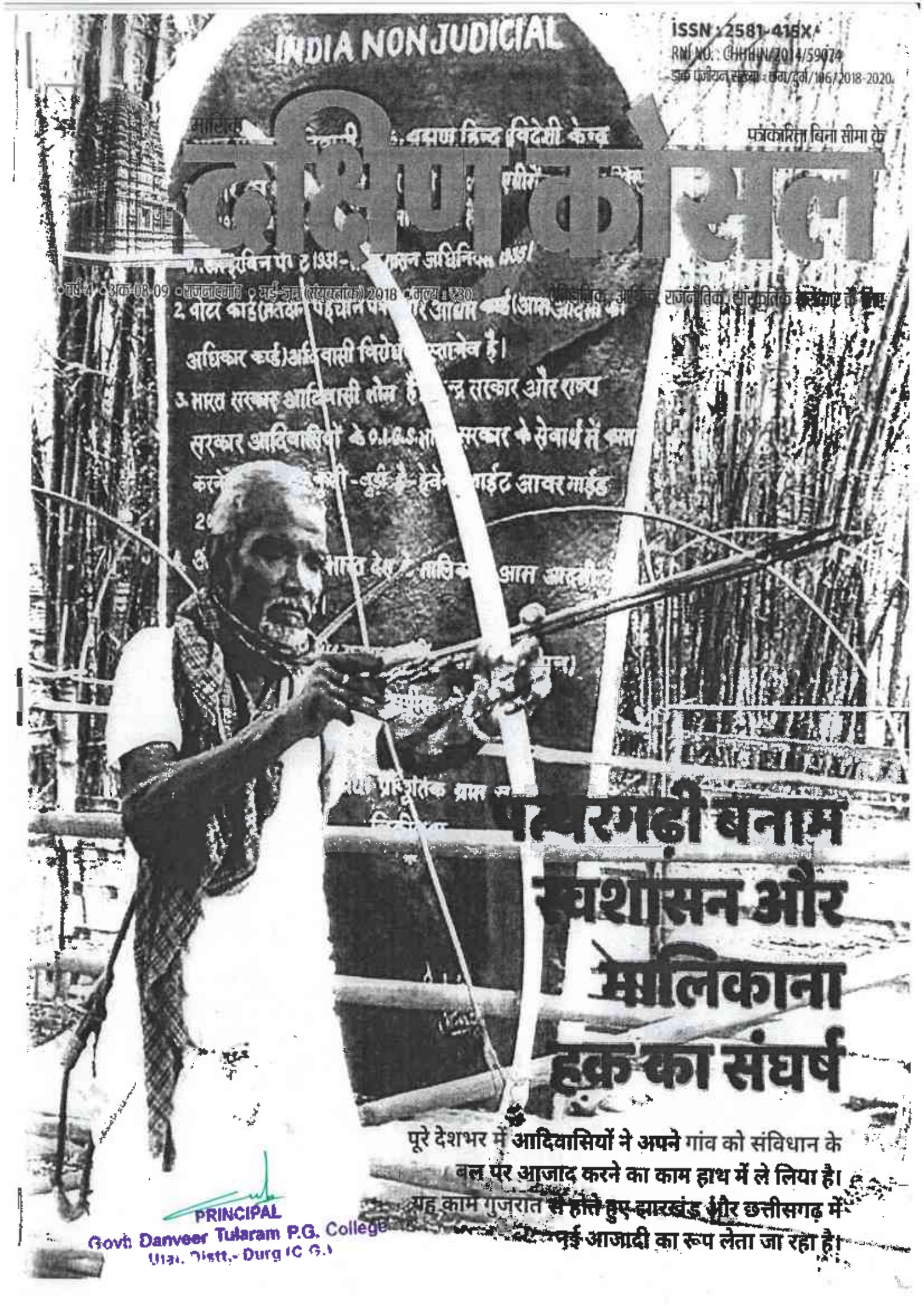

पत्रकारिता बिना सीमा के

• वर्ष-4 • अंक-08-09 • राजनांदगांव • मई-जून (संयुक्तांक) 2018 • मूल्य ₹30

सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक सरोकार के लिए

पत्थरगढ़ी बनाम स्वशासन और मालिकाना हक़ का संघर्ष

पूरे देशभर में आदिवासियों ने अपने गांव को संविधान के बल पर आजाद करने का काम हाथ में ले लिया है। यह काम गुजरात से होते हुए झारखंड और छत्तीसगढ़ में नई आजादी का रूप लेता जा रहा है।

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

लोकतंत्र में विचारों की कमी और विचारकों की हत्याएं

@ सियाराम शर्मा

कलम से आगे...

'भावना से संचालित समाज में विद्वता और वस्तुपरकता के लिए कोई प्यार और लगाव नहीं होता।'

इस सत्ता और व्यवस्था से पैदा गहन हताशा और निराशा ने एक सचेत और सक्रिय समाज की जगह हमें मूक दर्शक समाज में तब्दील कर दिया है। हमारे समाज में जारी लूट, झूठ और हिंसा हमें गहरे स्तर पर आंदोलित नहीं करती। कुछ सचेत और सक्रिय लोग भी कुछ बड़ी त्रासदियों के बाद कुछ दिन तक बेचैन और चिंतित नजर आते हैं और फिर अपने जीवन के पुराने ढर्रे पर लौट जाते हैं। यह कैसी विडम्बना है कि बर्बर दंगाई और हत्यारे पुलिस और विशेष सुरक्षा दस्ते के घेरे में चलते हैं और सामान्य जन को धर्मान्ध, दंगाईयों, बलात्कारियों और भीड़ में शामिल हत्यारों के हवाले कर दिया जाता है। सृजन, चिंतन और बौद्धिक कर्म में हमेशा विविधता होती है। यह हमें लोगों से असहमत और भिन्न होने का विवेक और साहस प्रदान करता है। यही कारण है कि फासिस्ट एकरूपता के विरुद्ध लेखक, कलाकार और चिंतक सबसे पहले प्रतिरोध करते हैं। यह अस्वाभाविक नहीं है कि वर्तमान असहिष्णुता का विरोध सबसे पहले हमारे देश के सैकड़ों लेखकों और बुद्धिजीवियों ने पुरस्कार वापस कर किया था। इसीलिए आज लेखकों और बुद्धिजीवियों पर सबसे ज्यादा हमले हो रहे हैं। 'बौद्धिकों को, रचनाकारों को, पत्रकारों और विचारकों को सबसे पहले निशाने पर इसलिए लेना जरूरी होता है क्योंकि ये ही पहले होते हैं जो समाज में असहमति का वातावरण बनाते हैं, फैलाते हैं। असहिष्णुता एक हथियार है लोगों को चुप कराने का। 'मॉब लिंचिंग' हथियार है एक को मारकर सभी असहमतों को सावधान और भयग्रस्त करने का। 'आशीष नंदी ने ठीक ही कहा है- 'भीड़ का मनोविज्ञान यह रहता है कि वह खुद दिमाग लगाकर नहीं चलती। भीड़ में व्यक्ति की सोच स्थगित हो जाती है और वह भीड़ के कहे के अनुसार काम करने लगता है। यह हमेशा होता है कि भीड़ अनियंत्रित रहती है। यह बात फ्रांसीसी क्रांति के वक्त ही साबित हो चुकी थी' (आशीष नंदी/'आजकल वोट की राजनीति ही राजनीति है'/'प्रभात खबर'/दीपावली विशेषांक-2017/पृ.-20, आशीष नंदी से मनोज मोहन की बातचीत पर आधारित)।

कट्टर धर्मान्धता, अंधश्रद्धा, साम्प्रदायिक घृणा और हिंसक उन्माद के दौर में आज सबसे बड़ा संकट समाज के उन बुद्धिजीवियों पर है, जो आज भी इन विषम परिस्थितियों में इन अंधेरी शक्तियों के खिलाफ सच के साथ खड़े हैं और जन साधारण को तार्किक, बौद्धिक और विवेक सम्पन्न बनाने की प्रक्रिया में संलग्न हैं। घृणा के प्रचारकों को ये लोग सबसे बड़े दुश्मन नजर आते हैं। उनके पास वह तार्किक और बौद्धिक क्षमता नहीं है कि उन्हें ज्ञान के क्षेत्र में चुनौती दे सकें। अत: शारीरिक और भौतिक रूप से उन्हें खत्म कर देना ही उनकी सोची-समझी रणनीति है। इसी रणनीति के तहत ही नरेन्द्र दाभोलकर, गोविन्द पानसरे, प्रो. कलबुर्गी और गौरी लंकेश की हत्याएं की गयीं। ये हत्याएं अलग-अलग न होकर एक दूसरे से जुड़ी हैं।

लेखकों, विचारकों और बुद्धिजीवियों की हत्याएं और समाज में फैलायी जा रही विचारहीनता, अवैज्ञानिकता और कूपमंडूकता अलग-अलग न होकर एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। विचारों पर बंदिशों का हाल यह है कि 'व्हाई आई एम नॉट ए हिन्दू' जैसी चर्चित किताब के लेखक, अंग्रेजी के लेखक कांचा इलैया की ताजा पुस्तक 'पोस्ट हिन्दू इंडिया' को प्रतिबंधित करने की मांग की गयी। यह सब देखकर लगता है कि क्या हम सचमुच एक लोकतांत्रिक देश और समाज में रह रहे हैं, जिसमें प्रतिपक्ष की महत्वपूर्ण भूमिका होती है? जहां विरोधी विचारों का सम्मान किया जाता है? अब तो बम्बई उच्च न्यायालय के न्यायाधीश एससी धर्माधिकारी को भी यह टिप्पणी करनी पड़ी- 'इस देश में हम ऐसी स्थिति में पहुंच गये हैं, जहां लोग अपनी राय भी अभिव्यक्त नहीं कर सकते। हर समय एक व्यक्ति कहता है कि वह अपनी राय अभिव्यक्त करना चाहता है पर कुछ लोग कहते हैं कि वे इसकी इजाजत नहीं देंगे। यह राज्य के हित में शुभ लक्षण नहीं है' (जस्टिस एससी धर्माधिकारी)/'द हिन्दू'/विशाखापट्नम/8 दिसम्बर, 2017, पृ.-1)।

भूमंडलीकरण की साम्राज्यवाद परस्त कॉरपोरेट हितों में संचालित नीतियों के लागू होने के बाद पिछले तीन दशकों से देश में लोकतंत्र के भीतर से जो सत्ता उभरी है, वह अपने चरित्र में पूरी तरह जन विरोधी है। एक जन विरोधी सत्ता का फासिस्ट सत्ता में तब्दील होते चले जाना उसकी नियति है। बड़ी पूंजी के हित में संचालित इन नीतियों के बाद देश में आम जनता की गरीबी, बेरोजगारी और बदहाली बढ़ी है। शासन धीरे-धीरे एक-एक कर राज्य द्वारा प्राप्त शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक सुरक्षा की सुविधाएं उससे छीनती चली गयी है। सार्वजनिक सम्पत्तियों की लूट बड़े पैमाने पर आज भी जारी है और यह भ्रष्टाचार का सबसे बड़ा जरिया है। इन सब कारणों से आम जन में गहरा गुस्सा और असंतोष है। फासिस्ट सत्ता की सबसे बड़ी सफलता यही है कि वह जनता के भीतर के असंतोष, गुस्से और आक्रोश को जाति, धर्म, रंग के आधार पर घृणा की दिशा में मोड़ देती है। फासिस्ट भीड़ में शामिल विचारहीन दंगाईयों और हत्यारों को इस व्यवस्था में अपना कोई भविष्य नजर नहीं आता। उन्हें अपनी नाराजगी, गुस्से और असंतोष की सही वजहें मालूम नहीं हैं। इसलिए वे फासिस्ट सत्ता के हाथ के हथियार बन जाते हैं। उनके लोकलुभावन नारों और झूठे वादों से भ्रमित होकर अंधराष्ट्रवादी जुनून में शामिल हो जाते हैं। अत: जन विरोधी, कॉरपोरेट परस्त आर्थिक नीतियों को बदले बिना इस फासिज्म से लड़ाई सिर्फ धोखा के सिवा और कुछ नहीं है। इसके लिए पिछली सरकारें कम जिम्मेदार नहीं हैं, जिस घूरे पर यह फासिज्म पनपा है उसे इकट्ठा करने का काम तो उसी ने किया है।

इधर सत्ता के शिखर पर पहुंचे हुए लोगों के साथ-साथ विविध संस्थाओं में बैठे लोग अवैज्ञानिकता और विचारहीनता को बढ़ावा दे रहे हैं। राजस्थान का एक मंत्री कहता है कि न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण के सिद्धान्त से एक हजार वर्ष पूर्व हमारे देश में गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त खोज लिया गया था। हाल-फिलहाल केन्द्रीय मानव संसाधन राज्य मंत्री सत्यपाल सिंह बयान देते हैं कि आज तक किसी ने बन्दर को आदमी होते नहीं देखा, इसलिए डार्विन के विकासवाद का सिद्धान्त गलत है और उसे पाठ्यपुस्तकों से बाहर कर देना चाहिए। इसी सत्यपाल सिंह ने कुछ माह पूर्व यह भी कहा था कि आईआईटी के छात्रों को यह शिक्षा देना गलत है कि हवाई जहाज का आविष्कार राइट बन्धुओं ने किया था, इसका आविष्कार तो शिवराम बापूजी तलपदे ने किया था। अभी-अभी कुछ दिनों पूर्व केन्द्रीय विज्ञान मंत्री हर्षवर्धन ने मणिपुर विश्वविद्यालय में आयोजित 10वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस में प्रधानमंत्री की उपस्थिति में कहा कि 'हमने हाल-फिलहाल ब्रह्माण्ड विज्ञानी स्टीफेन हॉकिंस को खोया है। दस्तावेजों के अनुसार उन्होंने सहानुभूतिपूर्वक कहा था कि वेदों में आइंस्टीन के ई = एमसी² से बेहतर सिद्धांत है।' 'डॉ. हर्षवर्धन जो खुद एक डॉक्टर हैं उन्होंने यह स्पष्ट नहीं किया कि किस वैदिक सिद्धांत के बारे में उन्होंने ऐसा कहा था। उनसे जब स्रोत के बारे में पूछा गया तो उन्होंने स्पष्ट नहीं किया और पत्रकारों के एक समूह से कहा कि 'आप मीडिया में हैं। यह आपको ढूंढना चाहिए कि इस कथन का स्रोत क्या है? अगर आप असफल होंगे तो मैं अपनी जानकारी के स्रोत का खुलासा करूंगा' (देखें, 'द हिन्दू'/विशाखापट्नम/17 मार्च-2018/पृ.-1)। धीरूभाई अम्बानी अस्पताल के उद्घाटन के वक्त खुद माननीय प्रधानमंत्री जी ने गणेश और कर्ण से जुड़ी मिथकीय धारणाओं को विज्ञान से जोड़ते हुए कहा था-'हम गणेश जी की पूजा करते हैं। कोई प्लास्टिक सर्जन होगा उस जमाने में जिसने मनुष्य के शरीर पर हाथी का सर रखकर प्लास्टिक सर्जरी का प्रारंभ किया होगा।' इस तरह के पुनरुत्थानवादी विचार हमारे समाज में पहले से मौजूद रहे हैं और गांवों के चौपालों में भी ऐसी बातें होती रही हैं पर सत्ता के शीर्ष पर बैठे लोग जब ऐसी बातें करते हैं तो समाज पर उसका गहरा असर पड़ता है। सरकारी नीतियों में भी ये विचार परिलक्षित होने लगते हैं। प्रो. कलबुर्गी ने इन परिस्थितियों को समझते हुए कभी कहा था-'भावना से संचालित समाज में विद्वता और वस्तुपरकता के लिए कोई प्यार और लगाव नहीं होता।' प्यार और लगाव का न होना उतना खतरनाक नहीं है, जितना विद्वता और वस्तुपरकता के प्रति जानलेवा घृणा। 'विद्वता और वस्तुपरकता' की हत्या के बल पर आखिर हम कैसा समाज बनाने की दिशा में बढ़ रहे हैं। ऐसे मध्ययुगीन विचार मध्ययुगीन हत्याओं को प्रेरित करेगा। इन हत्याओं को आखिर कब तक बर्दाश्त किया जाता रहेगा? यह सिलसिला अभी शुरू हुआ है और रुकने वाला नहीं है।

'यह नयी राजनैतिक शैली है कि हत्या की नहीं

बिहार में फिर ठनी

DELHIN/2014/60328

वर्ष : 4 अंक : 6 सामयिक पत्रिका, 16 सितंबर से 30 सितंबर, 2017

दुनिया इन दिनों

समाज, साहित्य और संस्कृति का अक्स

मुक्तिबोध के 'अच्छे दिन'

PRINCIPAL
Ranveer Tularam P.G. College
Bhai, Distt.- Durg (C.G.)

विष्णु खरे

उबाऊ गद्य की निर्मिति

सियाराम शर्मा

मुक्तिबोध नयी कविता के दौर के प्रतिनिधि कवि हैं। वे अपने युग की [illegible] समस्याओं, संघर्षों, प्रश्नों और चुनौतियों से बहुत गंभीरतापूर्वक टकराए। उन्होंने [illegible] चिंतन-मनन और सूक्ष्म विश्लेषण किया। [illegible] ने बहुत ही [illegible] और [illegible] निष्कर्षों तक पहुंचे। यही कारण है कि कविता का पूर्व प्रतिमानों से [illegible] बहुत सारी अवधारणाओं और [illegible] का व्यापक इस्तेमाल किया। नयी कविता के सौन्दर्यशास्त्र को विकसित करने के साथ-साथ [illegible] हिन्दी में [illegible] सौन्दर्यशास्त्र को विकसित करने का [illegible] प्रयास किया। मुक्तिबोध के [illegible]

परिस्थितियों, प्रवृत्तियों, गतिविधियों और उसमें पले हुए व्यक्तियों का संवेदनात्मक ज्ञान जब तक समीक्षक को नहीं है, (और वह हो नहीं सकता जब तक कि उसने वर्ग, श्रेणी या समाज की व्यापक जिन्दगी में समीक्षक की जिन्दगी की हिस्सेदारी न हो) तब तक समीक्षक की साहित्य-समीक्षा कुतिया के उस बच्चे के समान है जिसकी आंखें नहीं खुली हैं... लेखक जीवन की विभिन्न मनोवृत्तियों, स्थितियों आदि-आदि का अंकन करने का प्रयत्न करता है। समीक्षक को इन जीवन सत्यों से अधिक परिचित होने की आवश्यकता है, तभी वह लेखक की सहायता कर सकता है, उसकी चेतना की परिधि को विस्तृत कर सकता है, अन्यथा नहीं। लेखक की सचमुच सहायता करने वाले समीक्षक, जीवन-सत्यों से लेखक से भी अधिक परिचित होते हैं। तभी वे लेखक द्वारा प्रस्तुत की गयी जीवन-समीक्षा की समीक्षा कर सकते हैं।' (मुक्तिबोध रचनावली: पांच/राजकमल प्रकाशन/पेपरबैक संस्करण 1985/पृ.-83,86) । हालांकि मुक्तिबोध यह भी मानते हैं कि एक बड़ा

आलोचना के मूल में सक्रिय वर्ग दृष्टि

सैद्धान्तिक और व्यावहारिक आलोचनात्मक चिंतन के मूल में [illegible]

मुक्तिबोध ने आलोचकों और आलोचना पर बहुत [illegible] [illegible] ऐतिहासिक, [illegible] तथा मनोवैज्ञानिक [illegible] तथा मनोवैज्ञानिक और [illegible] [illegible] रचनात्मक चिन्तन के [illegible]

[illegible] एक [illegible] होते हुए भी मुक्तिबोध आलोचक की भूमिका को रचनाकार से भी ज्यादा महत्वपूर्ण और जिम्मेदारी भरा काम मानते थे। उनके अनुसार 'साहित्य विवेक मूलतः जीवन विवेक है'। [illegible] साहित्य की महत्वपूर्ण कसौटी जीवन का सत्य है और जीवन के इस सत्य को आलोचक को लेखक

“

मुक्तिबोध हिन्दी के उन गिने-चुने लेखकों और समीक्षकों में हैं जिन्होंने आधुनिक साहित्य की आलोचना का नया शास्त्र विकसित किया।

से भी ज्यादा पहचानने की जरूरत होती है। वह इसलिए कि लेखक जिस जीवन को उद्घाटित करना चाहता है, उसे उसकी समझ एकांगी, अधूरी और विकृत हो। ऐसे में एक समर्थ आलोचक ही उसे उसकी कमियों का अहसास करा सकता है। इसीलिए मुक्तिबोध का मानना है कि- 'आलोचक या समीक्षक का कार्य, वस्तुतः, रचनाकार या लेखक से भी अधिक उत्तरदायित्वपूर्ण और सृजनशील होता है। उसे एक साथ जीवन के समुद्र में डूबना पड़ता है, और उससे उबरना भी पड़ता है, कि जिससे लहरों का पानी उसकी आंखों में न घुस पड़े... असल में, वास्तविक जीवन की संवेदनात्मक समीक्षा-शक्ति के अभाव में, साहित्य के क्षेत्र की समीक्षा शक्ति थोथी होती है। इसीलिए समीक्षक का आदि कर्तव्य वास्तविक जीवन की संवेदनात्मक समीक्षा शक्ति का विकास करना है। जीवन की

लेखक खुद का सबसे बड़ा आलोचक होता है। [illegible] दूसरों की प्रशंसा के साथ-साथ अपनी आलोचना को भी स्वविवेक की कसौटी पर कसकर देखता है।

मुक्तिबोध हिन्दी के उन गिने-चुने लेखकों और समीक्षकों में हैं, जिन्होंने आधुनिक साहित्य की आलोचना का नया शास्त्र विकसित किया। 'एक साहित्यिक की डायरी' में मुक्तिबोध ने नयी रचनाशीलता से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर गैर-पारम्परिक ढंग से बात की। आधुनिक रचना-विधान से जुड़े ये मुद्दे नये साहित्य शास्त्र की भूमिका तैयार करते हैं। मुक्तिबोध के अनुसार सौन्दर्य सिर्फ रचना-विधान तक सीमित न रहकर आन्तरिक होता है। सौन्दर्य की यह आन्तरिकता, वस्तुतः अनुभूति के मूल में स्थित मानव सम्बन्धों, विश्वदृष्टि तथा जीवन मूल्यों से बनती है। यह जीवन मूल्य, मानव सम्बन्ध तथा विश्वदृष्टि, उस वर्ग की विश्वदृष्टि होती है जो साहित्यिक-सांस्कृतिक क्षेत्र में अपने को अभिव्यक्त करती है। (मुक्तिबोध रचनावली: पांच/वही, पृ.-54)। इसीलिए मुक्तिबोध कृति के मनोवैज्ञानिक और सौन्दर्यात्मक पहलू के विवेचन के साथ-साथ उसके समाजशास्त्रीय और वर्गीय पक्ष को महत्वपूर्ण मानते हैं। यही कारण है कि मुक्तिबोध के समस्त साहित्यिक, कलात्मक और सौन्दर्यशास्त्रीय चिंतन में वर्ग दृष्टि निरंतर सचेत और सक्रिय रही है। वर्ग दृष्टि की यह स्पष्टता उन्हें मार्क्सवाद से गहरे लगाव और जुड़ाव से प्राप्त हुई थी। उन्होंने खुद स्वीकार किया है, 'क्रमशः मेरा झुकाव मार्क्सवाद की ओर हुआ। अधिक वैज्ञानिक, अधिक मूर्त और अधिक तेजस्वी दृष्टिकोण

समकालीन
जनमत
संयुक्तांक अक्टूबर-नवंबर 2016/ रु. 30.00

स्मरण
मुक्तिबोध-त्रिलोचन

यूपी चुनाव : जोड़तोड़ का गर्म होता बाजार
महिला आंदोलन और समान नागरिक संहिता
पंकज चतुर्वेदी और अमिताभ बच्चन की कविताएं

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

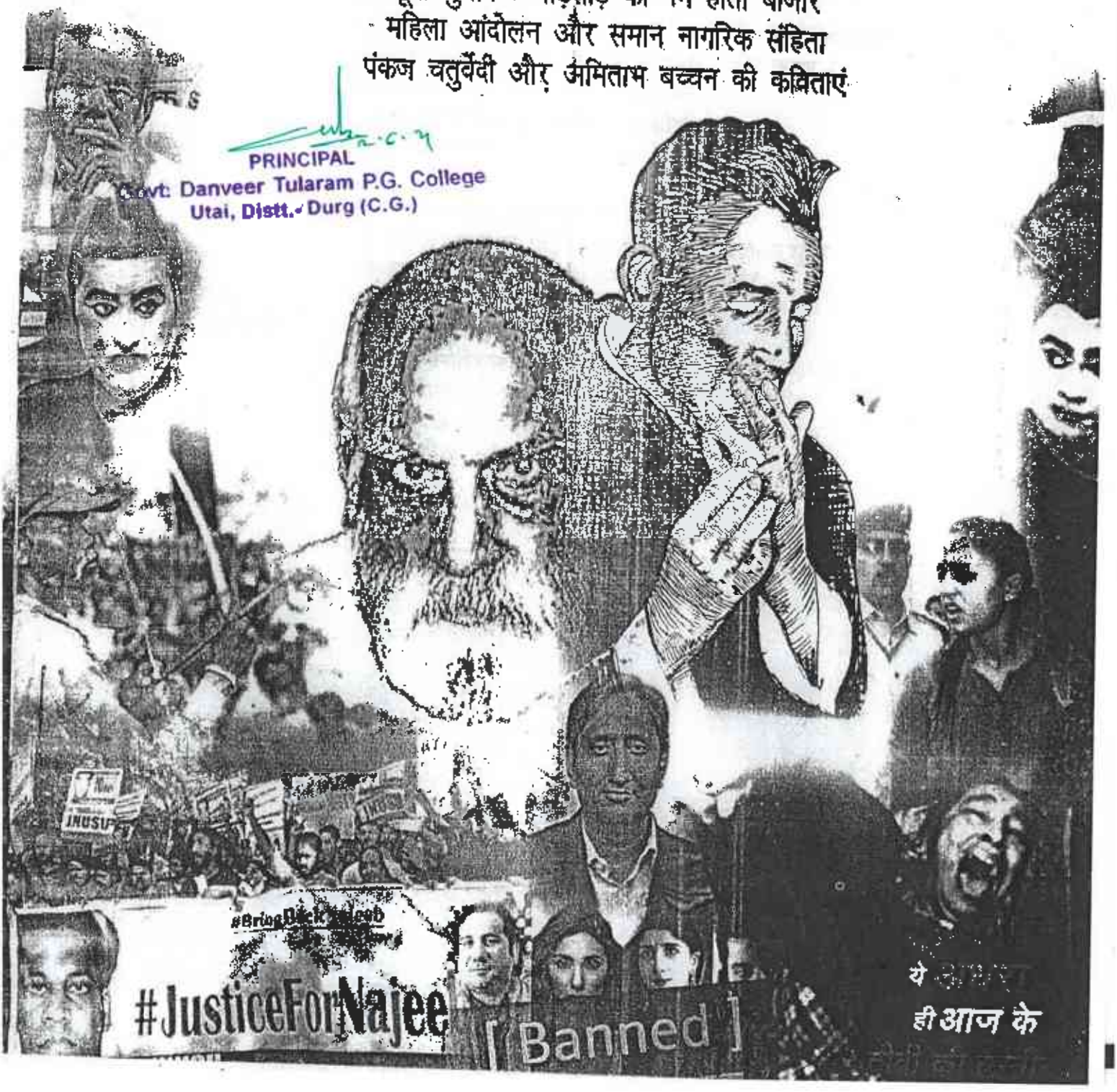

आलोचना के मूल में सक्रिय वर्ग दृष्टि

सियाराम शर्मा

मुक्तिबोध नयी कविता के दौर के प्रतिनिधि कवि हैं। वे अपने युग की रचनात्मक समस्याओं, सीमाओं, प्रश्नों और चुनौतियों से बहुत गंभीरतापूर्वक टकराये। उन्होंने उस पर गहन चिंतन-मनन और सूक्ष्म विवेचन, विश्लेषण किया। अतः वे बहुत ही सुसंगत और मौलिक निष्कर्षों तक पहुंचे। यही कारण है कि 'कविता के नये प्रतिमान' में नामवर जी ने उनकी बहुत सारी अवधारणाओं और निष्कर्षों का सार्थक इस्तेमाल किया। नयी कविता के सौंदर्यशास्त्र को विकसित करने के साथ-साथ मुक्तिबोध ने हिंदी में मार्क्सवादी सौंदर्यशास्त्र को विकसित करने का मौलिक प्रयास किया। मुक्तिबोध के सैद्धांतिक और व्यावहारिक आलोचनात्मक चिंतन के मूल में वर्ग दृष्टि निरंतर सचेत और सक्रिय रही है।

मुक्तिबोध ने आलोचकों और आलोचना पर बहुत ही उक्ति और मार्मिक टिप्पणियां की हैं। वे आलोचना में ऐतिहासिक, समाजशास्त्रीय तथा मनोवैज्ञानिक, सौंदर्यात्मक विवेचन की एकात्मता को फलीभूत होते हुए देखना चाहते थे। मुक्तिबोध के अनुसार एक कृति की सच्ची आलोचना उसके ऐतिहासिक, समाजशास्त्रीय तथा मनोवैज्ञानिक और सौंदर्यात्मक विवेचन करते हुए उसके अंतर्संबंधों की पड़ताल पर निर्भर करती है। वे आलोचना में फैसले और निर्णय की हड़बड़ी से बचने की सलाह देते हैं। उन्होंने आलोचकों को साहित्य का दारोगा कहकर उसकी सीमाओं की ओर ध्यान भी दिलाया। उनके आलोचनात्मक चिंतन की सबसे बड़ी खासियत उनकी रचनात्मक ईमानदारी और बेचैनी है। वे साहित्य की छोटी से छोटी समस्या को भी अपनी तीक्ष्ण संवेदना की नोक पर आंतरिक पीड़ा और छटपटाहट के साथ हल करने की कोशिश करते हैं। इसीलिए उनके समय के बहुत से विचार और सिद्धांत जो दूसरों के लिए सरल, सहज और निर्विकार थे, उसे वे अपने रचनात्मक चिंतन के धरातल पर समस्याग्रस्त पाते हैं।

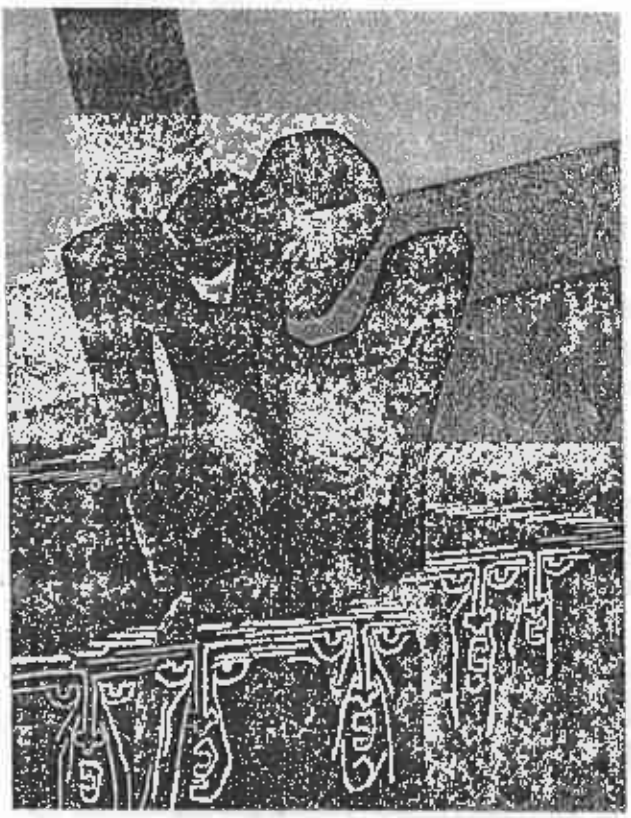

■■■

मूलतः एक रचनाकार होते हुए भी मुक्तिबोध आलोचक की भूमिका को रचनाकार से भी ज्यादा महत्वपूर्ण और जिम्मेदारी भरा कार्य मानते थे। उनके अनुसार 'साहित्य विवेक मूलतः जीवन विवेक है।' अतः साहित्य की महत्वपूर्ण कसौटी जीवन का सत्य है और जीवन के इस सत्य को आलोचक को लेखक से भी ज्यादा देखने-समझने की जरूरत होती है। यह संभव है कि लेखक जिस जीवन को उद्घाटित करना चाहता हो, उसे उसकी समग्र एकांगी, अधूरी और विकृत हो। ऐसे में एक समर्थ आलोचक ही उसे उसकी सीमाओं का अहसास करा सकता है। इसीलिए मुक्तिबोध का मानना है कि- "आलोचक या समीक्षक का कार्य, वस्तुतः, कलाकार या लेखक से भी अधिक तन्मयतापूर्ण और

82

सबलोग

अगस्त 2017

कैसा हिन्दुस्तान, मरता जहाँ किसान

- भारत की भूटान नीति और चीन का भय
- महागठबन्धन की महामुश्किल
- गुजरात मॉडल का एक पहलू यह भी

पूँजीवादी कृषि के अन्तर्विरोध

सियाराम शर्मा

हरित क्रान्ति के बाद आधुनिक खेती की प्रक्रियाओं ने हमारे देश की भूमि की उर्वरा शक्ति को कमजोर किया है। तथाकथित दूसरी हरित क्रान्ति इस प्रक्रिया को और तेज कर देगी। यह बहुत चिन्ता का विषय है कि एक तरफ एक अरब जनसंख्या के भोजन के लिए ज्यादा से ज्यादा खाद्यान्न की जरूरत है, तो दूसरी ओर जमीन की उत्पादकता निरन्तर घट रही है। भारतीय कृषि शोध संस्थान ने अपनी ताजा रिपोर्ट में यह बताया है कि देश के कुल 14 करोड़ हेक्टेयर कृषि योग्य जमीन में से 12 करोड़ हेक्टेयर की उत्पादकता निरन्तर कम हो रही है।

लेखक सामाजिक और साहित्यिक विषयों के गम्भीर अध्येता और शासकीय दानवीर तुलाराम महाविद्यालय, वतई (छत्तीसगढ़) में हिन्दी के प्राध्यापक हैं।
+919329511624
prof.siyaramsharma@gmail.com

पूँजीवाद की मुख्य चालक शक्ति मुनाफा है। अतृप्त मुनाफे की प्यास के लिए वह प्रकृति और मानवीय श्रम का अन्धाधुन्ध दोहन करता है। ऐसा करते हुए वह न तो मनुष्यता की अगली पीढ़ी के बारे में सोचता है और न ही प्राकृतिक सन्तुलन के बारे में। स्वार्थ और लूट की यही केन्द्रीयता पूँजीवाद को मनुष्य और प्रकृति विरोधी बना देता है। अकूत मुनाफे की भूख ने जैसे हरे-भरे जंगलों को काटकर उसे वीरान बनाया, नदियों को प्रदूषित किया, हवा को जहरीला बनाया, पहाड़ों को खोद डाला, वैसे ही आज भूमि को बंजर बना रहा है। आज कृषि के क्षेत्र में जिन बड़ी-बड़ी कम्पनियों को प्रवेश दिया जा रहा है, उनकी यह आम प्रवृत्ति रही है कि ज्यादा-से-ज्यादा मुनाफे के लिए जमीन का भरपूर दोहन करते हैं। अत्यधिक उत्पादन के लिए भारी मात्रा में रासायनिक खादों, कीटनाशकों, खरपतवार नाशकों और भारी मशीनों के उपयोग के कारण बहुत ही जल्द जमीन के पोषक तत्त्वों का नाश हो जाता है। भूमिगत जल सूख जाते हैं और पानी जहरीला हो जाता है। अत्यधिक दोहन के कारण भूमि की उर्वरा शक्ति खत्म होने लगती है और कुछ ही वर्षों में हरी-भरी जमीन बंजर में तब्दील हो जाती है। बंजर जमीन और शोषित किसानों को अपने हाल पर छोड़कर ये कम्पनियाँ पुनः किसी उपजाऊ जमीन की तलाश में पृथ्वी के किसी और भू-भाग की ओर निकल पड़ती हैं। हमारे देश में कारपोरेट फार्मिंग की जगह एक ऐसी कृषि अर्थव्यवस्था की जरूरत है जो किसान हितैषी होने के साथ-साथ पारिस्थितिकी की दृष्टि से भी टिकाऊ हो।

बड़े पैमाने पर शुरू हुए पूँजीवादी कृषि के पूर्व मवेशियों के मल-मूत्र, फसलों के अनुपयोगी हिस्से और मनुष्य द्वारा उत्सर्जित अपशिष्ट पुनः कृषि योग्य जमीन में लौट आते थे, पर आज उत्पादन और उपभोग की भिन्न-भिन्न भौगोलिक स्थितियों ने इस प्राकृतिक सन्तुलन को विनष्ट कर दिया है। इसके कारण जमीन में बंजरपन की प्रवृत्ति बढ़ी है। पूँजीवादी उत्पादन और उपभोग की प्रवृत्ति ने मनुष्य और प्रकृति के बीच नैसर्गिक सम्बन्ध को विनष्ट कर दिया है। इसके कारण भूमि के बंजरपन की समस्या बढ़ी है।

कृषि सिर्फ वित्तीय क्रिया-कलाप नहीं

इफको का लक्ष्य यही
हो खाद का प्रयोग सही

IFFCO
पूर्णतः सहकारी स्वामित्व

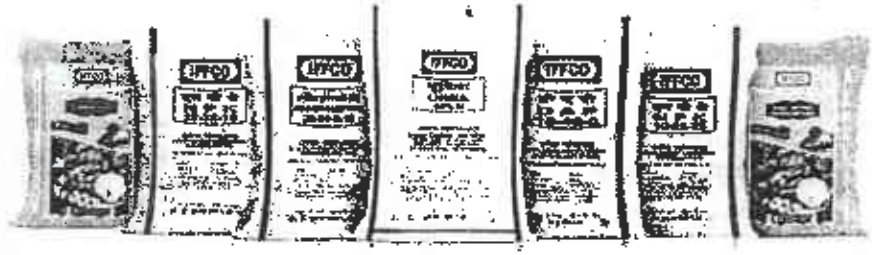

नीम लेपित यूरिया | एन पी के | डी ए पी | एन पी | बायो फर्टिलाइजर
वॉटर सोल्यूबल फर्टिलाइजर | माईक्रो न्यूट्रीएन्ट फर्टिलाइजर | सल्फर

Follow us :

IFFCO
Wholly Owned by Cooperatives

INDIAN FARMERS FERTILISER COOPERATIVE LIMITED
IFFCO Sadan, C-1 District Centre, Saket Place, New Delhi - 110017, INDIA
Phones : 91-11-26510001, 91-11-42592626, Website : www.iffco.coop

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

अक्सर 43

संगमन 21 का आधार वक्तव्य

इस देश की संवेदना एक है

जेंडर का सवाल

दलित साहित्य की पृष्ठभूमि और महत्व

विकास नीति और वर्तमान भारतीय कृषकों की समस्याएँ

महाराष्ट्र में प्रबोधन की परंपरा

असंतोष में ही रचनात्मकता का जन्म

प्रतिरोध और रचनात्मकता की चिंता

प्रतिरोध का आंदोलन और बुद्धिजीवी

लेखन के उपेक्षित किंतु जरूरी मुद्दे

आधुनिक मराठी कविता में प्रतिरोध

प्रतिरोध को लोक के बीच ले जाने की जरूरत

हमारे समय में रचना और प्रतिरोध

प्रतिरोध और साहित्य

आज के समय में मीडिया का चरित्र

लेखन केवल लेखन भर नहीं, बल्कि एक 'एक्टिव पार्टीसिपेशन' हो

कला पर एक बातचीत

किसान केन्द्रित कविताओं पर हावी मध्यवर्गीय दृष्टि

सियाराम शर्मा

किसान केन्द्रित कविताओं पर हावी मध्यवर्गीय दृष्टि

प्रतिरोध के बहुत सारे क्षेत्रों पर बात हुई; स्त्री, दलित, आदिवासी; मुझे लग रहा है कि एक पक्ष छूट रहा है और वह है किसान। यदि हम केवल आँकड़ों की बात करें तो कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश और महाराष्ट्र किसान आत्महत्याओं में सबसे आगे है। मैं अपनी बात सिर्फ हिन्दी में लिखी गई उन कुछ कविताओं पर केन्द्रित करूँगा जो किसानों को केन्द्र में रखकर लिखी गई हैं और थोड़ी सी उसकी जाँच-परख की कोशिश भी करूँगा। मैं सबसे पहले मुक्तिबोध से अपनी बात शुरू करना चाहता हूँ। उनकी एक कविता है 'बहुत शर्म आती है', वे लिखते हैं :-

बहुत शर्म आती है मैंने
खून बहाया नहीं तुम्हारे साथ
बहुत तड़प कर उठे वज्र-से
गलियों के जब खेतों-खलिहानों के हाथ
बहुत खून था छोटी-छोटी पंखुड़ियों में
जो शहीद हो गयीं किसी अनजाने कोने
कोई भी न बचे,
केवल पत्थर रह गए तुम्हारे लिए अकेले रोने

मित्रो, जब मैं आज के अपने समाज को देखता हूँ तो पाता हूँ कि पिछले 15 वर्षों में तीन लाख से ज्यादा किसानों ने आत्महत्याएँ की हैं लेकिन इस देश की मौजूदा नीतियों, समाज के बुद्धिजीवियों और लेखकों के लिए यह गंभीर समस्या कोई बड़ी चिंता का विषय नहीं है। तो क्या यह एक पत्थर दिल समाज है? मुक्तिबोध ने यह कविता उस समय लिखी थी, जब देश में तेलंगाना आंदोलन चल रहा था। उस आंदोलन में अपनी भागीदारी को लेकर कहीं न कहीं मुक्तिबोध चिंतित रहे होंगे। वे अपने भीतर शर्म महसूस कर रहे हैं कि उन शहीदों

अक्षर 43

के साथ मैं नहीं था। सवाल यह है कि आज कितनी शिद्दत के साथ या कितनी पीड़ा के साथ हम ऐसा ही महसूस करते हैं? इस पर विस्तार से बात करने की बहुत ज्यादा गुंजाइश नहीं है इसलिए मैं कुछ उदाहरणों के माध्यम से अपनी बात कहना चाहूँगा।

प्रेमचंद की एक कहानी 'पूस की रात' से आप सभी परिचित होंगे। उसी को केन्द्र में रखकर देखें तो पता चलता है कि पिछले 67-68 सालों में हमारे किसानों की क्या दुर्गति हुई है? आज जिस विकास का डंका पीटा जा रहा है अगर किसानों को उसके सामने रखकर देखें, तो उसकी कलई खुल जाती है। 'पूस की रात' की शुरूआत होती है कि हल्कू ने कुछ पैसे बचाकर रखे हैं। कंबल खरीदने के लिए। उसी समय महाजन उससे पैसा माँगने आ जाता है। वह देना नहीं चाहता लेकिन फिर भी उसे देना पड़ता है। कहानी के अंत में हम देखते है कि उस पूरी ठिठुरती हुई रात में अपने कुत्ते के साथ संघर्ष करता हुआ वह किसान अंततः अलाव जलाता है और फिर हल्की नींद में सो जाता है। उसे यह एहसास हो रहा है कि उसके खेत, जो पूरी तरह से तैयार हैं, वे चरे जा रहे हैं, बरबाद किए जा रहे हैं, फिर भी वह उठकर जाता नहीं है। कुत्ता बार-बार उसे एहसास दिला रहा है कि तुम्हारे खेतों को कोई चर रहा है लेकिन वह निष्क्रिय है, उठता नहीं है। कहीं न कहीं प्रकारान्तर से उसे लगता है कि अगर आज मैं इस फसल को बचा भी लूँ, तो खलिहान से अनाज को घर तो जाना नहीं है। तो आज उसे बचाकर भी क्या करूँगा? मुझे लगता है कि उसका अपनी उगाई फसल को चर जाने देना एक आत्मघाती कदम ही था। आप उसे भले ही सॉफ्ट कदम कह लें, लेकिन यह था आत्मघाती कदम ही। एक उदाहरण और, अभी-अभी जिसे 'फ्रंटलाईन' में पढ़कर मैं सिहर गया। कर्नाटक का एक किसान जिसने गन्ने उगाए थे, वह दो वर्षों से गन्ना उगा रहा था और मिल से प्राप्त होने वाला दो वर्षों के गन्ने का बकाया बाकी था। आप सोचिए कि दो वर्षों से उसका घर कैसे चल रहा होगा? बच्चे कैसे पढ़ रहे होंगे? किस तरह से उसे कर्ज लेना पड़ा होगा? और अंत में अपने ही उगाए हुए गन्ने को उसने आग लगाई और उसमें कूदकर अपनी जान दे दी। ये एक औपनिवेशिक शासन से भारतीय लोकतांत्रिक शासन में किसानों की विकास यात्रा है मित्रो। पहले वह किसान निराशा में अपनी फसल को चर जाने दे रहा था। यातना यही थी, जो आज इस कदर बढ़ गई है कि वह अपनी ही फसल को आग लगाता है और उसमें कूदकर अपनी जान दे देता है। ये हमारे लोकतांत्रिक विकास का सबसे बड़ा सच है। सबसे बड़ा यथार्थ और सबसे बड़ी विडम्बना भी। मुझे हमेशा लगता है कि साहित्य कहीं न कहीं प्रतिरोध का एक बिम्ब रचता है, क्योंकि यही उसकी प्रकृति है। साहित्य स्वभाव से ही प्रतिरोधी होता है। एक छोटा सा बीज भी जब अंकुरित होता है तो सबसे पहले वह अपने आप को फाड़ता है, तोड़ता है। अपनी संरचना को ध्वस्त करता है और उसके बाद खुद को रूपान्तरित करता हुआ, वह अपने ऊपर की मिट्टी को हटाता हुआ बाहर आता है। प्रतिरोध उसकी प्रकृति में है। प्राकृतिक सृजन में भी हमें यही प्रतिरोध मिलता है। अगर आप किसी भी चीज का सृजन करना चाहते हैं तो आप बिना प्रतिरोध के सृजन कर नहीं सकते। प्रतिगामी शक्तियाँ हमेशा मौजूद रहती हैं और एक सृजनधर्मी व्यक्ति के लिए उसका प्रतिरोध जरूरी है।

मित्रो, मेरी एक चिंता इधर लगातार रही है। मैं उससे चिंतित हूँ और अपनी चिंता आपसे साझा करना चाहता हूँ। सन सत्तावन के विद्रोह में किसानों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

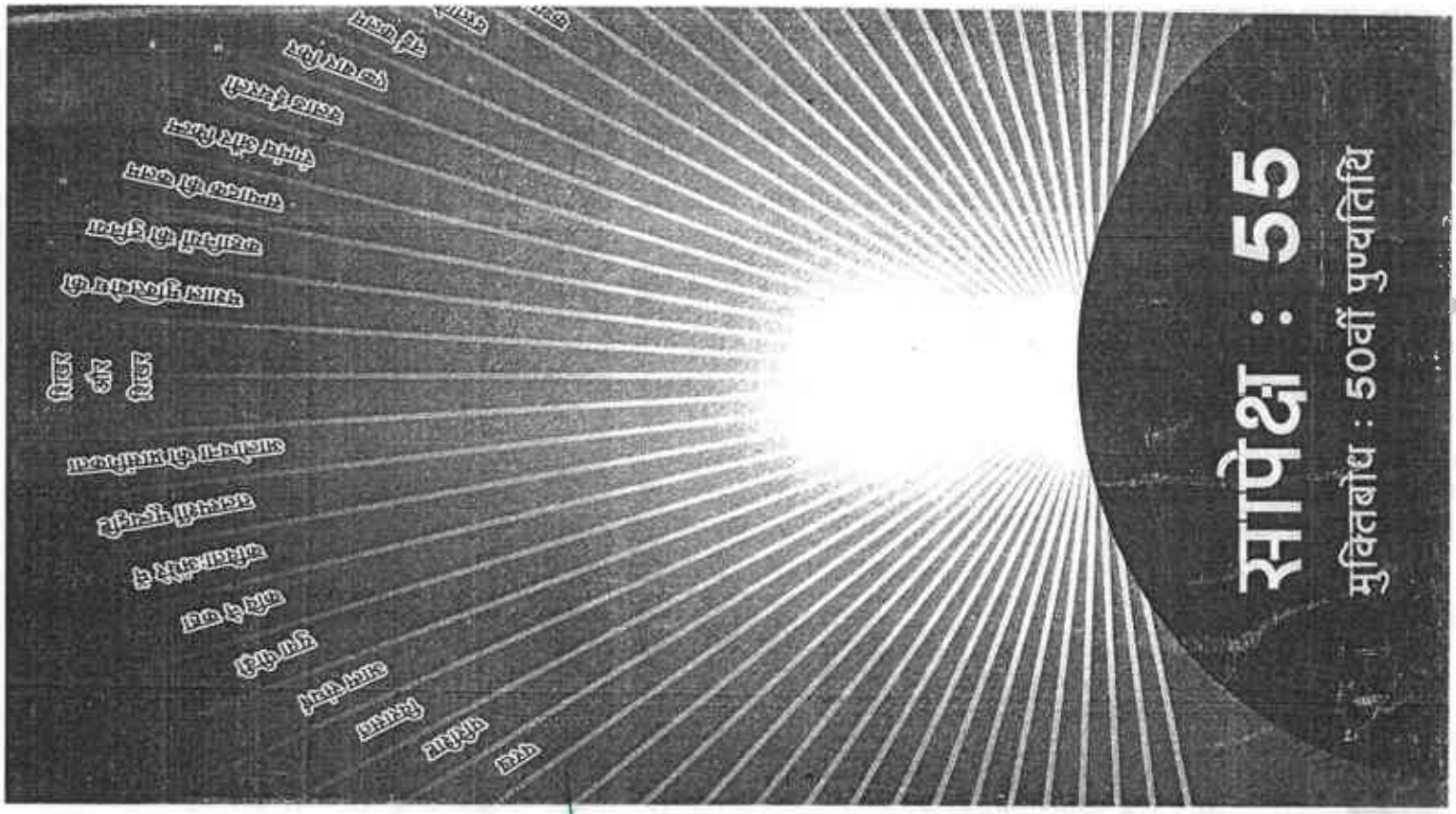

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

सापेक्ष : 55

मुक्तिबोध : 50वीं पुण्यतिथि

11 सितम्बर 1964 - 11 सितम्बर 2014

हमारे समय में अंधेरा अधिक गहराता जा रहा है। घोर आपराधिक समय में रहने का हमें अनुभव हो रहा है। चतुर अपराधियों से हम घिरे हुए हैं। मुक्तिबोध की 'अंधेरे में' कविता में हम आशंका से ग्रस्त दिखाई पड़ते हैं कि देश में कुछ ऐसा-वैसा न हो जाए। उसके ~~...~~ आदि जैसे यह था कि मार्शल लॉ लगाए जाने के लिए गुप्त सैन्य अभियान चलाये जा रहे हैं। उस अभियान में प्रसिद्ध पत्रकार, विचारक और कवि आदि भी शामिल हो गए हैं। यह कोरी फैंटेसी नहीं, इसका आधार था। आज मार्शल लॉ वाली बात भले नहीं रह गई है, लेकिन इससे मुक्तिबोध की चिन्ता अप्रासंगिक नहीं हो जाती। आज हम ज्यादा चालाक अपराधियों से घिरे हुए हैं। कहीं ऐसा-वैसा न हो जाए उसके लिए जगह बन रही है। अंधेरा ज्यादा है।

'अंधेरे में' अंधेरे से लड़ने की कविता है। लड़ने और लड़ने में फर्क होता है। एक लड़ाई होती है अपनी जगह बनाने के लिए। जगह बन जाने के बाद उस लड़ाई की प्रासंगिकता समाप्त हो जाती है। 'अंधेरे में' कविता की लड़ाई वैसी तात्कालिक नहीं है। इसलिए यह प्रासंगिक है और आगे भी रहेगी। यह विद्रोही चिन्तन और व्यवहार की कविता है। स्वयं कवि इसका प्रमुख किरदार है। इसे हम एक विद्रोही की आत्मकथा के रूप में भी पढ़ सकते हैं।

— 85, सूर्यालय विहार
पिपलानी, भोपाल - 462021 (म.प्र.)
मो. 9406584868
ई-मेल: singhranjansudhir@gmail.com

* * *

सियाराम शर्मा

'सत्ता के साथ सत्य के निर्णायक युद्ध' के कवि

बड़ी और महान रचनाएं व्यक्ति के स्तर पर भी महान व्यक्तियों के भीतर से आकार ग्रहण करती हैं। स्वार्थ के कीचड़ में धंसे, कदम-कदम पर समझौता करने वाले टुच्चे व्यक्तियों से कभी बड़ी रचना संभव नहीं होती। रचनाकार कभी ऐसा भ्रम पैदा करने की कोशिश करता भी है तो उसके बारे नाटकीय कौशल और आडम्बरों के बावजूद जीवन और रचना के बीच फांक दिखायी पड़ जाती है। भाषा के आवरण के भीतर से वह दरार साफ-साफ झांकती है। मुक्तिबोध देश, दुनिया, समाज और व्यक्ति की समस्याओं, पीड़ाओं और यातनाओं से सम्पृक्त कवि थे। इस सब को लेकर उनके व्यक्तित्व में गहरा उद्वेलन और तनाव था। आत्म-चेतस और विश्व-चेतस होने के कारण उन्हें खुद अपनी जिम्मेदारियों और भूमिकाओं का अहसास भी था। अतः वह खुद से खिन्न और असंतुष्ट रहते थे। वे व्यक्तिगत स्तर पर अत्यन्त ईमानदार थे और उनमें एक गहरी नैतिक छटपटाहट थी। मुक्तिबोध की अधिकांश रचनाएं एक बेचैन और ईमानदार व्यक्ति के नैतिक छटपटाहट और ज्ञान के गहरे तनाव की कोख से जन्मी हुई रचनाएं हैं। अतः उनमें अंदर जीवन द्वन्द्व उपस्थित है।

जीवन और रचना के बीच की संगति ही रचना को विश्वसनीय, ईमानदार और प्रभावी बनाती है। इसी के कारण उसमें सत्य का अहसास, खून पकने वाली तीव्रता और क्रांतिकारी ऊर्जा और आवेग का सृजन होता है। ऐसी रचनाओं में ही हीरे जैसी ठोस आत्मपरकता और पारदर्शिता होती है। इसमें जीवन की धड़कन, उत्तेजनाओं की आंच, बुद्धि के तेज और हृदय की लपट को सिद्दत के साथ महसूस किया जा सकता है। टी० एस० इलियट जैसे विचारक भले ही रचने वाले और भोगने वाले के बीच अन्तर पर बल देते रहे हों पर कबीर, निराला, मुक्तिबोध जैसे कवि यह सिद्ध करते हैं कि जिये और रचे गये जीवन

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

संस्थापक

मार्कण्डेय

भूमण्डल की स्वप्नहीन रात में मुक्तिबोध

सियाराम शर्मा

हम चाँद और तारों से रहित स्याह अँधेरी रात के हिंस्र और बर्बर समय में रहते हैं, जहाँ नींद की जगह आँखों में शीशे की किरचें चुभती हैं। दुःस्वप्न शिकारी बाज की तरह हमारा पीछा करते हैं। आत्महत्या कर चुके लाखों किसानों की विधवा स्त्रियों और बच्चों के विलाप हमें बेचैन करते हैं। अपने जल, जंगल और जमीन से विस्थापित आदिवासियों के बहते हुए रक्त से मेरे वस्त्र भीगने लगते हैं। असंख्य मजदूरों के खून और पसीने की बहती नदी को हर क्षण कोई तपती मरुभूमि लील जाती है। असमय बूढ़े हो चुके बेरोजगार नौजवानों की भविष्यहीन आँखें मुझे उदास कर जाती हैं। रातों की नीरवता में उभरती कई निर्भया की एक साथ चीखें, हृदय में तीखी बरछी की तरह चुभती है। दूसरी तरफ लाखों मनुष्यों की कुर्बानियों से पिछली सदी में प्राप्त किये गये सारे मानवीय मूल्य, आदर्श और अधिकार बर्फीले पानी में डूबो दिये गये हैं। दुनिया बड़ी बाजार हो गयी है और मनुष्य को उपभोक्ता मात्र में निःशेष कर देने की साजिशें चल रही हैं। समाजवाद के समक्ष उत्पन्न कुछ समस्याओं के बाद इतिहास और विचारधारा के अंत की घोषणाओं के साथ पूँजी की बर्बर लूट और शोषण को ही मानवीय सभ्यता की अंतिम नियति कहा जा रहा है। आज दुनिया में वर्ग-संघर्ष नहीं, सभ्यताओं के संघर्ष की दुहाई दी जा रही है। उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद से हम ठीक से आज़ाद भी नहीं हुए थे कि नवसाम्राज्यवादी गुलामी की अदृश्य बेड़ियों ने हमें जकड़ लिया है। लोकतंत्र

सम्पर्क :
7/35, इस्पात नगर, रिसाली, भिलाई नगर
जिला- दुर्ग, छत्तीसगढ़- 490006
मो. : 09329511024

ISSN : 2231-5187

साखी

प्रेमचंद साहित्य संस्थान का त्रैमासिक

श्रद्धांजलि : केदारनाथ सिंह

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

शहर एक स्त्री की अनुपस्थिति का दूसरा नाम है

•

सियाराम शर्मा

केदारनाथ सिंह की कविता 'जो एक स्त्री को जानता है' प्रेम की भावुकता और गलदश्रुता से बचते हुए प्रेम के विस्तार के साथ-साथ मनुष्य के अस्तित्व के साथ उसके जुड़ाव की अपरिहार्यता को प्रकट करती है। स्त्री और पुरुष का प्रेम एक शाश्वत सत्य है। मानवीय व्यक्तित्व का एक अविभाज्य हिस्सा। दोनों का अस्तित्व एक-दूसरे के बिना अधूरा है। इस अधूरेपन और अपूर्णता का बोध ही दोनों को एक-दूसरे की ओर आकर्षित करता है। प्रेम उन्हें पूर्णता का अहसास कराता है। निरर्थकता को सार्थकता प्रदान करता है लेकिन स्त्री-पुरुष के प्रेम की विडंबना यही है कि दोनों का व्यक्तित्व भिन्न है। परिवार, समाज, देश और काल की असंख्य दूरियाँ उन्हें विलग करती हैं। इसलिए प्रेम एक यातना भी है। तड़प का अहसास भी।

प्रेम का अहसास और उसका अनुभव मनुष्य के भीतर एक बार अंकुरित, पल्लवित और पुष्पित होकर कभी मुरझाता या सूखता नहीं है। उसका हरापन, उसकी चमक, उसकी खुशबू हमेशा कायम रहती है। यह विशाल बरगद की जड़ों की तरह हमारे संपूर्ण आंतरिक व्यक्तित्व में बहुत दूर तक फैली और गहराई तक धँसी होती है। विस्मृति की कुल्हाड़ी से काटकर इसे खत्म नहीं किया जा सकता। एक टहनी, एक डाली, एक तने को काटो तो वहीं से सौ कल्ले फूटने लगते हैं। हर गाँठ से एक नई जड़ निकलकर उसकी अमरता और उत्तरजीविता को घोषित करता है। एक बार प्रेम के जन्म लेने के बाद मिलना या बिछुड़ना कोई मायने नहीं रखता। यह प्रेम हमारी हर कोशिकाओं, हड्डियों और आत्मा में इस तरह घुल-मिल जाता है कि भूलने का हर प्रयास बेमानी और निरर्थक लगने लगता है। भूलने के प्रयास में ही न भूल पाने की मजबूरी और विवशता छुपी है। प्रेम को भुला दिए जाने के एक सचेत प्रयास से शुरू होकर यह कविता उसे न भुला पाने की विवशता को रेखांकित करती है।

यह कविता एक ऐसे पुरुष की ओर से लिखी गयी है, जो जिस स्त्री से प्यार करता है, वह उससे इतनी दूर है कि उसका लौटना या इसका उस तक पहुँचना संभव नहीं है। प्रेम में पास या दूर होना बहुत महत्त्व नहीं रखता। हम किसी के पास होकर भी उससे बहुत दूर और किसी से बहुत दूर होकर भी बहुत करीब हो सकते हैं। समय के साथ, वक्त के गुजरने के साथ हर किसी चीज को भुलाया जा सकता है। समय उस पर धूल की एक परत डाल सकता है पर प्रेम सुबह में हरे पत्तों के ऊपर चमकती हुई ओस की बूँदों की तरह उतना ही ताजा और जीवंत होता है जैसा अपने अनुभव के प्रथम क्षणों में था। समय के साथ प्रेम का अहसास और भी गाढ़ा और गहरा होता चला जाता है। जीवन के कठिन, मुश्किल और बुरे वक्त में भी यह हममें ताकत और गर्माहट पैदा करता है। एक आदिम राग की तरह हमेशा हमारे भीतर धड़कता और जीवित रहता है। अनंत समुद्र में पक्षी की तरह हमारा मन बार-बार प्रेम के इस जहाज पर लौटता है। प्रेम के हमारे जातीय पुरखे कवि सूर की तरह केदार जी की इस कविता में भी भूलने की तमाम कोशिशों के बावजूद एक निरंतर प्रवाहित, गतिशील, बदलते विश्व में प्यार का अहसास एक ठोस, मजबूत पत्थर की तरह है, जहाँ सुकून के साथ बैठा जा सकता है। हड्डियों को जमा देने वाले जीवन-विरोधी हालात में भी उससे जीवन की जरूरी ऊष्मा पाई जा सकती है—

हवा को बहने दो
और उस स्त्री को भूल जाओ
जिसे तुम प्यार करते हो
इसमें तुम्हें जंगली पत्तों की खुशबू
और एक जानवर के रोओं की गरमाहट मिलेगी
तुम्हें एक मजबूत पत्थर मिलेगा
जिस पर तुम बैठ सकते हो

इस स्वार्थी, आत्मग्रस्त और आत्मकेंद्रित सभ्यता के विरुद्ध प्रेम हमेशा एक प्रति संसार रचता है। यह हमें अपने-आप से बाहर निकलने का मार्ग दिखाता है। खुद की अपेक्षा दूसरों की जरूरत और महत्त्व का बोध कराता है। प्रेम मनुष्य की संवेदना को तीक्ष्ण और धारदार बनाता है। यह सिर्फ एक व्यक्ति से ही नहीं समस्त संसार से जुड़ना सिखाता है। यह लगाव और जुड़ाव इतना गहरा होता है कि प्रेम में पड़े व्यक्ति के लिए पूरी दुनिया का अर्थ बदल जाता है। पुरानी दुनिया उसके लिए नई बन जाती है। यह प्रेम हमें एक नई आँख, नई दृष्टि, नया सौंदर्य बोध और नया जीवन प्रदान करता है। हम आस-पास के संसार और समस्त प्राकृतिक जगत् के प्रति अत्यंत सदय और संवेदनशील हो उठते हैं। एक पत्ते से भी हम इस कदर जुड़ जाते हैं कि अपनी नसों में बहता हुआ रक्त हम उसके भीतर प्रवाहित होता हुआ महसूस करने लगते हैं। पत्थरों में जलभ नदी के पानी का बहता हुआ अव्यक्त संगीत हमें सुनाई पड़ने लगता है। सूर्य का आलोक जैसे समस्त जगत को आलोकित कर उसे नई चमक से भर देता है, उसी तरह प्रेम में अंतर्निहित सौंदर्य के स्पर्श से हमारा समग्र व्यक्तित्व और दुनिया खूबसूरत हो उठती है -

पत्थर को छुओ
तुम्हें पानी का संगीत सुनाई पड़ेगा

डा. रीता गुप्ता

अनुक्रम

हिंदी

1. सुर और शब्द की समकालीनता में मानवीय स्थिति की तलाश — 11
दुर्गा प्रसाद गुप्त

2. नए सूर्य की नीली आभा — 27
जितेन्द्र श्रीवास्तव

3. सवाल साहित्य की स्वायत्ता का ? — 37
प्रो. यज्ञ प्रसाद तिवारी

4. समकालीन कविता का यथार्थ : वैश्वीकरण का संदर्भ — 47
प्रो. कृष्ण कुमार सिंह

5. साहित्य के लिए आज के सवाल — 56
अनिल चमड़िया

6. अनूपकुमार की कविताएँ : आज के सवालों और सामाजिक सरोकारों.... — 62
डॉ. वीणा दाढे

7. साहित्य के सरोकार और पीड़ा : हिन्दी की साहित्यिक पत्रिकाओं.... — 73
डॉ. सुनीता शनी घोष

8. साहित्य का अनुवाद और आज का प्रश्न — 84
डॉ. अन्नपूर्णा सी.

9. हिन्दी पट्टी के साहित्य का इतिहास–बोध : अध्ययन की समस्याएं .... — 91
सपना चमड़िया

10. आज के रंगमंचीय अवकाश में गूँजता हाशिया — 108
डॉ. सोनू जेसवानी

11. स्त्री विमर्श के संदर्भ में एक कस्बे के नोट्स — 118
डॉ आभा एस० सिंह

12. हाशिये का समाज और साहित्य — 124
डॉ. एनीमेरी जोसेफ

13. समकालीन कविता का मूल्यबोध — 129
डॉ. नेहा कल्याणी

14. सामाजिक सरोकार और आज का व्यंग्य — 136
डॉ. (श्रीमती) रीता गुप्ता

15. आज के सामाजिक सवाल और हिन्दी व्यंग्य साहित्य — 143
डॉ. संतोष विजय येरावार

16. वैश्वीकरण की चुनौतियाँ और साहित्य — 152
डॉ. सविता मिश्रा, डॉ. मंजू झा

17. युगान्तकारी साहित्यिक पीड़ा : वैश्वीकरण के संदर्भ में एक चिंतन — 157
डॉ. डी. एस. ठाकुर

18. आज के सवालों की साहित्यिक मनोदशायें — 163
जगदीश प्रसाद देवांगन

19. साहित्य का सामाजिक सरोकार और रचनाकारों की भूमिका — 171
डॉ. सुनीता राठौर

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

डा. रीता गुप्ता

अनुक्रम

हिंदी

1. सुर और शब्द की समकालीनता में मानवीय स्थिति की तलाश — 11
दुर्गा प्रसाद गुप्त

2. नए सूर्य की नीली आभा — 27
जितेन्द्र श्रीवास्तव

3. सवाल साहित्य की स्वायत्ता का ? — 37
प्रो. यज्ञ प्रसाद तिवारी

4. समकालीन कविता का यथार्थ : वैश्वीकरण का संदर्भ — 47
प्रो. कृष्ण कुमार सिंह

5. साहित्य के लिए आज के सवाल — 56
अनिल चमड़िया

6. अनूपकुमार की कविताएँ : आज के सवालों और सामाजिक सरोकारों.... — 62
डॉ. वीणा दादे

7. साहित्य के सरोकार और पीड़ा : हिन्दी की साहित्यिक पत्रिकाओं.... — 73
डॉ. सुनीता रानी घोष

8. साहित्य का अनुवाद और आज का प्रश्न — 84
डॉ. अन्नपूर्णा सी.

9. हिन्दी पट्टी के साहित्य का इतिहास–बोध : अध्ययन की समस्याएं .... — 91
सपना चमड़िया

10. आज के रंगमंचीय अवकाश में गूँजता हाशिया — 108
डॉ. सोनू जेसवानी

11. स्त्री विमर्श के संदर्भ में एक कस्बे के नोट्स — 118
डॉ आभा एस० सिंह

12. हाशिये का समाज और साहित्य — 124
डॉ. एनीमेरी जोसेफ

13. समकालीन कविता का मूल्यबोध — 129
डॉ. नेहा कल्याणी

14. सामाजिक सरोकार और आज का व्यंग्य — 136
डॉ. (श्रीमती) रीता गुप्ता

15. आज के सामाजिक सवाल और हिन्दी व्यंग्य साहित्य — 143
डॉ. संतोष विजय येरावार

16. वैश्वीकरण की चुनौतियाँ और साहित्य — 152
डॉ. सविता मिश्रा, डॉ. मंजू झा

17. युगान्तकारी साहित्यिक पीड़ा : वैश्वीकरण के संदर्भ में एक चिंतन — 157
डॉ. डी. एस. ठाकुर

18. आज के सवालों की साहित्यिक मनोदशायें — 163
जगदीश प्रसाद देवांगन

19. साहित्य का सामाजिक सरोकार और रचनाकारों की भूमिका — 171
डॉ. सुनीता राठौर

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

श्रेष्ठ लेखक सम्मान :

विभिन्न मानस–प्रेमियों द्वारा स्थापित तुलसी मानस **भारती** के श्रेष्ठ लेखकों को तुलसी जयंती के अवसर पर पुरस्कार प्रदान किये गये। पुरस्कार प्राप्तकर्त्ता साहित्यकार थे –

1. त्रिभुवन यादव स्मृति सम्मान – श्री गार्गीशरण मिश्र 'मराल', जबलपुर
2. सुखरानी देवी स्मृति सम्मान – डॉ. प्रेम भारती, भोपाल
3. श्रीमती रमादेवी स्मृति सम्मान – श्रीमती रीता गुप्ता, दुर्ग

यहां यह उल्लेखनीय है कि इन सारे समारोहों की विस्तृत रिपोर्ट तुलसी मानस भारती के अंकों में सचित्र प्रकाशित की जा चुकी है।

इन सभी कार्यक्रमों का संचालन श्री कमलेश जैमिनी ने कुशलतापूर्वक किया। प्रतिष्ठान की ओर से आभार माना श्री प्रमुदयाल मिश्र ने। उनके प्रति आभार।

तुलसी मानस भारती :

आपकी अपनी मासिक पत्रिका तुलसी मानस भारती का प्रकाशन निरंतर और नियत समय पर हो रहा है। पत्रिका ने अपने जीवन के 45 वर्ष पूर्ण कर 46 वें वर्ष में प्रवेश किया है। 46 वें वर्ष में राम चरित मानस के सुंदरकांड पर केन्द्रित 'प्रयत्न' सोपान सुंदरकांड नामक विशेषांक का प्रकाशन हुआ जिसे विद्वानों ने काफी सराहा। इस विशेषांक के लेखकों के प्रति मैं इस अवसर पर पुनः कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं।

पुस्तकें भेंट :

डॉ. प्रेम भारती ने अपने पुस्तक–संग्रह में से 96 पुस्तकें प्रतिष्ठान के पुस्तकालय को भेंट की। उनके प्रति आभार।

सम्मान :

इस वर्ष कुछ संस्थाओं द्वारा उनके विनम्र योगदान के लिए प्रतिष्ठान के कार्याध्यक्ष श्री रमाकांत दुबे को ब्राह्मण समाज आफ इंडिया के वार्षिक अधिवेशन में "ब्राह्मण शिरोमणि" की उपाधि से विभूषित किया गया। माधव राव सप्रे स्मृति समाचार संग्रहालय एवं शोध संस्थान द्वारा 2 अक्टूबर 18 कां गांधी जयंती के अवसर पर श्री दुबे को "महात्मा गांधी सम्मान" से अलंकृत किया गया। उनका अभिनंदन।

इसी प्रकार इस वर्ष आपके तुलसी मानस भारती के प्रधान संपादक श्री एन.एल. खंडेलवाल को नाथ द्वारा साहित्य समिति द्वारा उनके समसमायिक उत्कृष्ट संपादकियों के लिए 'संपादक रत्न' की उपाधि प्रदान की गई।

यह वर्ष जाते–जाते हमें कुछ आघात भी देता गया – हमारे उत्साही आजीवन सदस्य पूर्व जिला एवं सत्र न्यायधीश रामानुरागी डी.एन. दीक्षित तथा उत्साही श्री कैलाश नारायण वाजपेयी, रामगोपाल उपाध्याय, सुप्रसिद्ध गीतकार श्री गोपालदास नीरज, नवभारत समाचार पत्र–समूह के प्रधान संपादक श्री प्रफुल्ल माहेश्वरी, तुलसी मानस भारती के लेखक श्री गार्गी शरण मिश्र 'मराल', हमारे निकट के सहयोगी श्री रमेश किशोर अग्निहोत्री हमारे बीच नहीं रहे। इन सबको आपकी और तुलसी मानस प्रतिष्ठान की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

अनेक सहधर्मी संस्थाओं से हमें अपनत्व और सहयोग मिलता रहा है। उनका स्मरण करना आवश्यक

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- D...

तुलसी मानस भारती

तुलसी मानस प्रतिष्ठान मध्यप्रदेश की मासिक मुखपत्रिका

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय		
भ्रष्टाचार का चरित्र	एन.एल. खण्डेलवाल	03
लेख		
वैश्विक सामाजिक परिप्रेक्ष्य और रामकथा	डॉ.श्रीमती रीता गुप्ता	05
राम को सर्वप्रथम गाया–बुंदेली	गुण सागर सत्यार्थी	12
तुलसीदास का एक जीवन–संदेश	डॉ. परशुराम शुक्ल विरही	19
कविता		
गोस्वामी तुलसीदास	डॉ. गार्गीशरण मिश्र 'मराल'	22
तुलसीदासजी की आरती	मनोहरलाल गोस्वामी	23
लेख		
तुलसी का समन्वयवाद	डॉ. गार्गीशरण मिश्र 'मराल'	24
राम राय बिनु रावरे मेरे को हित सौंधो	श्रीमती जानकी शुक्ला	28
रामनामी जिनके रोम रोम में रमे हैं राम	रवीन्द्र गिन्नौरे	31
प्रसंगवश		
आत्म मुग्ध युवा पीढ़ी	डॉ. आशा कपूर	34
समीक्षा		
धरती जितनी आयु की 'रामकथा'	प्रभुदयाल मिश्र	35
'मैं कछु करबि ललित नर लीला'	प्रभुदयाल मिश्र	36
लेख		
नये नये आविष्कार करो	आई.डी. खत्री	37

ग्राहक शुल्क : वार्षिक रु. 250.00, पंचवर्षीय रु.1100.00, आजीवन रु. 2500.00 इस अंक का रु. 25.00

विदेश में : किसी आयरलैण्ड, मॉरीशस व अन्यत्र समुद्री डाक से (भारतीय रुपये में) वार्षिक रु. 1250.00, पंचवर्षीय रु. 6000.00 आजीवन रु. 12500.00, हवाई डाक से वार्षिक रु. 1500.00 पंचवर्षीय रु. 6000.00 आजीवन रु. 15000.00

ISSN - 0973-1628

Mob: 94255-53571
श्रीमती उपमा शुक्ला
मकान नंबर 15-19 ए
नेहरू नगर (ईस्ट)
भिलाई (छत्तीसगढ़) - 490020
भिलाई (छत्तीसगढ़)

138

Issue - 138, Vol-XIV(7), September - 2015

www.researchlink.in
www.researchlink.co

"The teacher refines and reconciles the different currents of thought, the Vedic cult of sacrifice, the Upanisad teaching of the transcendent Brahman, the Bhagavata theism and tender piety, the Samkhya dualism and the Yoga meditation. He draws all these living elements of Hindu life and thought into an organic unity. He adopts the method, not of denial but of presentation and shows how these different lines of thought converge towards the same end."

• *Sarvepalli Radhakrishnan*

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

An International Registered and Referred Monthly Journal

RESEARCH Link

Impact Factor 2015 1.8007

Kala, Samaj Vigyan awam Vanijya

:: CIRCULATION ::

Andaman-Nicobar / Bihar / Chattisgarh / Delhi / Goa / Gujarat / Haryana / Himachal / Jammu & Kashmir / Karnataka / Madhya Pradesh / Maharashtra / Punjab / Rajasthan / Sikkim / Uttar Pradesh / Uttranchal / West Bengal

ISSN : 2249-930X

बुन्देलखण्ड संस्कृति एवं साहित्य

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

भारतीय हिन्दी परिषद्

An International, Registered and Referred Monthly Journal : Impact Factor 2.782 (2015)

Contents - 143

■ Research Link - 143 ■ Vol - XIV (12) ■ February - 2016

Andman Nicobar, Assam, Karnataka, Orissa & Telangana Exclusive

- [illegible] Behaviour on Dealing their Money in Different [illegible] : An Empirical Study
  G.[illegible], Dr. [illegible] & Dr. Sakthivel Murugan (473) 6
- [illegible] Politics of (Andaman and Nicobar Islands)
  Dr. K. V.R. [illegible] (394) 10
- Impact of "Monthly Sharing Meeting/Teacher Development Programme" on Regular Classroom Transaction in The School of "[illegible] District"
  [illegible] Sahoo (523) 13
- A Study on Effect of Parental Involvement on Academic Achievement among College Students
  [illegible] M.H. (514) 16
- Identification of The Poor : A Case Study of Cachar District of Assam
  [illegible] (498) 18

Punjab Exclusive

- [illegible]
  [illegible] (507) 20
- Overview of Cancer in Punjab
  [illegible] (512) 23
- Global Warming and Punjab Economy : A Study
  Dr. [illegible] Kumar (506) 25
- Women's Economic Empowerment In India : An Extreme [illegible]
  Dr. [illegible] Mishra (429) 27
- Role of Quality Assurance (QA) & Quality Control (QC) in Testing
  Ms. [illegible] (474) 30
- [illegible]
  [illegible] (484) 33
- [illegible]
  [illegible] (485) 35
- [illegible] (धार्मिक एवं सामाजिक संदर्भ)
  [illegible] (500) 37
- [illegible] का मूल्यांकन
  [illegible] (513) 40

Gujarat Exclusive

- [illegible] Adult Girls in Jamnagar City
  [illegible] R. Rao & Dr. Veena S. Samani (476) 42

Science

- A Study on [illegible] Isolated from Intensive Care Unit [illegible]
  [illegible] (448) ...... [illegible]

English Literature

- Teaching of English in the Degree Colleges of Mumbai Uni[illegible] Problems and Suggestions
  Dr. Anjan Kumar (465) ......
- The Divine Nature of Women : A Study
  Dr. Usha Sahani (452) ......
- Women, Then and Now; In The Novels of Shashi Desh[pande]
  Ujjwal Rathore (469) ......

Sanskrit Literature

- उपासनायाः प्रकाराः
  डॉ.अर्चना जैन (486) ......

Marathi Literature

- आजची मराठी कविता आणि वास्तव : एक आकलन
  डॉ.जयश्री शास्त्री (409) ......

Hindi Literature

- आचार्य विद्यासागर के 'मूकमाटी' में युगीन चेतना व सम-सामयि[क]
  डॉ.चन्द्रकुमार जैन (410) ......
- मध्यकालीन हिन्दी साहित्य में वैश्विक परिप्रेक्ष्य
  स्वाति परिहार (433) ......
- हाशियाकृत नारियाँ और मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास
  श्रीमती छनेश्वरी साहू एवं डॉ.(श्रीमती) वंदना कुमार (46[illegible])
- समकालीन कवयित्री 'अनामिका' के काव्य में स्त्री-विमर्श
  डॉ.(श्रीमती) रीता गुप्ता एवं मार्तंड सिंह साहू (471) ......
- भक्तानवाद और जीवन यद की दो कविताएँ
  धर्मेन्द्र कुमार वर्मा (477) ......
- प्रयोजनमूलक हिन्दी में विज्ञापन : एक विवेचन
  सुनीता साहू (479) ......

Sociology

- अकोला जिल्ह्यातील बार्शिटाकळी तालुक्यातील अंध [illegible] अभ्यास
  प्रा.डॉ.रवि सोपान डाखोरे (492) ......
- नगरीय परिवेश में मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा की स्थिति
  डॉ.जया ठाकुर एवं नसरीन मुमताज (460) ......
- छत्तीसगढ़ शासन द्वारा जनजातीय शिक्षा हेतु संचालित [illegible] विद्यालय योजना
  डॉ.अनिता राजपूरिया एवं श्रीमती प्रमिला नागवंशी (4[illegible])

Political Science

- ओमर विलिंग में ग्राम पंचायतों की भूमिका (जनपद [illegible] संदर्भ में)
  डॉ.रामवीर सिंह एवं डॉ.सुधीर कुमार (313) ......
- संसद संरचना, शक्तियाँ तथा अधिकार : एक अध्ययन
  डॉ.शैलेन्द्र कुमार मेवाड़े (381) ......
- भारत में मतदान व्यवहार एवं बिहार विधानसभा चुनाव [illegible]
  शशि रावत (455) ......

History

- छत्तीसगढ़ में मराठा शासकों की प्रशासन व्यवस्था : एक [illegible]
  अनिल कुमार बाजपेयी एवं के.के.अग्रवाल (431) ......

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

बुन्देल-विभूति

डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त बरसैंया

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

सहस्र चन्द्र दर्शन पर समर्पित अभिनन्दन-ग्रंथ

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) द्वारा शोधपत्र प्रकाशन हेतु अधिसूचित राष्ट्रीय शोध पत्रिका (यू.जी.सी. क्रमांक 144, जर्नल नं. 48199)

पृष्ठ-12 पर लेख

नव निकष

हिन्दी साहित्य के नये उत्कर्ष, नव संचेतना और नये भावबोध की प्रतिनिधि मासिकी

जून 2017, ज्येष्ठ-आषाढ़ वि. संवत 2074

वर्ष-10, अंक-12

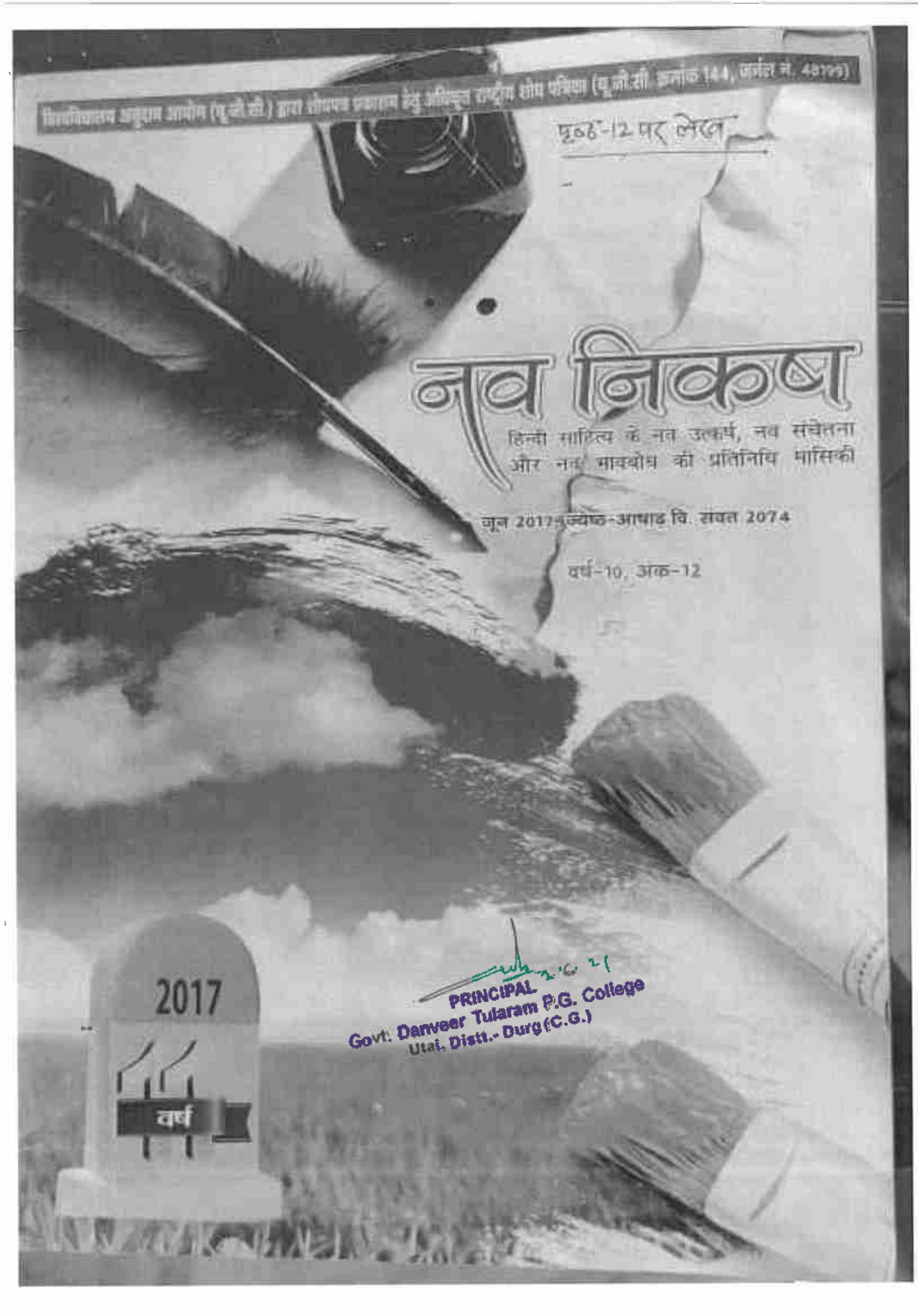

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

ISSN - 0973-1628
Visit us on : www.researchlinkjournal.in

102

Vol-XI-(7) September 2012

PRINCIPAL
Govt. Damveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

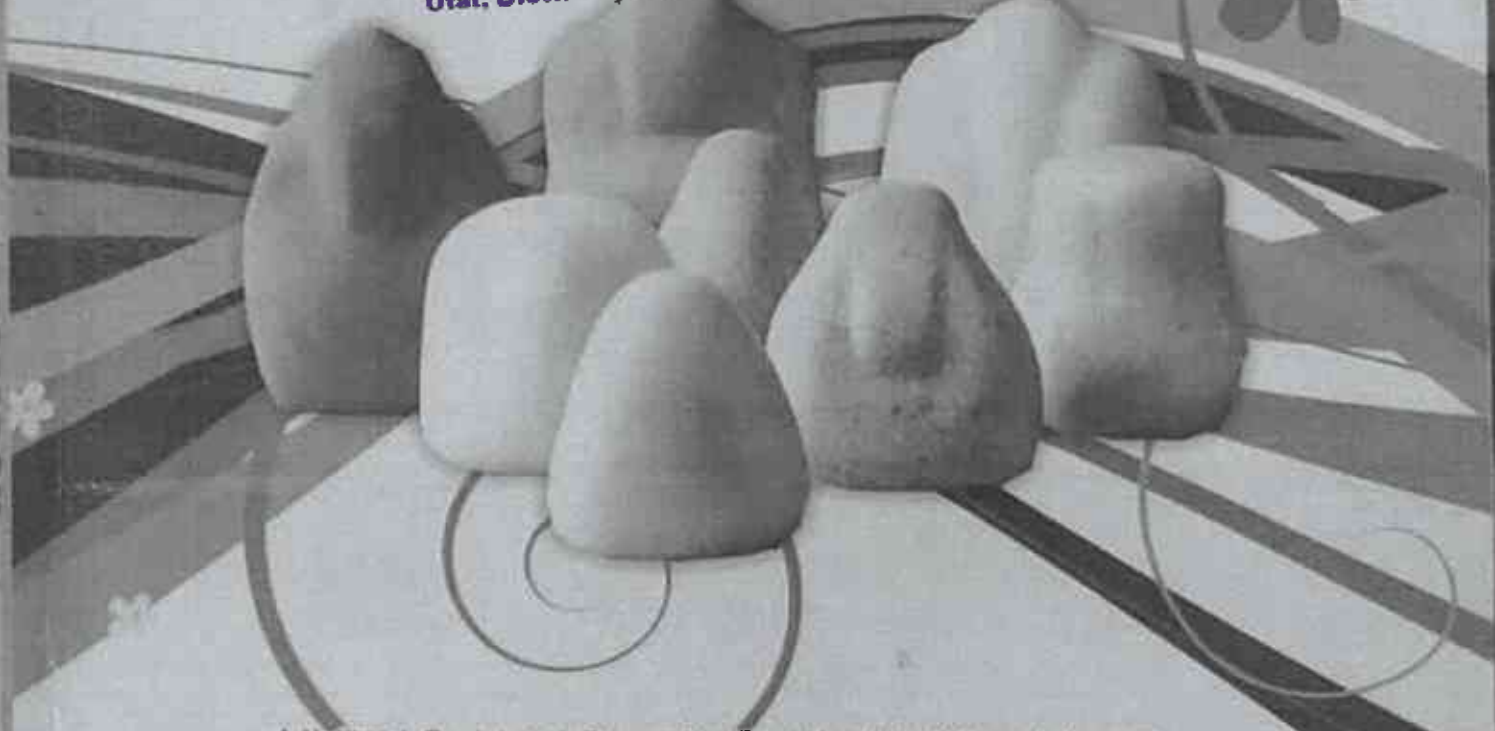

A National, Registered, Recognized and Monthly Refereed Journal

RESEARCH Link

Kala, Samaj Vigyan awam Vanijya

CIRCULATION

Andaman Nicobar / Bihar / Chattisgarh/ Delhi/ Goa / Gujarat / Haryana / Himachal / Jammu & Kashmir / Karnataka / Madhya Pradesh / Maharashtra / Punjab / Rajasthan / Sikkim / Uttar Pradesh / Uttranchal / West Bengal

म.प्र./भोपाल/367/2018-20
...6420/...
प्रकाशन दिनांक ... 2019

मानस प्रतिष्ठान मध्यप्रदेश की मुख...

तुलसी मानस भारती

जून 2019
ज्येष्ठ-आषाढ़ 1941
विक्रम संवत् 2076

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

वर्ष 30 अंक 09
(मानस समाचार/मानस भारती सहित)
वर्ष 46 अंक 06

18. उत्तररामचरितम् : सीतात्व का निदर्शन — 67
आशुतोष मिश्र

19. रामचरित मानस – महाकाव्य या पौराणिक महाकाव्य — 73
डॉ. श्रीमति रेवा चौधरी, डॉ. एरा.पी. पचौरी

20. सीतायाः चरितम् महत् — 77
डॉ. सरोज गुप्ता

21. महाकवि तुलसी की विश्व–दृष्टि – रामकथा का संदर्भ — 81
डॉ. रंजना मिश्रा

22. सूर सागर की सीता का आदर्शमय स्वरूप — 86
डॉ. छाया चौकसे

23. विश्व साहित्य के परिप्रेक्ष्य मे रामकथा की प्रासंगिकता शासन व्यवस्था के संदर्भ में — 93
डॉ. श्रीमति राजेश जैन

24. रामराज्य की संकल्पना : भारतीय राजनीति के परिप्रेक्ष्य में — 98
डॉ. अर्चना गुप्ता

25. राम काव्य परंपरा और साकेत — 101
डॉ. कुमकुम गुप्ता

26. राम कथा के विकास मे जीव जन्तुओं की भूमिका — 104
डॉ. गोपा जैन

27. पं. ज्वालाप्रसाद द्वारा रचित कृति 'निर्वासिता' एक मार्मिक रचना है — 107
डॉ. सुनीता आदर्श ज्योतिषी, डॉ. आशीष ज्योतिषी

28. राजनैतिक चिन्तन में रामराज्य की अवधारणा — 120
डॉ. अनुपमा यादव

29. रामचरितमानस में पुरुषोत्तम श्री राम का चरित्र — 124
डॉ. सरिता जैन

30. भारतीय समाज और राम का आदर्श — 128
डॉ. यशेश्वरी ध्रुव

31. शासन के समाधान के कुशल राजनीतिक विचारक तुलसीदास — 132
डॉ. वीणा शर्मा, डॉ. प्रतिभा जैन

32. वैश्विक सामाजिक परिप्रेक्ष्य और राम कथा — 138
डॉ. श्रीमति रीता गुप्ता

33. कौशल्या के राम, सचित्र जैन रामायण का वैशिष्ट्य — 142
डॉ. रश्मि जैन

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

अनुक्रम

[illegible] के चरित्र पर [illegible] प्रभाव	डॉ. रीता गुप्ता	57
पुस्तक चर्चा		
[illegible] के निशाँ	वीरेन्द्र जैन	60
समीक्षा		
'पीठ पर आँख' जो देख लेती है सब	क्रांति कनाटे	62
[illegible] खामोशियों के बीच ज़िंदा आवाज़ों की कहानियां	विजय गुप्त	64
फिल्म		
हीरे की अंगूठी	डॉ. विजय शर्मा	67
[illegible]		
[illegible] लिखिए [illegible]...	महेन्द्र राजा जैन	68
[illegible]		
प्रभाष जोशी की याद में	सर्वमित्रा सुरजन	72
पत्र		73

साहित्यिक-वैचारिक मासिक

अक्षर पर्व

[illegible]

विशेषांक

[illegible]

भूल सुधार

जून में प्रकाशित रचना वार्षिकी के पृष्ठ 44 पर लेखक शशांक दुबे की फोटो के स्थान पर तकनीकी त्रुटिवश संगीतकार चित्रगुप्त की तस्वीर छप गयी है। इसका हमें खेद है।

संपादक

रचनाकारों से निवेदन

1. [illegible] से विनम्र अनुरोध है कि जहां तक संभव हो अपनी रचना ई-मेल से भेजने का कष्ट करें। [illegible] के लिए अधिक सुविधाजनक है।
2. [illegible]
3. [illegible] और ई-मेल पता लिखने का कष्ट करें।
4. [illegible] ई-मेल से भिजवा दें ताकि हम उसे सुरक्षित कर लें।
5. [illegible] aksharparv@gmail.com इस पते पर ईमेल करें।
6. [illegible]

संपादक

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College

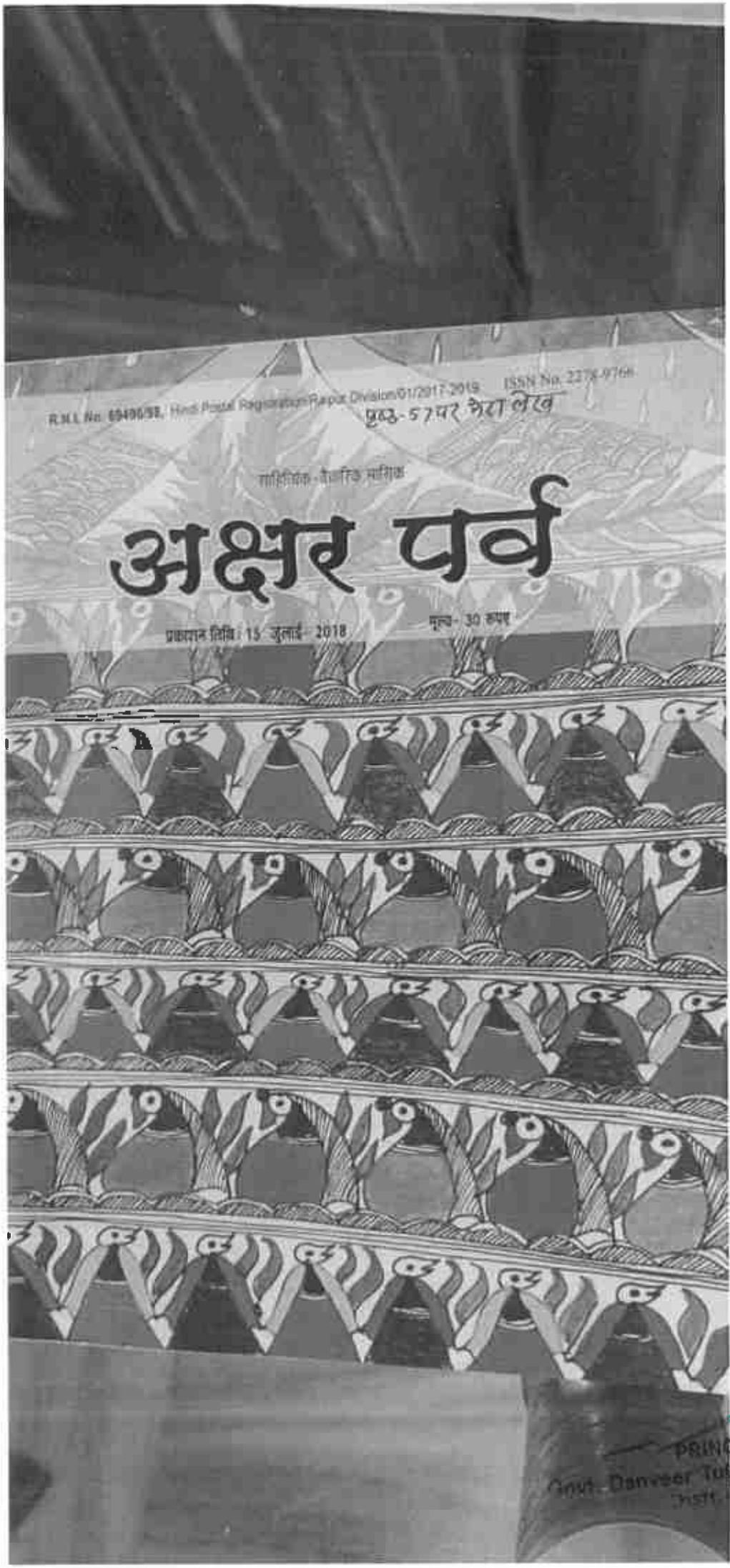

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Distt. Durg (C.G.)

डाक पंजीयन क्र. : म.प्र./भोपाल/367/2015-17

प्रकाशन दिनांक : 05 जुलाई, 2017

मूल्य : 25/-

पृष्ठ-8 पर मेरा लेख

तुलसी मानस प्रतिष्ठान मध्यप्रदेश की मुखपत्रिका

तुलसी मानस भारती

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

तुलसी जयंती विशेष

जुलाई 2017
आषाढ़-श्रावण 1939
विक्रम संवत् 2074

वर्ष 27 अंक 10
(मानस-समाचार/मानस भारती सहित)
वर्ष ५५ अंक 07

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) द्वारा शोधपत्र प्रकाशन हेतु अधिसूचित राष्ट्रीय शोध पत्रिका

आई.एस.एस.एन-०९७४-०८२७

नव निकष

हिन्दी साहित्य के नव उत्कर्ष, नव संवेदना और नव भावबोध की प्रतिनिधि मासिकी

वर्ष-१२, अंक-२, अगस्त २०१८ श्रावण-भाद्रपद वि.संवत् २०७५

१ आत्मबोध - डॉ. लक्ष्मीकान्त पाण्डेय

कसौटी पर किरदार

४ स्वामी कार्तिकेय ने यश में रुकवाई पदुमाति - अशोक पाण्डेय

साहित्य चिंतन

६ आधुनिक ओड़िया-हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय चेतना - डॉ. विजय कुमार महांति

१५ कविभाषण : कोटि, उपासना और कला - डॉ. राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी

२२ अनुभव की आंच में तपी कविताएँ - डॉ. रीता गुप्ता

२५ हिन्दी के विविध रूप : जनसंचार माध्यम के संदर्भ में - डॉ. इस्लाम आर. जैदवा

२८ हिन्दी नाटक तथा रंगमंच : समकालीन पक्ष - डॉ. मारग्रेट वी.जी.

३१ सामाजिक सरोकार के कवि-मुक्तिबोध - डॉ. नाज़िम शेख

प्रसंगवश

३३ नाथ सम्प्रदाय की परम्परा और योगी आदित्यनाथ - डॉ. पशुपतिनाथ उपाध्याय

कहानी

३७ समय की उघड़ती परतें - नीरजा हेमेन्द्र

४२ सयानी बेटी - डॉ. मंजुला चौहान

४४ इन्कार भगवान बनने से - डॉ. राकेश कुमार सिंह

४७ भगवानधार - डॉ. कमलेश कुमार मिश्र

शोध लेख

४८ उत्तर आधुनिक कालीन उपन्यासकारों में डॉ. दामोदर खड़से का स्थान : विमर्श और सामाजिक दृष्टिकोण - श्वेता दीक्षित

५३ स्त्री स्वतंत्रता के विविध आयाम - अनीता

५५ स्त्रीवादी रंगमंच : विश्व परिदृश्य - अपर्णा वेणु

लघु कथा

२४ बैरंग - सीताराम गुप्ता

३२ पेंचें - सत्यवीर कश्मीरी

४२ दूरियाँ - सत्य शुचि

५५ उपदेश - डॉ. लक्ष्मीकान्त पाण्डेय

कविताएं

२१ कुछ पल प्रभु का याद करें - डॉ. सुनील कुमार गुप्ता

४६ दीपक - प्रेमलता ठाकुर

६० मेहनत - कृष्णकुमार सैनी 'राज'

५८ पुस्तक समीक्षा

६४ परस्मैपद

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के हैं। सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

- The Dual Presence of Nature In The Novel of Arundhati Roy's...
  Dr. Mamta Ekka (186) 55
- Human Struggle And Conflict In Salman Rushdie's *Fury*
  Dr. K. K. Singh (192(1)) 57
- Salman Rushdie's Epic World In Grimus
  Dr. Raju Kumar (192(3)) 60
- Colonial Consciousness and Identity Crisis : A Note on Arun...
  Dr. Anilesh Kumar (127) 63
- History of Sonnet in English Literature
  Roy (200) 65

Hindi Literature

- मन्नू भण्डारी के कथा-साहित्य में बदलते सम्बंधों का यथार्थ
  डॉ.सुनीता डोगरा (132) 67
- 'कामायनी' और 'पैराडाइज लॉस्ट' का तुलनात्मक अध्ययन
  डॉ.गीता सहारे (103(3)) 70
- [illegible] के कथा-साहित्य में स्त्री स्वाधीनता की पहचान और संघर्ष
  रीता गुप्ता एवं श्रीमती उपमा शुक्ला (73) 72
- पुराणों की मातृ शक्ति : एक अध्ययन
  अनुपमा ठाकुर (90) 75

Sanskrit Literature

- [illegible] के अभिलेखों में मानव धर्म
  डॉ.रामहेत गौतम (64) 77

Education

- हरियाणा राज्य के ग्रामीण क्षेत्र में बालिकाओं की शिक्षा का एक...
  रिता रानी एवं डॉ.बीना [illegible] (187(1)) 79
- हरियाणा में बालिका शिक्षा : प्रमुख अर्थ समाजशास्त्रियों के विचार
  पुनीता एवं डॉ.बीना [illegible] (187(2)) 82

Music

- महिला शिक्षा में कला व संगीत की भूमिका
  डॉ.लक्ष्मी [illegible] (66) 84

Philosophy

- नैतिकता एवं कारपोरेट कार्य : एक विवेचन
  डॉ.उपमा सिन्हा (103(1)) 86

Fine Arts

- [illegible] : एक विवेचन
  डॉ.ज्योति [illegible] (78) 88

Drawing

- आधुनिक चित्रकला, एक जटिल कला : एक अध्ययन
  डॉ.अल्पना उपाध्याय (148(2)) 90

Political Science

- Need Of Developing The Greater India Concept : An Outlook
  Dr. C. Rama Mohan Reddy (194) 92
- Dysfunctionality of indian democracy and its conventions
  Dr. P.B. Rathod & Dr. Krishna Namdev (184) 96
- पंचायती राज एवं महिलाओं में राजनैतिक जागरूकता
  डॉ.राजबाला गुप्ता, डॉ.(श्रीमती) प्रेमलता मिश्रा एवं डॉ.(श्रीमती) [illegible] (60) 98
- [illegible]
  प्रा.मोरे पी.जी. (96) 101

History

- अवध की समाज और जनचेतना : एक अध्ययन
  पुष्पा गहोई (62) 103

Law

- Public Health, Safety and Welfare through Public Interest...
  Dr. Sanyogita (180) 106
- Space Law : An Area of the Law to Facilitate Encompasses in...
  Dr. Sunita Arya & Kusum Joshi (128-A(2)) 109
- Evolution of Autonomy in Indian Federal Context
  Ms. Dipti Choudhary (222) 112
- निजता में वैयक्तिक प्रतिष्ठा का अधिकार एवं भारत में विधि
  डॉ.ममता मिश्रा (140) 114

Geography

- Measurement Of Agricultural Development In Northern Part...
  Dr. B. S. Patil (173) 117
- पैठण तालुक्यातील जायकवाडी प्रकल्पाचा डावा कालवा क्षेत्रातील...
  वाघने सुनिल नामदेवराव एवं पाटीलकर संदीप रामकीसन (72) 120

Commerce

- India's Economic and Diplomacy Challenges : Constraints and Obstacles
  Dr. Sudershan Nain (223) 123
- Indian Capital Market able to get Faith or still the doom...
  Ranu Jain & Prof. Suresh Kataria (155) 126
- The Insurance Regulatory and Development Authority...
  Dr. Deepak Dubey & Smt. Neelima Shukla (150) 128
- आधुनिक जनमानस एवं ब्रांडेड : एक अध्ययन
  श्रीमती गौरी खोटे एवं डॉ.मधुलिका अग्रवाल (167) 131
- आर्थिक नीति एवं नियोजित आर्थिक विकास का मूल्यांकन
  डॉ.विशाल पुरोहित (37) 134

Economics

- रोजगार हमी योजना, नागपुर जिल्हा (महाराष्ट्र)
  प्रा.सतिश आर.जाधव (67) 136

Library Science

- Internet and its use among the faculty of Science in School of...
  Dr. Raj Boria & Tulsi Jhariya (156(1)) 139

Physical Education

- A Study Of Administrative Aspects Of Physical Education...
  Dr. Abhay N. Buchha (144) 142

Home Science

- Enterprises Preferences Pattern of Rural Women
  Amisha Kumari, Sangeeta Gupta, Mithilesh Verma & Shivani Patel (151(1)) 145
- A Study of Awareness Among People About Family Planning
  Reeti Kushwaha & Dr. Deepti Bhadoriya (70) 147
- Role and Performance of Rural Women in Agro-based and Non...
  Amisha Kumari, Sangeeta Gupta, Mithilesh Verma & Shivani Patel (151(2)) 150
- Street Children of Indore (M.P.) : A Field Study
  Dr. Anita Rai Batham (H) 152
- An Ergonomics Assessment of Sewing Machine Operators
  Sneh Lata Singh & Dr. Deepali Chauhan (139) 155

विशेष सूचना 15
नये सदस्यों की सूची 157

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) द्वारा शोधपत्र प्रकाशन हेतु संदर्भित राष्ट्रीय शोध पत्रिका

नव निकष

हिन्दी साहित्य के नव उत्कर्ष, नव संवेदना
और नव भावबोध की प्रतिनिधि मासिकी

₹ 20

अगस्त 2018, श्रावण-भाद्रपद वि. संवत् 2075

स्वाधीनता दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

समसामयिक साहित्य

चिंतन और चुनौतियाँ

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

डॉ. वीणा साठे

बुन्देल-विभूति

डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त बरसैंया

परामर्श

पं. कैलाश चंद्र पंत

डॉ. श्याम सुन्दर दुबे

संपादक

डॉ. रीता गुप्ता

डॉ. सरोज गुप्ता

डॉ. बहादुर सिंह परमार

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

अनुज्ञा

24. दो भिन्न काव्य मान्यताओं के प्रतीक पुरुष : 181
बुंदेल के दो महाकवि : गोस्वामी तुलसीदास एवं आचार्य केशवदास
प्रो. योगेन्द्र प्रताप सिंह

25. बुन्देलखंड के जनवादी कवि केदारनाथ अग्रवाल 188
प्रो. रामकिशोर शर्मा

26. हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय काव्य धारा 197
प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल

27. आल्ह-गाथा के रचयिता कवि जगनिक और परमाल रासो 201
डॉ. गंगाप्रसाद बरसैंया

28. वृन्दावन लाल वर्मा के उपन्यासों में राष्ट्रीय चेतना 219
डॉ. कृष्णकान्त दीक्षित

29. बुन्देली का प्राचीन साहित्य और साहित्यकार 224
डॉ. रीता गुप्ता

30. भारतीय राष्ट्रीय चेतना में बुन्देलखण्ड के कवियों का योगदान 235
डॉ. मनु जी श्रीवास्तव

31. आधुनिक कविता और बुन्देलखण्ड के कवि 240
डॉ. सरोजलता गुप्ता
डॉ. राजेश कुमार निरंजन

32. बुन्देलखण्डी लोकसाहित्य में पारिवारिक जीवन 244
डॉ. यशवंत सिंह

33. बुन्देलखण्ड के राष्ट्रीय कवि : मैथिलीशरण गुप्त 250
डॉ. राजकुमार उपाध्याय 'मणि'

34. बुन्देलखण्डी लोकगीतों में 'सीता' का चरित्र-चित्रण 257
डॉ. परशुराम पाल

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

ISBN - 978-93-86810-04-5

।। विश्वभाषा साहित्य और रामकथा ।।

अन्तरराष्ट्रीय शोध-संगोष्ठी का कार्यवृत्त

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

संपादक
डॉ. सरोज गुप्ता

Martag Singh Sahoo
C/o Dr. Reeta Gupta
4/6 Nehru Nagar (West)
Bhilai (Chhattisgarh)
Bhilai (Chhattisgarh)

W.

लॉक होने पर बुक/डाक घर में डाल दें।

ISSN - 0973-1628

143

Issue - 143, Vol-XIV (12), February - 2016

www.researchlink.co

महक-महक जाता हूँ,
न इस तरह गुनगुनाया करो।
महक-महक जाता हूँ,
न जूड़े में गुलाब लगाया करो।।
माना रूप के चोर हैं सभी,
न सरेआम मुझे चुराया करो।।।

PRINCIPAL
Govt. Danveer Tularam P.G. College
Utai, Distt.- Durg (C.G.)

An International Registered and Referred Monthly Journal

RESEARCH Link

Impact Factor 2015 2.782

Kala, Samaj Vigyan awam Vanijya

:: CIRCULATION ::

Andaman-Nicobar / Bihar / Chattisgarh / Delhi / Goa / Gujarat / Haryana / Himachal / Jammu & Kashmir / Karnataka / Madhya Pradesh / Maharashtra / Punjab / Rajasthan / Sikkim / Uttar Pradesh / Uttranchal / West Bengal

आई.एस.एस.एन-[illegible]

नव निकष

मूल्य २२/- रुपये

हिन्दी साहित्य के नव उन्मेषों, नव सरोकारों और नव भावबोध की प्रतिनिधि मासिकी

वर्ष-१०, अंक-९२, जून, २०१७ ज्येष्ठ-आषाढ़ वि.संवत् २०७४

३ आत्मनेपद — डॉ. लक्ष्मीकांत पाण्डेय

कसौटी पर किरदार

४ पत्रकारिता ही या आद्य पत्रकार नारद की — अशोक पाण्डेय

साहित्य चिंतन

६ भाषा की तथाकथित रचना चातुर्य — उपेन्द्र नाथ राय

९ डॉ. महेन्द्र भटनागर की साहित्य साधना — राम विलास गुप्त

१२ वैदिक सामाजिक परिवेश और रामकथा — डॉ. गीता गुप्ता

१७ किशोरी अमोणकर उर्फ गीत गाया पत्थरों ने — राज कुमार कुम्भज

१९ स्वामी हितदास विरचित राधावल्लभीय उपासना तत्व — बृजेश कुमार सिंघल

कहानी

२३ स्वार्थ — हरीलाल 'मिलन'

२६ भूख — रामबाबू 'नीरव'

२८ पत्थर — लवलेश दत्त

३१ निम्मी — सतीश कुमार

३३ शामेदा दोस्त — देवेन्द्र कुमार मिश्र

शोध लेख

३९ प्रतीक : मात्र प्रतिनिधित्व ही नहीं, बहुत कुछ — डॉ. मीना कुमारी

४४ साठोत्तर हिंदी कहानियां और समसामयिक परिस्थितियां — रेणु मुरलीधरन

४६ अस्सी के बाद के उपन्यासों में नौकरीपेशा नारी का दाम्पत्य जीवन — विनीता सिंह

५४ 'दस द्वारे का पींजरा' में निरूपित स्त्री विमर्श — डॉ. मंजूर सैय्यद

६० 'ग्रामसेविका' उपन्यास में सामाजिक चेतना — पुनीत कुमार

६३ रघुवीर सहाय की कविताओं में राजनीतिक चेतना — पूनम कुमारी

६६ डीमार्ट में अलगाव और भीतरी संघर्ष — बिनी एम.

कविता

८ निर्भय — प्रो.शरद नारायण खरे

११ दो कविताएं — डॉ. सतीश चन्द्र शर्मा 'सुधांशु'

१६ गीत — सुरेन्द्र गुप्त 'सीकर'

४२ तुम्हें मनाऊं/तुष्टि पलकों में — ओम प्रकाश 'अडिग'

६९ गीत — रमेश मिश्र 'आनन्द'

६७ आखिर कब तक — डॉ. मंजु श्रीवास्तव

लघु कथा

२२ पहचान — रामजी प्रसाद 'भैरव'

६७ शिक्षा बोध — शंकर लाल माहेश्वरी

६८ तीज त्यौहार — शिखा शुक्ला

७१ पत्तेपुद्द

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के हैं। सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

Book-writing

Proceeding of State Level Conference on Herbal Medicine, 2015, Durg College. ISBN : 978-81-[illegible]

BIODIVERSITY OF ANTI-DIABETIC PLANTS COMMONLY USED BY THE ANTI-HYPERGLYCEMIC PATIENTS

Awadhesh Kumar Shrivastava

Govt. Danveer Tularam College, Utai, Durg Chhattisgarh, India 491 107

aksbotany@gmail.com

ABSTRACT

A number of plants have been described in Ayurveda and other traditional medicine for the management of diabetes. However, information about them is not easily available. Active constituents of any medicinal plant define the efficacy and safety of treatment to control hyperglycemia. We describe the data to maintain the record of medicinal plants having anti-hyperglycemic or anti-diabetic activity. A survey was conducted and totals 238 plants belonging to 90 families of different types of plants including bacteria, fungi, pteridophytes, gymnosperms and angiosperms families. Diabetes mellitus is one of the common metabolic disorders acquiring around 2.8% of the world's population and is anticipated to cross 5.4% by the year 2025. Since long back herbal medicines have been the highly esteemed source of medicine therefore, they have become a growing part of modern, high-tech medicine. In view of the above aspects the present profiles of plants (238 species) with hypoglycemic properties, available through literature source from various database with proper categorization according to the parts used, mode of reduction in blood glucose (insulinomimetic or insulin secretagogues activity) and active phytoconstituents having insulin mimetics activity. From the data it was suggested that, plant showing hypoglycemic potential mainly belongs to the family Leguminoseae, Lamiaceae, Liliaceae, Cucurbitaceae, Asteraceae, Moraceae, Rosaceae and Araliaceae. The most active plants are *Allium sativum, Gymnema sylvestre, Citrullus colocynthis, Trigonella foenum greacum, Momordica charantia* and *Ficus bengalensis*. Some new bioactive drugs and isolated compounds from plants such as roseoside, epigallocatechin gallate, beta-pyrazol-1-ylalanine, cinchonain Ib, leucocyandin 3-O-beta-d-galactosyl cellobioside, leucopelargonidin-3- O-alpha-L rhamnoside, glycyrrhetinic acid, dehydrotrametenolic acid, strictinin, isostrictinin, pedunculagin, epicatechin and christinin-A showing significant insulinomimetic and antidiabetic activity with more efficacy than conventional hypoglycaemic agents. Thus, from this data majorly, the antidiabetic activity of medicinal plants is attributed to the presence of polyphenols, flavonoids, terpenoids, coumarins and other constituents which show reduction in blood glucose levels

INTRODUCTION

Diabetes mellitus, one of the most common endocrine metabolic disorders has caused significant morbidity and mortality due to microvascular (retinopathy, neuropathy, and nephropathy) and macrovascular (heart attack, stroke and peripheral vascular disease) complications [1]. Human bodies possess enzymatic and non-enzymatic antioxidative mechanisms which minimize the generation of reactive oxygen species, responsible for many degenerative diseases including diabetes [2]. The disease is rapidly increasing worldwide and affecting all parts of the world. Due to deficiency of the insulin people suffering from diabetes have high blood glucose level [3]. Type 2 diabetes or non-insulin-dependent diabetes mellitus, is the most common form of the disease, accounting for 90%-95% of cases in which the body does not produce enough insulin or properly use it [4]. According to World Health Organization the diabetic population is likely to increase up to 300 million or more by the year 2025[5]. Currently available therapies for diabetes include insulin and various oral antidiabetic agents such as sulfonylureas, biguanides and glinides. Many of them have a number of serious adverse effects; therefore, the search for more effective and safer hypoglycemic agents is one of the important areas of investigation [6]. Aldose reductases, a key enzyme in the polyol pathway catalyze the reduction of glucose to sorbitol. Accumulation

front page only